वर्ग - ४

शव्वाल के आमाल

पहली रात

शव्वाल की पहली रात इन्तेहाई बाबरकत रातों में है। और शब्बेदारी के लिए कई हदीसें वारिद हुई हैं। और रिवायत में है के यह रात शबे क़द्र से कम नहीं है। इस रात के चंद आमाल है।

एक: गुस्ल। जिसे सूर्यअस्त के समय करना चाहिए।

दो: नमाज़, दुआ इस्तेग़फ़ार के साथ शब्बेदारी करे। रात मस्जिद में गुज़ारे।

तीन: नमाज़े मग़रिब और इशा, नमाज़े सुबह और नमाज़े ईद के बाद यह तकबीरात पढ़े:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَ لِلّٰهِ

ख़ुदा बड़ा है। ख़ुदा बड़ा है। अल्लाह के अलावा कोई ख़ुदा नही है और अल्लाह बड़ा है और अल्लाह बड़ा है और हम्द

الْحَمْدُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا هَدَانَا وَ لَهُ الشُّكْرُ عَلٰى مَا اَوْلَانَا

ख़ुदा के लिए है ख़ुदा की हम्द है के उसने हमारी हिदायत की और उस का शुक्र है के उसने हमको अता किया।

चार: नमाज़े मग़रिब और नाफ़ेला मग़रिब के बाद हाथों को आसमान की तरफ़ बुलंद करे और यह दुआ पढ़े:

يَا ذَا الْمَنِّ وَ الطَّوْلِ يَا ذَا الْجُوْدِ يَا مُصْطَفِیَ مُحَمَّدٍ وَ نَاصِرَهٗ صَلِّ عَلٰى

ऐ मन्नत व फ़ज़्ल वाले ऐ जूदो बख़शिश वाले, ऐ मोहम्मद को मुंतिख़ब करने वाले और उनके

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اغْفِرْلِیْ کُلَّ ذَنْبٍ اَحْصَیْتَهٗ وَ هُوَ عِنْدَكَ فِیْ

नासिर दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद और आले मोहम्मद पर और मेरे हर उस गुनाह को बख़्श दे

كِتَابٍ مُّبِيْنٍ۔

जिस का तूने एहसा किय हे और तेरे पास किताबे मोबीन मे है

फ़िर सजदे की हालत में सौ बार कहे: اَتُوْبُ اِلَى اللّٰه फ़िर जो हाजत चाहे तलब करे इन्शाअल्लाह पूरी होगी। उसी रिवायत में हैं के नमाज़े मग़रिब के बाद सजदे में जाए और यह कहे:

يَا ذَا الْحَوْلِ يَا ذَا الطَّوْلِ يَا مُصْطَفِيًا مُحَمَّدًا وَنَاصِرَهٗ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

ऐ क़ूवत वाले, ऐ बख़शिश वाले, ऐ मोहम्मद के मुंताख़िब करने वाले और मददगार दुरूद नाज़ल कर

وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اغْفِرْلِیْ کُلَّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ وَ نَسِيْتُهٗ اَنَا وَ هُوَ عِنْدَكَ فِیْ

मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे कुल गुनाहां को जो मैने किए है और जिनको भूल गया हूँ और

كِتَابٍ مُبِيْنٍ

तेरे पास किताबे मुबीन मे मौजूद हैं माफ़ कर दे।

उसके बाद सौ बार कहे: اَتُوْبُ اِلَى اللّٰه पाँच: ज़ियारते इमामे हुसैन (अ.स.) पढ़े जिसकी तफ़सील नक़्ल हुई है। और उसका ज़िक्र इन्शाअल्लाह बाबे ज़ियारत में किया आएगा।

छे: दस बार यह दुआ पढ़े जिसका ज़िक्र शबे जुमा के आमाल में हो चुका है। يَا دَائِمَ الْفَضْلِ

सात: नमाज़ पढ़े जिसका ज़िक्र शबे आख़िरे रमज़ान में हो चुका है।

आठ: दो रकत नमाज़ बजा लाए। पहली रकत में सूरह हम्द के बाद हज़ार

बार सूरह तौहीद और दूसरी रकत में एक बार सूरह तौहीद। सलाम के बाद सर सजदे में रखे और सौ बार कहे: اَتُوبُ اِلَى اللهِ इसके बाद कहे:

يَاذَا الْمَنِّ وَ الْجُوْدِ يَاذَا الْمَنِّ وَ الطَّوْلِ يَا مُصْطَفِيَ مُحَمَّدٍ صَلَّى

ऐ मन्नत और बख़शिश वाले, ऐ एहसान व नजात वाले, ऐ मोहम्मद (स.अ.व.व.) को मुंताख़िब

اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ وَ افْعَلْ بِيْ كَذَا وَ كَذَا

करने वाले दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले माहम्मद पर और मेरे साथ ऐसा ऐसा कर।

उसके बाद अपनी हाजतें तलब करें।

रिवायत में है के अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) इन दो रकतों को इसी प्रकार पढ़ते थे। उसके बाद सजदे से सर उठाकर फ़रमाते थे: क़सम है उस ख़ुदा की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है। जो व्यक्ति इस नमाज़ को अदा करके ख़ुदा से हाजत तलब करे परवरदिगार उसे ज़रूर अता करेगा। और अगर दरया की रेग के बराबर भी उसके गुनाह हैं तो ख़ुदा माफ़ कर देगा।

दूसरी रिवायत में सूरह तौहीद हज़ार बार के बजाए सौ बार वारिद हुआ है। इस नमाज़ का ज़िक्र नमाज़े मग़रिब और उसके नाफ़ेले के बाद किया गया है। शेख़ मुफ़ीद, शेख़े तूसी और सय्यद बिन ताऊस ने इस नमाज़ के बाद यह दुआ भी नक़्ल की है:

يَا اَللهُ يَا اَللهُ يَا اَللهُ يَا رَحْمٰنُ يَا اَللهُ يَا رَحِيْمُ يَا اَللهُ يَا مَلِكُ يَا

ऐ ख़ुदा, ऐ ख़ुदा, ऐ ख़ुदा ऐ रहम करने वाले, ऐ ख़ुदा, ऐ महेबान, ऐ ख़ुदा ऐ बादशाह, ऐ ख़ुदा ऐ

اَللهُ يَا قُدُّوْسُ يَا اَللهُ يَا سَلَامُ يَا اَللهُ يَا مُؤْمِنُ يَا اَللهُ يَا مُهَيْمِنُ

पाक व मुनज़्ज़ा, ऐ ख़ुदा, ऐ नुक़्स से पाक, ऐ ख़ुदा ऐ तसदीक़ करने वाले, ऐ ख़ुदा ऐ गवाह, ऐ

يَا اَللّٰهُ يَا عَزِيْزُ يَا اَللّٰهُ يَا جَبَّارُ يَا اَللّٰهُ يَا مُتَكَبِّرُ يَا اَللّٰهُ يَا خَالِقُ يَا

ख़ुदा ऐ ग़ालिब, ऐ ख़ुदा जोड़ने वाले, ऐ ख़ुदा ऐ किब्रेयाई वाले, ऐ ख़ुदा ऐ पैदा करने वाले ऐ ख़ुदा

اَللّٰهُ يَا بَارِئُ يَا اَللّٰهُ يَا مُصَوِّرُ يَا اَللّٰهُ يَا عَالِمُ يَا اَللّٰهُ يَا عَظِيْمُ يَا

ऐ ज़ाहिर करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ सूरत गर ऐ ख़ुदा ऐ इलम वाले ऐ ख़ुदा ऐ बुज़ुर्ग ऐ ख़ुदा ऐ इलम

اَللّٰهُ يَا عَلِيْمُ يَا اَللّٰهُ يَا كَرِيْمُ يَا اَللّٰهُ يَا حَلِيْمُ يَا اَللّٰهُ يَا حَكِيْمُ

वाले ऐ ख़ुदा ऐ साहेबे करम ऐ ख़ुदा ऐ क़रीब ऐ ख़ुदा ऐ क़ुबूल करनेवाले ऐ अल्लाह ऐ सख़ी ऐ

يَا اَللّٰهُ يَا سَمِيْعُ يَا اَللّٰهُ يَا بَصِيْرُ يَا اَللّٰهُ يَا قَرِيْبُ يَا اَللّٰهُ يَا مُجِيْبُ

अल्लाह ऐ बुज़ुर्गी वाले ऐ ख़ुदा ऐ दोस्त ऐ ख़ुदा ऐ वफ़ा करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ मौला ऐ ख़ुदा ऐ

يَا اَللّٰهُ يَا جَوَادُ يَا اَللّٰهُ يَا مَاجِدُ يَا اَللّٰهُ يَا مَلِيُّ يَا اَللّٰهُ يَا وَفِيُّ يَا اَللّٰهُ

निगेहबान ऐ ख़ुदा बुज़ुर्गी वाले ऐ ख़ुदा ऐ हिफ़ाज़त करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ अहाता करने वाले ऐ ख़ुदा

مَوْلٰى يَا اَللّٰهُ يَا قَاضِيْ يَا اَللّٰهُ يَا سَرِيْعُ يَا اَللّٰهُ يَا شَدِيْدُ يَا اَللّٰهُ يَا

ऐ आक़ाओं के आक़ा, ऐ ख़ुदा ऐ इबतेदा ऐ ख़ुदा ऐ आाख़िर ऐ ख़ुदा ऐ ज़ाहिर ऐ ख़ुदा ऐ बातिन ऐ

رَؤُفُ يَا اَللّٰهُ يَا رَقِيْبُ يَا اَللّٰهُ يَا مَجِيْدُ يَا اَللّٰهُ يَا حَفِيْظُ يَا اَللّٰهُ يَا

ख़ुदा ऐ फ़ख़र करनेवाले ऐ ख़ुदा ऐ बुलंद करनेवाले ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार

مُحِيْطُ يَا اَللّٰهُ يَا سَيِّدَ السَّادَاتِ يَا اَللّٰهُ يَا اَوَّلُ يَا اَللّٰهُ يَا اٰخِرُ يَا اَللّٰهُ

ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ दोस्त ऐ ख़ुदा ऐ बुलंद करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा

يَا ظَاهِرُ يَا اَللّٰهُ يَا بَاطِنُ يَا اَللّٰهُ يَا فَاخِرُ يَا اَللّٰهُ يَا قَاهِرُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ

ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ दोस्त ऐ ख़ुदा ऐ नूर ऐ ख़ुदा ऐ बुलंद करनेवाले ऐ

يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ يَا وَدُودُ يَا اَللّٰهُ يَا نُورُ يَا اَللّٰهُ يَا يَا

ख़ुदा ऐ मना करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ दफ़ा करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ खोलने वाले ऐ ख़ुदा ऐ नफ़ा पहुँचाने

رَافِعُ يَا اَللّٰهُ يَا مَانِعُ يَا اَللّٰهُ يَا دَافِعُ يَا اَللّٰهُ يَا فَاتِحُ يَا اَللّٰهُ يَا نَفَّاحُ

वाले ऐ ख़ुदा ऐ बुज़ुर्ग ऐ ख़ुदा ऐ साहेबे ज़मान ऐ ख़ुदा ऐ गवाह ऐ ख़ुदा ऐ गवाही देने वाले ऐ ख़ुदा

يَا اَللّٰهُ يَا جَلِيلُ يَا اَللّٰهُ يَا جَمِيلُ يَا اَللّٰهُ يَا شَهِيدُ يَا اَللّٰهُ يَا شَاهِدُ

ऐ पनह देनी वाले ऐ ख़ुदा ऐ दोस्त ऐ ख़ुदा ऐ पैदा करनेवाले ऐ ख़ुदा ऐ पाक करनेवाले ऐ ख़ुदा ऐ

يَا اَللّٰهُ يَا مُغِيثُ يَا اَللّٰهُ يَا حَبِيبُ يَا اَللّٰهُ يَا فَاطِرُ يَا اَللّٰهُ يَا مُطَهِّرُ

बादशाहत ऐ ख़ुदा ऐ एक़तेदा वाले ऐ ख़ुदा ऐ रोक लेने वाले ऐ ख़ुदा ऐ फैलाने वाले ऐ ख़ुदा ऐ

يَا اَللّٰهُ يَا مَلِكُ يَا اَللّٰهُ يَا مُقْتَدِرُ يَا اَللّٰهُ يَا قَابِضُ يَا اَللّٰهُ يَا بَاسِطُ يَا

ज़िन्दा करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ मौत देने वाले ऐ ख़ुदा ऐ उठाने वाले ऐ ख़ुदा ऐ वारिस ऐ ख़ुदा ऐ अता

اَللّٰهُ يَا مُحْيِى يَا اَللّٰهُ يَا مُمِيتُ يَا اَللّٰهُ يَا بَاعِثُ يَا اَللّٰهُ يَا وَارِثُ يَا اَللّٰهُ

करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ फ़ज़्ल देनेवाले ऐ ख़ुदा ऐ इनआम देने वाले ऐ ख़ुदा ऐ हक़ ऐ ख़ुद ऐ ज़हीर

يَا مُعْطِى يَا اَللّٰهُ يَا مُفْضِلُ يَا اَللّٰهُ يَا مُنْعِمُ يَا اَللّٰهُ يَا حَقُّ يَا اَللّٰهُ

करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ पाक़ीजा ऐ ख़ुदा ऐ एहसान करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ नेकी करने वाले ऐ ख़ुदा

يَا مُبِيْنُ يَا اَللّٰهُ يَا طَيِّبُ يَا اَللّٰهُ يَا مُحْسِنُ يَا اَللّٰهُ يَا مُجْمِلُ يَا اَللّٰهُ يَا

ऐ आगाज़ करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ लौटाने वाले वाले ऐ ख़ुदा ऐ ज़ाहिर करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ इजाद

مُبْدِئُ يَا اَللّٰهُ يَا مُعِيْدُ يَا اَللّٰهُ يَا بَارِئُ يَا اَللّٰهُ يَا بَدِيْعُ يَا اَللّٰهُ يَا هَادِيْ

करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ हिदायत करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ किफ़ालत करने वाले ऐ ख़ुदा ऐ शफाअत देने

يَا اَللّٰهُ يَا كَافِيْ يَا اَللّٰهُ يَا شَافِيْ يَا اَللّٰهُ يَا عَلِيُّ يَا اَللّٰهُ يَا عَظِيْمُ يَا اَللّٰهُ يَا

वाले ऐ ख़ुदा ऐ बुलंद ऐ ख़ुदा ऐ अज़मत वाले ऐ ख़ुदा ऐ बख़्शने वाले ऐ ख़ुदा ऐ एहसान वाले ऐ

حَنَّانُ يَا اَللّٰهُ يَا مَنَّانُ يَا اَللّٰهُ يَا ذَا الطَّوْلِ يَا اَللّٰهُ يَا مُتَعَالِيْ يَا اَللّٰهُ

ख़ुदा ऐ नेमत वाले ऐ ख़ुदा ऐ बुलंद ऐ ख़ुदा ऐ आदिल ऐ ख़ुदा ऐ बुलंदी वाले ऐ ख़ुदा ऐ सादिक़ ऐ

يَا عَدْلُ يَا اَللّٰهُ يَا ذَا الْمَعَارِجِ يَا اَللّٰهُ يَا صَادِقُ يَا اَللّٰهُ يَا صَدُوْقُ يَا

ख़ुदा ऐ मुख़लिस ऐ ख़ुदा ऐ बदला देने वाले ऐ मोहाफ़ज ऐ ख़ुदा ऐ साहेबे जलालत ऐ ख़ुदा ऐ साहेबे

اَللّٰهُ يَا دَيَّانُ يَا اَللّٰهُ يَا بَاقِيْ يَا اَللّٰهُ يَا وَاقِيْ يَا اَللّٰهُ يَا ذَا الْجَلَالِ يَا اَللّٰهُ يَا

करामत ऐ ख़ुदा ऐ पसंदीदा ऐ ख़ुदा ऐ माबूद ऐ ख़ुदा ऐ बनाने वाले ऐ ख़ुदा ऐ मददगार ऐ ख़ुदा ऐ

ذَا الْاِكْرَامِ يَا اَللّٰهُ يَا مَحْمُوْدُ يَا اَللّٰهُ يَا مَعْبُوْدُ يَا اَللّٰهُ يَا صَانِعُ يَا اَللّٰهُ

पैदा करनेवाले ऐ ख़ुदा ऐ फ़आल ऐ ख़ुदा ऐ लुत्फ़ करनेवाले ऐ ख़ुदा ऐ बख़्शने वाले ऐ ख़ुदा ऐ

يَا مُعِيْنُ يَا اَللّٰهُ يَا مُكَوِّنُ يَا اَللّٰهُ يَا فَعَّالُ يَا اَللّٰهُ يَا لَطِيْفُ يَا اَللّٰهُ يَا

शुकर किए हुए ऐ ख़ुदा ऐ नूर ऐ ख़ुदाऐ क़ुदरतवाले ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगा ऐ

غَفُوۡرُ يَا اَللّٰهُ يَا شَكُوۡرُ يَا اَللّٰهُ يَا نُوۡرُ يَا اَللّٰهُ يَا قَدِيۡرُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا

ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ

اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا

परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ ख़ुदा मै तुझसे

اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا اَللّٰهُ اَسْئَلُكَ

सवाल करता हूँ के दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझ पर एहसान कर

اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاٰلِ مُحَمَّدٍ وَتَمُنَّ عَلَيَّ بِرِضَاكَ وَتَعْفُوَ عَنِّيْ

अपनी रज़ामंदी से और मुझको माफ़ कर अपने हिल्म से और मुझपर वसी कर दे अपने पाकीज़ा

بِحِلْمِكَ وَتُوَسِّعَ عَلَيَّ مِنْ رِزْقِكَ الْحَلَالِ الطَّيِّبِ وَمِنْ حَيْثُ

जलाल रिज़क को जहाँ से मै सोच सकता हूँ और जहाँ से नही साच सका हूँ मै तेरा बन्दा हूँ तेरे

اَحْتَسِبُ وَمِنْ حَيْثُ لَا اَحْتَسِبُ فَاِنِّيْ عَبْدُكَ لَيْسَ لِيْ اَحَدٌ

अलावा मेरा कोई नही है और तेरे अलावा मै किसी से दरख़ास्त भी नही करता हूँ। ऐ सबसे बड़े

سِوَاكَ وَلَا اَحَدٌ اَسْئَلُهُ غَيْرُكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا

रहम करनेवाले जो ख़ुदा चाहता है वो होता है कोई क़ूव्वत नही है मगर बुलंद व अज़ीम ख़ुदा की

قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

उसके बाद सजदे में जाकर कहे:

तरफ़ से।

يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَبُّ يَا رَبُّ يَا رَبُّ يَا مُنْزِلَ الْبَرَكَاتِ بِكَ تُنْزَلُ

ऐ ख़ुदा ऐ ख़ुदा ऐ ख़ुदा ऐ परवरदिगार ऐ परवरदिगार ऐ परवरदिगार ऐ बरकतों के नाज़ल करनेवाले

كُلُّ حَاجَةٍ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ فِيْ مَخْزُوْنِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ وَ الْاَسْمَآءِ

तेरे ही पास से हर हाजत नाज़ल होती है मै तुझसे सवाल करता हूँ हर उस नाम के ज़रिए जो

الْمَشْهُوْرَاتِ عِنْدَكَ الْمَكْتُوْبَةِ عَلٰى سُرَادِقِ عَرْشِكَ اَنْ تُصَلِّيَ

ख़ज़ानए ग़ैब मे तेरे नज़दीक है और तेरे मशहूर नामो के ज़रिए जो लिखे हुए हैं तेरे अर्श के परदों

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَقَبَّلَ مِنِّيْ شَهْرَ رَمَضَانَ وَ تَكْتُبَنِيْ مِنَ

पर के तू दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और माहे रमज़ान को मेरे लिए क़ुबूल

الْوَافِدِيْنَ اِلٰى بَيْتِكَ الْحَرَامِ وَ تَصْفَحَ لِيْ عَنِ الذُّنُوْبِ الْعِظَامِ وَ

कर ले और तू मुझेको लिख दे अपने बतुल हराम की तरफ जानेवाला मे और मेरे बड़े गुनाहों को

تَسْتَخْرِجَ لِيْ يَا رَبِّ كُنُوْزَكَ يَا رَحْمٰنُ.

बख़्श दे और अपने ख़ज़ानो को मेरे लिए निकाल दे। ऐ परवरदिगार, ऐ रहम करने वाले।

नौ: चौदह रकत नमाज़ पढ़े। हर रकत में सूरह हम्द के बाद आयतल कुर्सी और तीन बार सूरह तौहीद पढ़े ताके हर रवत में चालीस साल की इबादत का सवाब भी मिले इस तरह जैसे रोज़ा भी रखा हो और नमाज़ भी पढ़ी हो। दस: शेख़ ने मिसबाह में फ़रमाया है के आख़री शब में ग़ुस्ल करके अपनी नमाज़ की जगह तुलूए फ़ज्र तक बैठा रहे।

ईद के दिन के आमाल

एक: सुबह की नमाज़ और ईद की नमाज़ के बाद उन तकबीरात को पढ़े जिनका रात को नमाज़े फ़रीज़ा के बाद ज़िक्र हो चुका है।
दो: फ़जर की नमाज़ के बाद ये दुआ पढ़े: اَللّٰهُمَّ اِنِّي تَوَجَّهْتُ اِلَيْكَ بِمُحَمَّدٍ اِمَامِي इस दुआ को नमाज़े ईद के बाद ज़िक्र फ़रमाया है।
तीन: ज़काते फ़ित्रा निकाले। हर व्यक्ति की तरफ़ से निय्यत करे जिसकी तफ़सील फ़िक्ह की किताबों में लिखी हुई है। और यह वाजिबे मुवक्किदा है। बल्के माहे रमाज़ान के रोज़े की क़ुबूलियत की शर्त है और अगले साल तक की हिफाज़त का ज़रिया है। परवरदिगार ने उसका ज़िक्र नमाज़ से पहले किया है।
चार: उसके बाद तुलूए फ़ज्र के बाद नमाज़े ईद तक जैसा के फ़रमाया है और इसी रिवायत में है के ग़ुस्ल छत के नीचे करे और पहले यह कहे:

اَللّٰهُمَّ اِيمَانًا بِكَ وَتَصْدِيقًا بِكِتَابِكَ وَاتِّبَاعَ سُنَّةِ نَبِيِّكَ

ख़ुदाया तुझ पर ईमान की रूह से और तेरी किताब की तसदीक़ की रूह से और मोहम्मद

مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ

(स.अ.व.व.) की सुन्नत के इत्तेबा की रूह से।

उसके बाद बिसमिल्लाह कहे और ग़ुस्ल करे। ग़ुस्ल ख़त्म होने के बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ كَفَّارَةً لِذُنُوبِي وَطَهِّرْ دِينِي اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّيَ الدَّنَسَ

ख़ुदाया उसको मेरे गुनाहों का कफ़्फ़ारा क़रार दे और मेरे दीन को पाकीज़ा करा ख़ुदाया मुझसे न पाकी को दूर कर दे।

पाँच: अच्छे कपड़े पहने, ख़ुश्बू इस्तेमाल करे और मक्के के अलावा नमाज़ के लिए सहरा में निकल जाए और ज़ेरे आसमान नमाज़ अदा करे।
छेः: नमाज़े ईद से पहले अव्वले वक़्त में कुछ इफ़्तार करे और बेहतर यह है के ख़ुरमा या मीठा हो। शेख़ मुफ़ीद ने फ़रमाया है के आज के दिन मुख़्तसर ख़ाके तुरबते सय्यदुश शोहदा का इस्तेमाल करे। जब नमाज़े ईद के लिए तय्यार हो जाए तो तुलूए आफ़्ताब के बाद घर से निकले और इन दुआओं को पढ़े जिनको सय्यद ने इक़्बाल में नक़्ल किया है। उनमें से एक अबू हमज़ा की दुआ है। जिसकी रिवायत इमाम बाक़िर (अ.स.) से भी है के फ़रमाया के जब ईदे फ़ित्र, ईदे क़ुरबान और जुमा में नमाज़ के लिए जाने लगों तो यह दुआ पढ़ो:

اَللّٰهُمَّ مَنْ تَهَيَّاَ فِي هٰذَا الْيَوْمِ اَوْ تَعَبَّاَ اَوْ اَعَدَّ وَاسْتَعَدَّ لِوِفَادَةٍ

ख़ुदाया जो शख़्स इस दिन आमादा हुआ या तैयार हुआ या साज़ो सामान ईद फ़राहम किया या

اِلٰى مَخْلُوقٍ رَجَاءَ رِفْدِهِ وَنَوَافِلِهِ وَفَوَاضِلِهِ وَعَطَايَاهُ فَاِنَّ اِلَيْكَ

मुसतइद हुआ किसी मख़लूक़ से मुलाक़ात करने के लिए उसकी अता व बख़्शिश और फ़ज़्ल व

يَا سَيِّدِي تَهْيِئَتِي وَتَعْبِئَتِي وَاِعْدَادِي وَاسْتِعْدَادِي رَجَاءَ رِفْدِكَ

एहसान की उम्मीद से साथ तो ऐ मेरे सरदार मै आमादा, मोहय्या, साजो सामान किए हुए मुसतइद

وَجَوَائِزِكَ وَنَوَافِلِكَ وَفَوَاضِلِكَ وَفَضَائِلِكَ وَعَطَايَاكَ وَقَدْ

हूँ तेरी तरफ़ तेरी अता व बख़्शिश और फ़ज़्ल व एहसान की उम्मीद लगाए हुए और मैने सुबह

غَدَوْتُ اِلٰى عِيدٍ مِنْ اَعْيَادِ اُمَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِ

की है तेरे नबी मोहम्मद (स.अ.व.व.) की उम्मत की ईदों मे से एक ईद के साथ जबके आज मै

وَعَلٰى آلِهِ وَلَمْ اَفِدْ اِلَيْكَ الْيَوْمَ بِعَمَلٍ صَالِحٍ اَثِقُ بِهٖ قَدَّمْتُهُ وَلَا

तेरी तरफ़ कोई नेक अमल नही लाया हूँ के जिसको वसूक के साथ तेरे पास पेश कर सकूँ और न

تَوَجَّهْتُ بِمَخْلُوقٍ اَمَّلْتُهُ وَلٰكِنْ اَتَيْتُكَ خَاضِعًا مُقِرًّا بِذُنُوبِي

किसी मख़लूक़ की तरफ़ रूख किया है जिससे मै उम्मीद लगाऊँ लेकिन मै तेरे पास आया हूँ ख़ुज़ू

وَاِسَاءَتِي اِلٰى نَفْسِي فَيَا عَظِيمُ يَا عَظِيمُ يَا عَظِيمُ اغْفِرْ لِيَ

व ख़ुशू की हालत मे अपने गुनाहां और बुराईयों का एतेराफ़ करते हुए ऐ अज़मत वाले ऐ अज़मत

الْعَظِيمَ مِنْ ذُنُوبِي فَاِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ الْعِظَامَ اِلَّا اَنْتَ يَا لَا

वाले ऐ अज़मत वाले मेरे अज़ीम गुनाहां को बख़्श दे तेरे अलावा कोई बड़े गुनाहों को बख़्श नही

اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

सकता। ऐ वो ख़ुदा के तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले।

आठ: नमाज़े ईद अदा करे जो दो रकत है। सूरह हम्द और क़िरअत के बाद पाँच तकबीरें कहे और हर तकबीर के बाद क़ुनूत में यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَهْلَ الْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ، وَاَهْلَ الْجُودِ وَالْجَبَرُوتِ، وَاَهْلَ

ऐ ख़ुदा किब्रयाई और अज़मत वाले और बख़शिश और जबरूत वाले और माफ़ी और रहमत

الْعَفْوِ وَالرَّحْمَةِ وَاَهْلَ التَّقْوٰى وَالْمَغْفِرَةِ، اَسْاَلُكَ بِحَقِّ هٰذَا

वाले और तक़वा और मग़ाफ़िरत वाले मै तुझ से सवाल करता हूँ इस दिन के वासते से जिस को

الْيَوْمِ الَّذِي جَعَلْتَهُ لِلْمُسْلِمِينَ عِيداً وَلِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

तूने मुसलमानो के लिए ईद क़रार दिया है और मोहम्मद (स.अ.व.व.) के लिए ज़ख़ीरा और शरफ़

وَآلِهِ ذُخْراً وَ كَرَامَةً وَ شَرَفاً وَمَزِيداً أَنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ

और ज़्यादती का मक़ाम क़रार दिया है के तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

مُحَمَّدٍ وَأَنْ تُدْخِلَنِي فِي كُلِّ خَيْرٍ أَدْخَلْتَ فِيهِ مُحَمَّداً وَآلَ مُحَمَّدٍ، وَأَنْ

और मुझको दाख़ल कर दे हर उस नेकी मे जिस मे मोहम्मद व आले मोहम्मद को दाख़ल किया

تُخْرِجَنِي مِنْ كُلِّ سُوءٍ أَخْرَجْتَ مِنْهُ مُحَمَّداً وَآلَ مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُكَ

है और तू मुझको निकाल दे हर उस बुराई से जिस से मोहम्मद व आले मोहम्मद को निकाला है

عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ. اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا سَأَلَكَ

तेरा दुरूद हो उन पर और उन सब पर ख़ुदाया मै सवाल करता हूँ उस नेकी का जिस का तुझ से

بِهِ عِبَادُكَ الصَّالِحُونَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِمَّا اسْتَعَاذَ مِنْهُ عِبَادُكَ

तेरे नेक बन्दों ने सवाल किया है और तेरी पनाह चाहता हूँ हर उस चीज़ से जिस से पनाह चाही

الصَّالِحُونَ.

है तेरे सालेह बन्दों ने।

उसके बाद छटी तकबीर कहकर रूकू में जाए और फिर दूसरी रकत में सूरह हम्द के बाद, सूरह शम्स पढ़े। उसके बाद चार तकबीर कहे और हर तकबीर के बाद वह दुआ पढ़े जो पहले बताई गई थी। पाँचवीं तकबीर कह कर रूकू

में जाए। उसके बाद नमाज़ तमाम करके तसबीहे ज़हरा पढ़े।
नमाज़ के बाद बहुत सी दुआएं वारिद हुई हैं। जिसमें से दुआ नं. ४६ सहीफ़ा कामेला है।
ऐ वो रहम करता है उस पर जिस पर बंदे रहम नही करते।
मुस्तहब है के नमाज़े ईद ज़ेरे आसमान और ज़मीन बग़ैर फ़र्श बिछाए अदा करे और नमाज़ के बाद उस रास्ते के अलावा दूसरे रास्ते से वापस आए जिस रास्ते से गया है और अपने बिरादरे ईमानी के आमाल के क़ुबूल होने की दुआ करे।
नौ: ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) पढ़े।
दस: उसके बाद दुआ नुदबा पढ़े। और जब दुआओं से फ़ारिग़ हो जाए तो सजदे में जाए और कहे:

اَعُوذُبِكَ مِنْ نَارٍ حَرُّهَا لَا يُطْفَأُ وَجَدِيدُهَا لَا يَبْلٰى وَعَطْشَانُهَا لَا

मै तेरी पन्हा चाहता हूँ उस आग से जिस की गरमी ख़त्म नही होती है और जिस का नया पन

يُرْوٰى

उसके बाद दाँया रूखसार ज़मीन पर रखे और कहे:

पूराना नही होता और जिस का प्यास बुझती नही।

اِلٰهِى لَا تُقَلِّبْ وَجْهِى فِى النَّارِ بَعْدَ سُجُودِى وَتَعْفِيرِى لَكَ بِغَيْرِ

ख़ुदाया मेरे चेहरे को जहन्नम मे न पलटना मेरे सजदे व ख़ाक़ पर माथा रखने के बाद बेग़ैर मेरे तेरे

مَنٍّ مِنِّى عَلَيْكَ بَلْ لَكَ الْمَنُّ عَلَىَّ

फिर बायाँ रूख़सार रख कर कहे:

उपर एहसान के बल्के तेरा एहसान मेरे ऊपर है

اِرْحَمْ مَنْ اَسَاءَ وَاقْتَرَفَ وَاسْتَكَانَ وَاعْتَرَفَ

फिर सर को ख़ाक पर रखे और कहे:

तू रहम कर उस पर जिस ने बुराई की न फ़रमानी की बेचारा हुआ और एतेराफ़ किया।

اِنْ كُنْتُ بِئْسَ الْعَبْدُ فَاَنْتَ نِعْمَ الرَّبُّ عَظُمَ الذَّنْبُ مِنْ

अगर मै बदतरीन बन्दा हूँ तू बेहतरीन रब है तेरे बन्दा का गून्हा अज़ीम है तू तेरी माफ़ी को तेरी

عَبْدِكَ فَلْيَحْسُنِ الْعَفْوُ مِنْ عِنْدِكَ يَا كَرِيمُ

फिर सौ बार कहे:

जानिब से बेहतरीन होना चाहिए। ऐ करम करने वाले

اَلْعَفْوَ الْعَفْوَ

फिर सय्यद ने फ़रमाया:

माफ़ी माफ़ी

وَلَا تَقْطَعْ يَوْمَكَ هٰذَا بِاللَّعْبِ وَالْاِهْمَالِ وَاَنْتَ لَا تَعْلَمُ اَمَرْدُودٌ

आज के दिन को लहवो लएब और ग़फ़्लत में न गुज़ारो के तुम्हें नहीं मालूम है के तुम्हारे आमाल

اَمْ مَقْبُولُ الْاَعْمَالِ فَاِنْ رَجَوْتَ الْقَبُولَ فَقَابِلْ ذٰلِكَ بِالشُّكْرِ

मक़बूल हैं या मरदूद। अगर मक़्बूलियात की उम्मीद है तो उसके बदले शुक्रिया अदा करो। और

الْجَمِيلِ وَاِنْ خِفْتَ الرَّدَّ فَكُنْ اَسِيرَ الْحُزْنِ الطَّوِيلِ.

अगर रद्द हो जाने का ख़ाफ़ है तो मुस्तिक़ल तौर पर रंजीदा रहो।

पच्चीसवाँ दिन

बाज़ के क़ौल के मुताबिक़ १४८ हिजरी में इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की वफ़ात वाकेअ हुई है और बाज़ ने रोज़े वफ़ात पंद्रह रजब बयान की है। और आँ हज़रत की वफ़ात का सबब वह ज़हर था जो उन्हें अंगूर में खिलाया गया था। और रिवायत हुई है के जब आपकी वफ़ात का समय आया तो अपनी आँखों को खोल कर फ़रमाया के मेरे अज़ीज़ों को जमा करो। और जब सब जमा हो गए तो उनकी जानिब निगाह क़र के इर्शाद फ़रमाया के मेरी शफ़ाअत उसको नहीं मिलेगी जो नमाज़ को हलका समझता है और उसकी तरफ़ तवज्जोह नहीं करता है।

वर्ग-५

ज़िलक़ाद के आमाल

वाज़ेह रहे के पहला मोहतरम महीना है जिसका ज़िक्र हक तआला ने क़ुरआने मजीद में फ़रमाया है। और सय्यद बिन ताऊस ने रिवायत नक़्ल की है ज़िलक़ादा ज़माने इबादत दुआ है। शिद्दत के अवक़ात में इस महीने के रोज़े यकशंबा एक नमाज़ रसूले अकरम (स.अ.व.व.) से बेहतरीन फ़ज़ाएल के साथ वारिद हुई है उसका ख़ुलासा यह है के अगर कोई व्यक्ति इस नमाज़ को बजा लाए तो उसकी तौबा क़ुबूल होगी और उसके गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और उसके दुश्मन रोज़े क़यामत उस से राज़ी हो जाएंगे। दुनिया से बाईमान जाएगा। उसकी क़ब्र में कुशादगी और नूरानियत पैदा होगी। उसके वालेदैन उससे ख़ुश होंगे, उसके वालेदैन और उसकी औलाद की बख़शिश हो जाएगी। रिज़्क में वुसअत पैदा होगी, मलेकुल मौत नरमी का बरताव करेंगे और आसानी से जान निकल जाएगी। इस नमाज़ की कैफ़यत यह है के इतवार के दिन ग़ुस्ल करे उसके बाद वुज़ू करके चार रकत नमाज़ अदा करे। हर रकत में तीन बार सूरह तौहीद और एक एक बार फ़लक़ और नास। उसके बाद सत्तर बार इस्तेग़फ़ार करे। और अंत में कहे:

उसके बाद कहे: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

और नही है ताक़त सिवाए अल्लाह के जो बुज़ुर्ग व बरतर है।

يَا عَزِيزُ يَا غَفَّارُ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَذُنُوبَ جَمِيعِ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

ऐ इज़्ज़त वाले ऐ बख़्शने वाले तू मेरे और तमाम मोमिनीन के गुनाहों को बख़्श दे तेरे अलावा

فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ

कोई गुनाहों को बख़्श नही सकता है।

बज़ाहिर यह इस्तेग़फ़ार और दुआ नमाज़ के बाद होना चाहिए। वाज़ेह रहे रिवायत में है के जो व्यक्ति मोहतरम महीने में मुसलसल जुमेरात जुमा हफ़्ते को रोज़ा रखे तो उसको नौ साल की इबादत का सवाब अता किया जाएगा। शेख़ जलील अली बिन इब्राहीम कुम्मी ने फ़रमाया है जो व्यक्ति मोहतरम महीनों में गुनाह करेगा उसका अज़ाब भी दुगना हो जाएगा। जिस प्रकार नेकियों का सवाब दुगना हो जाता है।

ग्यारह ज़िलकाद

ग्यारह ज़िलकाद १४८ हिजरी में विलादते इमामे रज़ा (अ.स.) वाकेअ हुई।

पंद्रहवीं रात

निहायत मुबारक रात है। जब परवरदिगार बंदगाने मोमिन पर नज़रे रहमत करता है। जो व्यक्ति भी इस शब में इबादत करे तो उसे परवरदिगार सौ रोज़ेदारों का सवाब देता है जो हमेंशा मस्जिद में रहे हों और एक लमहे के लिए भी मासियते ख़ुदा न करे जैसा के रिवायते पैग़म्बर में वारिद हुआ है इनसान उस रात को ग़नीमत ख़याल करे और अपने को इताअत व इबादत व नमाज़, तलबे हाजात में मश्ग़ूल रखे जैसा के रिवायत में है। के जो व्यक्ति उस रात में ख़ुदावंदे आलम से कोई हाजत तलब करेगा तो अल्लाह उसको

ज़रूर अता करेगा।

तेईसवीं तारीख़

हिजरी २०३ में बक़ौल शहादत इमाम रज़ा (अ.स.) वाकेअ हुई। नज़दीक या दूर से आपकी ज़ियारत मुस्तहब है। इब्ने ताऊस ने इक़्बाल में फ़रमाया है के मैने अपने बाज़ ओलमा की तसानीफ़ में देखा है के इमाम रज़ा (अ.स.) की ज़ियारत तेईसवीं ज़िलकाद को क़रीब या दूर से पढ़ा करे। उनकी मश्हूर ज़ियारतों के ज़रिए या किसी और ज़ियारत के ज़रिए।

पच्चीसवीं शब

शबे दहवुल अर्ज़ है (यानी परवरदिगारे आलम ने ज़मीन को ख़ाना काबा के नीचे बिछाया)। यह रात मोहतरम रात है इसमें रहमतों का नुज़ूल होता है और रात भर इबादत करने का बेशुमार अज्र व सवाब है। हसन बिन अली वश्शा से रिवायत है के जब मैं छोटा था तो अपने पिता के संग इमाम रज़ा (अ.स.) की ख़िदमत में हाज़र हुआ। शाम का खाना खाया। पच्चीसवीं ज़िलकाद की शब थी। इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया के आज की शब हज़रत इब्राहीम (अ.स.) और हज़रते ईसा (अ.स.) की विलादत की शब है। और ज़मीन को ख़ाना काबा के नीचे से बिछाया गया। लेहाज़ा जो व्यक्ति भी इस दिन रोज़ा रखे तो वह ऐसा है जैसे उसने साठ महीने के रोज़े रखे हों। दूसरी रिवायत में है के हज़रत इमाम अस्र (अ.स.) का ज़हूर भी इसी तारीख़ में होगा।

पच्चीसवीं तारीख़

रोज़े दहवुल अर्ज़ है। और यह उन चार दिनों में है जिनका रोज़ा तमाम साल के रोज़ों में मुम्ताज़ है। और रिवायात है के उसका रोज़ा सत्तर साल के रोज़े के बराबर है और बाज़ रिवायात में सत्तर साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है। जो व्यक्ति दिन में रोज़ा रखे और रात इबादत में गुज़ार दे तो उसके लिए सौ साल की इबादतों का सवाब लिखा जाएगा। इस दिन रोज़ेदार के लिए ज़मीन व आस्मान के तमाम मख़लूक़ इस्तेग़फ़ार करते हैं। यह वह दिन है जब रहमते ख़ुदा मुन्तशिर होती है। और इसमें और तमाम इबादात इजतेमाई ज़िक्र ख़ुदा के लिए बेहतरीन अज्र सवाब है। रोज़ा, इबादत्। ज़िक्रे खुदा और ग़ुस्ल के

अलावा दो अमल और भी हैं:
एक: नमाज़ है। जिसको शिया हज़रात की किताबों में ज़िक्र किया गया है। के दो रकत नमाज़ नाश्ते के समय पढ़े। हर रकत में सूरह हम्द के बाद पाँच बार सूरह शम्स पढ़े और सलाम के बाद कहे:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

उसके बाद दुआ करे और यह दुआ पढ़े:

कोई क़ुव्वत व ताक़त सिवाए ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर के नही है।

يَا مُقِيلَ الْعَثَرَاتِ اَقِلْنِي عَثْرَتِي يَا مُجِيبَ الدَّعَوَاتِ اَجِبْ دَعْوَتِي

ऐ लगिज़शों के दर गूजर करने वाले मेरी लगिज़श से दर फ़रमा ऐ दुआओं के क़ुबूल करने वाले

يَا سَامِعَ الْاَصْوَاتِ اسْمَعْ صَوْتِي وَارْحَمْنِي وَتَجَاوَزْ عَنْ سَيِّئَاتِي وَمَا

मेरी दुआ को क़ुबूल कर ऐ आवाज़ों के सुनने वाले मेरी आवाज़ को सुन ले और मुझ पर रहम

عِنْدِي يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

कर और मेरी बुराईयों को माफ़ कर दे और जो कुछ मेरे पास है ऐ जलालत व बुज़ुर्गा वाले ख़ुदा।

दो: यह दुआ भी पढ़े जिसको शेख़ ने मिस्बाह में नक़्ल किया है और मुस्तहब क़रार दिया है।

اَللّٰهُمَّ دَاحِيَ الْكَعْبَةِ وَفَالِقَ الْحَبَّةِ وَصَارِفَ اللَّزْبَةِ وَكَاشِفَ

ख़ुदाया ऐ काबे की ज़मीन के बिछाने वाले और दाने को शिग़ाफ़ता करने वाले और सख़तियों के दूर करने

كُلِّ كُرْبَةٍ اَسْاَلُكَ فِي هٰذَا الْيَوْمِ مِنْ اَيَّامِكَ الَّتِي اَعْظَمْتَ

वाले और ग़म व अलम को ज़ाएल करने वाले मै तुझ से आज के दिन तेरे दिनो मे से सवाल करता हूँ जिस

حَقَّهَا وَاَقْدَمْتَ سَبْقَهَا وَجَعَلْتَهَا عِنْدَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَدِيعَةً

के हक़ को तू ने अज़ीम किया है और जिस को तमाम दिनो पर मुकद्दम किया है। और जिस को मोमिनीन

وَاِلَيْكَ ذَرِيعَةً وَبِرَحْمَتِكَ الْوَسِيعَةِ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

के नज़दीक़ वदीअत क़रार किया है और अपनी तरफ़ ज़रिया बनाया है और तेरी वसी रहमत के ज़रिए

عَبْدِكَ الْمُنْتَجَبِ فِي الْمِيثَاقِ الْقَرِيبِ يَوْمَ التَّلَاقِ فَاتِقِ

के दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद पर जो तेरे मुन्तिख़ब बन्दे हैं मीसाक़ क़रीब मे मुलाकात के रोज़ जो हर

كُلِّ رَتْقٍ وَدَاعٍ اِلٰى كُلِّ حَقٍّ وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهِ الْاَطْهَارِ الْهُدَاةِ

बस्ता को खोलने वाले हैं और हर हक़ की जानिब बुलाने वाले हैं और उन के अहलेबैत पर जो पाकिज़ा,

الْمَنَارِ دَعَائِمِ الْجَبَّارِ وَوُلَاةِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ وَاَعْطِنَا فِي يَوْمِنَا

हादी, चिराग़े इल्म, ख़ुदाए जब्बार की जानिब ले जाने वाले और जन्नत व जहन्नम के हाकिम हैं और हम

هٰذَا مِنْ عَطَائِكَ الْمَخْزُونِ غَيْرَ مَقْطُوعٍ وَلَا مَمْنُوعٍ تَجْمَعُ لَنَا

को हमारे इस दिन मे अपनी ऐसा ख़ज़ाना अतीया दे जो कभी मुन्क़ता न होता हो और न रूकता हो और

بِهِ التَّوْبَةَ وَحُسْنَ الْاَوْبَةِ يَا خَيْرَ مَدْعُوٍّ وَاَكْرَمَ مَرْجُوٍّ يَا كَفِيُّ

अच्छी तौबा और बेहतरीन बाज़गश्त की तौफ़ीक़ अता कर। ऐ वो बेहतरीन ज़ात जिस से दुआ की जाती

يَا وَفِيُّ يَا مَنْ لُطْفُهُ خَفِيٌّ اُلْطُفْ لِي بِلُطْفِكَ وَاَسْعِدْنِي بِعَفْوِكَ

है और ऐ वो करीम तरीन जिस से उम्मीद की जाती है ऐ कफ़ालत करने वाले, ऐ वफ़ा करने वाले। ऐ ख़ुदा

وَاَيِّدْنِي بِنَصْرِكَ وَلَا تُنْسِنِي كَرِيمَ ذِكْرِكَ بِوُلَاةِ اَمْرِكَ

जिस का लुत्फ़ पोशीदा है मुझ पर अपने लुत्फ़ से महेरबानी कर और अपनी माफ़ी से मुझको नेक बना दे

وَحَفَظَةِ سِرِّكَ وَاحْفَظْنِي مِنْ شَوَائِبِ الدَّهْرِ اِلٰى يَوْمِ الْحَشْرِ

और अपनी नुसरत से मेरी मदद कर और मुझको न भुला अपने पाकीज़ा जिक्र से अपने वलीए अम्र और

وَالنَّشْرِ وَاَشْهِدْنِي اَوْلِيَاءَكَ عِنْدَ خُرُوجِ نَفْسِي وَحُلُولِ

अपने राज़ के मोहाफ़ज़ीन के साथ और मुझको महफ़ूज़ कर ज़माने की मक्कारी से राज़े हर्श व नर्श तक और

رَمْسِي وَانْقِطَاعِ عَمَلِي وَانْقِضَاءِ اَجَلِي اَللّٰهُمَّ وَاذْكُرْنِي

अपने औलिया को मेरी मौत के वक़्त रूह के निकलने के वक़्त और वक़्ते अजल और अमल के मुन्क़ता

عَلٰى طُولِ الْبِلٰى اِذَا حَلَلْتُ بَيْنَ اَطْبَاقِ الثَّرٰى وَنَسِيَنِي

होने के वक़्त मेरे पास हाज़र कर दे। ख़ुदाया तू मुझको याद रख मुददत के तूलानी होने पर जब मै ज़मीन

النَّاسُونَ مِنَ الْوَرٰى وَاحْلِلْنِي دَارَ الْمُقَامَةِ وَبَوِّئْنِي مَنْزِلَ

के तबक़ात मे दाख़िल हो जाऊँ और मख़लूक़ात मे से लोग मुझको भूल जाएँ और मुझको क़याम के घर

الْكَرَامَةِ وَاجْعَلْنِي مِنْ مُرَافِقِي اَوْلِيَائِكَ وَاَهْلِ اجْتِبَائِكَ

बेहिशत मे दाख़िल कर और इज़्ज़त के मक़ाम पर मुझको जगह दे और मुझको अपने दोस्तां के रफ़ीक़ो

وَاصْطَفَائِكَ وَبَارِكْ لِي فِي لِقَائِكَ وَارْزُقْنِي حُسْنَ الْعَمَلِ قَبْلَ

और मुन्ताख़िब व बरगज़ीदा बन्दा के रफ़ीकों मे क़रार दे और मेरे लिए बरकत दे अपनी मुलाक़ात मे और

حُلُولِ الْاَجَلِ بَرِيئًا مِنَ الزَّلَلِ وَسُوءِ الْخَطَلِ اَللّٰهُمَّ وَاَوْرِدْنِي

मुझको हुसने अमल की ताफ़ीक़ दे मौत के आने से क़ब्ल जो ख़ता से पाक और ख़लल और ख़राबी से

حَوْضَ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَاسْقِنِي مِنْهُ مَشْرَبًا

साफ़ सुथरा हो। ख़ुदाया मुझको अपने नबी मोहम्मद (स.अ.व.व.) के हौज़े कौसर पर वारिद कर और इस

رَوِيًّا سَائِغًا هَنِيئًا لَا اَظْمَاُ بَعْدَهُ وَلَا اُحَلَّؤُ وِرْدَهُ وَلَا عَنْهُ

मे से ऐसे ख़ुशगवार पानी से सेराब कर जो मज़ेदार हो के मै उस के बाद प्यासा न रहू और उस हौज़ पर से

اُذَادُ وَاجْعَلْهُ لِي خَيْرَ زَادٍ وَاَوْفَى مِيعَادٍ يَوْمَ يَقُومُ الْاَشْهَادُ

हटाया न जाऊँ और उस को मेरे लिए बहतरीन तोशा क़रार दे जिस दिन के गवाही देने वाले खड़े होंगे। ऐ

اَللّٰهُمَّ وَالْعَنْ جَبَابِرَةَ الْاَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ وَبِحُقُوقِ اَوْلِيَائِكَ

ख़ुदा अव्वलीन व आख़ेरीन के जाबीरों पर लानत फ़रमा और उन पर जिन्होने तेरे वलीया के हुक़ूक़ को

الْمُسْتَاثِرِينَ اَللّٰهُمَّ وَاقْصِمْ دَعَائِمَهُمْ وَاَهْلِكْ اَشْيَاعَهُمْ

ग़ज़्ब किया है। ख़ुदाया उन की बुनयादा को ख़त्म कर दे उन के पीरा को हलाक़ कर दे और उनके आलिमों

وَعَامِلَهُمْ وَعَجِّلْ مَهَالِكَهُمْ وَاسْلُبْهُمْ مَمَالِكَهُمْ وَضَيِّقْ

को और उन की हलाक़त मे जल्दी कर और उन के मुलकों को उन से ले ले और उन पर राहों को तंग कर

عَلَيْهِمْ مَسَالِكَهُمْ وَالْعَنْ مُسَاهِمَهُمْ وَمُشَارِكَهُمْ اَللّٰهُمَّ

दे और उन के शूरका और मुसाहेबीन पर भी लानत कर। ख़ुदाया अपनी वलियों के ज़ुहूर मे जल्दी फ़रमा

وَعَجِّلْ فَرَجَ اَوْلِيَائِكَ وَارْدُدْ عَلَيْهِمْ مَظَالِمَهُمْ وَاَظْهِرْ

और उन के हुक़ूक उन के पास वापस फ़रमा और उन के मेक़ाबले मे उन्हें इक़्तेदा अता कर। ख़ुदाया

بِالْحَقِّ قَائِمَهُمْ وَاجْعَلْهُ لِدِينِكَ مُنْتَصِرًا وَبِاَمْرِكَ فِي اَعْدَائِكَ

मलाएका की फ़ौजों के ज़रिए उन की मदद फ़रमा और और वो हुकूम जो शबे क़दर मे उन की हूकूमत के

مُؤْتَمِرًا اَللّٰهُمَّ احْفُفْهُ بِمَلَائِكَةِ النَّصْرِ وَبِمَا اَلْقَيْتَ اِلَيْهِ مِنَ

लिए मुकद्दर किया है उस को दुश्मनों से इन्तेक़ाम के लिए क़रार दे यहाँ तक के तू राज़ी हो जाए और तेरा

الْاَمْرِ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ مُنْتَقِمًا لَكَ حَتّٰى تَرْضٰى وَيَعُودَ دِينُكَ

दीन उन के ज़रिए और उन के हाथ पर अज़ सरे नौ लौट आए और वो हक़ को मुक़म्मल तौर पर साफ़

بِهِ وَعَلٰى يَدَيْهِ جَدِيدًا غَضًّا وَيَمْحَضَ الْحَقَّ مَحْضًا وَيَرْفُضَ

करे और बातिल को कुल्ली तौर पर महव कर दे। ख़ुदाया उन पर और उन के तमाम आबाए ताहेरीन पर

الْبَاطِلَ رَفْضًا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ وَعَلٰى جَمِيعِ آبَائِهِ وَاجْعَلْنَا

दुरूद फ़रमा और हम को उन के असहाब और फ़ाज़ मे क़रार दे और हम को उन की रजअत के ज़माने

مِنْ صَحْبِهِ وَاُسْرَتِهِ وَابْعَثْنَا فِي كَرَّتِهِ حَتّٰى نَكُونَ فِي زَمَانِهِ مِنْ

मे उठा ताके हम उन के ज़माने मे उन के मददगार मे हों। ख़ुदाया हम को उन के क़याम के ज़माने मे हाज़र

اَعْوَانِهِ اَللّٰهُمَّ اَدْرِكْ بِنَا قِيَامَهُ وَاَشْهِدْنَا اَيَّامَهُ وَصَلِّ عَلَيْهِ

रख और हम को उन का ज़माना दिखा दे और मोहम्मद पर दुरूद नाज़ल फ़रमा और उन का सलाम हमारी

وَارْدُدْ اِلَيْنَا سَلَامَهُ وَالسَّلَامُ عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

तरफ़ पहुँचा और सलाम हो उन पर और अल्लाह की बरकत व रहमत हो उन पर।

वाज़ेह रहे के मीर दामाद (र.अ.) ने रिसालए अरबा अय्याम में आमाले रोज़े दहवुल अर्ज़ में फ़रमाया है के उस दिन ज़ियारते इमामे रज़ा (अ.स.) तमाम आमाले मुस्तहब से अफ़ज़ल, हर सुन्नत से ज़्यादा ताकीद के साथ वारिद हुई है। और इसी प्रकार हज़रत की ज़ियारत रोज़े अव्वल माहे रजब भी इन्तेहाई ताकीद के साथ नक़्ल की गई है।

ज़िलक़ादा का आख़री दिन

हिजरी २२० में बिनाबर मशहूर इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.स.) की शहादत मोतसिम अब्बासी के ज़हर के ज़रिए बग़दाद में वाके हुई। यह तक़रीबन मामून के मरने के ढ़ाई साल के बाद हुआ है जैसा के इमाम (अ.स.) फ़रमाया करते थे। के सुकून मामून को तीस महीने के बाद मिलेगा। उसका मतलब यह था के हज़रत मामून के बरताव से इस क़द्र अज़ीयत में थे और इस क़द्र परेशान थे के अपनी मौत को सुकून और राहत से फ़रमाते थे। जैसा इमाम अली रज़ा (अ.स.) ने अपनी वली अहदी के ज़माने में भी ऐसा ही फ़रमाया था। और हर जुमे को जब मस्जिद से वापस आते थे तो इस हाल में के पसीने में डूबे हुए और गुबार आलूद होते थे। अपने हाथों को बारगाहे इलाही में बुलंद कर के फ़रमाया करते थे: ख़ुदाया अगर मेरे लिए सुकूनो राहत मेरी मौत ही में है तो मेरी मौत में ताजील फ़रमा। हमेशा ग़मो रंज में मुब्तेला रहते थे। यहाँ तक के इस दुनिया से चल बसे।

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.स.) की आयु वफ़ात के समय पच्चीस साल थी। आपकी क़ब्रे मुबारक काज़मैन की बुक़्क़े में है। यानी आप अपने जद्दे बुज़ुर्गवार इमाम मूसा काज़म (अ.स.) के सरहाने दफ़्न हुए।

वर्ग-६

ज़िलहज

वाज़ेह रहे के यह महीना मोहतरम महीना है के जब यह महीना दाख़िल होता था तो सहाबा और ताबेईन के नेक लोग इबादात का बेहतरीन एहतेमाम करते थे। उसके शुरू के दस दिन वह अय्यामे मालूमात हैं जिनका ज़िक्र क़ुराने मजीद में किया गया है। और इन्तेहाई फ़ज़ीलत और बा बरकत हैं। रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से रिवायत है के किसी ज़माने में भी अमले ख़ैर व इबादत इतनी महबूब नहीं है जितनी इन दस दिनों में है। इस अशरे के मुख़्तलिफ़ आमाल हैं:

एक: शुरू के दस दिनों में रोज़ा रखना जिसका सवाब तमाम उम्र के रोज़ों के बराबर है।

दो: दो रकत नमाज़ मग़रिब और इशा के बीच हर शब अदा करना के हर रकत में सूरह हम्द के बाद एक बार सूरह तौहीद और यह आयत पढ़े:

وَوٰعَدۡنَا مُوۡسٰى ثَلٰثِيۡنَ لَيۡلَةً وَّاَتۡمَمۡنٰهَا بِعَشۡرٍ فَتَمَّ مِيۡقَاتُ رَبِّهٖۤ

और हम ने वादा लिया मूसा से तीस रातों का और उस को हम ने मुकम्मल किया दस बढ़ा कर तो उन के

اَرۡبَعِيۡنَ لَيۡلَةً ۚ وَقَالَ مُوۡسٰى لِاَخِيۡهِ هٰرُوۡنَ اخۡلُفۡنِىۡ فِىۡ قَوۡمِىۡ

परवरदेगार का मिक़ात पूरा हुआ चालीस रातों पर और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा तुम मेरी क़ौम मे

وَاَصۡلِحۡ وَلَا تَتَّبِعۡ سَبِيۡلَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۱۴۲﴾

मेरे जानशीन रहो और उन की इसलाह करो और फ़साद करने वालो की राह का इत्तेबा न करना।

ताके इंसान हाजियों के सवाब में शरीक हो जाए।

तीन: पहली तारीख़ से अरफा के अस्र तक रोज़ाना नमाज़े सुबह के बाद और मग़रिब से पहले यह दुआ पढ़े जिसको शेख़ तूसी ने इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है:

اَللّٰهُمَّ هٰذِهِ الْاَيَّامُ الَّتِىْ فَضَّلْتَهَا عَلَى الْاَيَّامِ وَ شَرَّفْتَهَا

ख़ुदाया ये वो दिन है जिन को तूने दूसरे दिनो पर फ़ज़ीलत अता की है और उनको शरफ़ दिया है और

قَدْ بَلَّغْتَنِيْهَا بِمَنِّكَ وَ رَحْمَتِكَ فَاَنْزِلْ عَلَيْنَا مِنْ بَرَكَاتِكَ

मुझको अपने एहसान और रहमत से उन तक पहुँचाया है तू हमारे ऊपर अपनी बरकतें नाज़ल फ़रमा

وَاَوْسِعْ عَلَيْنَا فِيْهَا مِنْ نَعْمَآئِكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ اَنْ

और हमारे लिए अपनी नेमतें वसी कर। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ के दुरूद नाज़ल फ़रमा

تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَهْدِيَنَا فِيْهَا لِسَبِيْلِ الْهُدٰى

मोहम्मद और आले मोहम्मद पर और हम को उन दिनो मे हिदायत, पाक़ीजगी और बे नेयाज़ी के रास्ते

وَالْعَفَافِ وَالْغِنٰى وَالْعَمَلِ فِيْهَا بِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ

की जानिब हिदायत फ़रमा, और ऐसे अमल की तरफ़ जो तू पसंद करता है और राज़ी होता है हिदायत

اَسْئَلُكَ يَا مَوْضِعَ كُلِّ شَكْوٰى وَيَا سَامِعَ كُلِّ نَجْوٰى وَيَا شَاهِدَ

कर ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ ऐ शिकायत का मर्जा। ऐ हर पोशीदा राज़ के जानने वाले और ऐ

كُلِّ مَلَاٍ وَيَا عَالِمَ كُلِّ خَفِيَّةٍ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

हर मौजूदा के गवाह। ऐ हर पोशीदा के जानने वाले तू दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

وَ اَنْ تَكْشِفَ عَنَّا فِيْهَا الْبَلَآءَ وَ تَسْتَجِيْبَ لَنَا فِيْهَا الدُّعَآءَ وَ

और हमसे उन मे बलाओं को दूर कर और हमारी दुआओं को उन मे क़ुबूल करले और हमको क़ुव्वत दे

تُقَوِّيَنَا فِيْهَا وَ تُعِيْنَنَا وَ تُوَفِّقَنَا فِيْهَا لِمَا تُحِبُّ رَبَّنَا وَ تَرْضٰى

और हमारी मदद कर और हमको ताफ़ीक दे उसकी जिस को तू चाहता है। और राज़ी होता है। मेरे ख़ुदा

وَ عَلٰى مَا افْتَرَضْتَ عَلَيْنَا مِنْ طَاعَتِكَ وَ طَاعَةِ رَسُوْلِكَ وَ

और उसकी जो तूने अपनी इताअत और अपने रसूल और औलिया की इताअत फ़र्ज़ की है। ख़ुदाया मै

اَهْلِ وِلَايَتِكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْ تُصَلِّيَ

तुझ से सवाल करता हूँ। ऐ सबसे बड़े रहम करनेवाले के दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَهَبَ لَنَا فِيْهَا الرِّضَا اِنَّكَ سَمِيْعُ

पर और हमको इन दिनो मे रज़ामंदी दे दे। तू दुआ का सुनने वाला है और हमको महरूम न कर उससे

الدُّعَآءِ وَ لَا تَحْرِمْنَا خَيْرَ مَا تُنْزِلُ فِيْهَا مِنَ السَّمَآءِ وَ طَهِّرْنَا

जो तू इन दिनो मे नाज़ल करता है आसमान से और हमको गुनाहों से पाक कर दे। ऐ ग़ैब के जानने वाले

مِنَ الذُّنُوْبِ يَا عَلَّامَ الْغُيُوْبِ وَ اَوْجِبْ لَنَا فِيْهَا دَارَ الْخُلُوْدِ

और वाज़ब कर दे हमारे लिए उन मे जन्नत को ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ لَا تَتْرُكْ لَنَا فِيْهَا ذَنْبًا

पर और उन दिनों मे हमारे गुनाहों को न छोड मगर ये के तू उनको बख़्श दे और न ग़म को मगर ये के

إِلاَّ غَفَرْتَهُ وَلاَ هَمًّا إِلاَّ فَرَّجْتَهُ وَدَيْنًا إِلاَّ قَضَيْتَهُ وَلاَ غَآئِبًا

तू उन को दूर कर दे और न क़र्ज़ को मगर ये के तू उसको अदा कर दे और न किसी ग़ाएब को मगर ये

إِلاَّ أَدَّيْتَهُ وَلاَ حَاجَةً مِنْ حَوَائِجِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ إِلاَّ سَهَّلْتَهَا

के उसको पहुँचा दे और न दुनिया और आख़िरत की हाजतों मे से किसी हाजत को मगर ये के तू उसको

وَيَسَّرْتَهَا إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اَللّٰهُمَّ يَا عَالِمَ الْخَفِيَّاتِ

आसान करदे और सहेल बना दे। बेशक तू हर चीज़ पर क़ाएद है। ख़ुदाया ऐ पोशीदा उमूर के जानने

يَا رَاحِمَ الْعَبَرَاتِ يَا مُجِيبَ الدَّعَوَاتِ يَا رَبَّ الْأَرَضِينَ وَ

वाले ऐ चश्मे गिरया पर रहम करने वाले। ऐ दुआओं को क़ुबूल करने वाले, ऐ ज़मीनो और आसमानों

السَّمٰوَاتِ يَا مَنْ لاَ تَتَشَابَهُ عَلَيْهِ الْأَصْوَاتُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

के रब। ऐ वो ख़ुदा जिस पर बन्दो की आवाज़ें मुश्तबाह नही होतीं, दुरूद नाज़ल फरमा मोहम्मद व आले

وَّآلِ مُحَمَّدٍ وَاجْعَلْنَا فِيهَا مِنْ عُتَقَآئِكَ وَطُلَقَآئِكَ مِنَ النَّارِ

मोहम्मद पर और हम को क़रार दे उन मे जहन्नम से आज़ाद लोगों और नजात पाए हुए लोगों मे और

وَالْفَآئِزِينَ بِجَنَّتِكَ وَالنَّاجِينَ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ وَ

अपनी जन्नत के साथ कामयाब होने वालों मे और अपनी रहमत के साथ नजात पाने वालों मे। ऐ सबसे

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّآلِهِ أَجْمَعِينَ۔

ज़्यादा रहम करने वाले और दुरूद हो हमारे सरदार मोहम्मद और उन की तमाम आल पर।

चार: इस अशरे के हर दिन में ये दुआएं पढ़े:
जो हज़रते जिब्रईल (अ.स.) परवरदिगार की तरफ़ से हज़रते ईसा (अ.स.) के लिए बतौर हदिया लाए थे। वह पाँच दुआएं यह हैं:

(١) اَشْهَدُ اَنْ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهٗ لاَ شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

मै गवाही देता हूँ के ख़ुदा के अलावा कोई माबूद नही है। वो एक है उनका कोई शरीक नही है उसीके लिए

الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۔ (٢) اَشْهَدُ اَنْ لاَ اِلٰهَ

बादशाहत है उसी के लिए हम्द है। उसी के क़ब्ज़े मे नकी है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। मै गवाही

اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهٗ لاَ شَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّ

देता हूँ के ख़ुदा के अलावा कोई माबूद नही है वो अकेला है। उसका कोई शरीक नही है। एक है बे नेयाज़

لاَ وَلَدًا ۔ (٣) اَشْهَدُ اَنْ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهٗ لاَ شَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا

है न उस का कोई हमसर है न फ़रज़न्द। मै गवाही देता हूँ के ख़ुदा के अलावा कोई माबूद नही है उसका

صَمَدًا لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدًا ۔ (٤) اَشْهَدُ

कोई शरीक नही है अहद है सनद है न किसी ने उसे पैदा किया और उसका किई हम सर नही मै गवाही

اَنْ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهٗ لاَ شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ

देता हूँ के ख़ुदा के अलावा कोई माबूद नही है उसका कोई शरीक नही है उसी के लिए बादशाहत है उसी

يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لاَ يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

के हमद है वो ज़िन्दा करता है और मारता है वो ऐसा ज़िन्दा है जो कभी नही मरेगा। उसी के क़ब्ज़े मे ख़ैर

قَدِيْرٌ۔ (٥) حَسْبِيَ اللّٰهُ وَ كَفٰى سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ دَعَا لَيْسَ وَرَآءَ

हे और वो हर चीज़ पर क़ादीर है। मेरे लिए ख़ुदा काफ़ी है। जिस ने उसको बुलाया उसने सुना ख़ुदा के

اللّٰهِ مُنْتَهٰى اَشْهَدُ لِلّٰهِ بِمَا دَعَا وَ اَنَّهُ بَرِيْئٌ مِّمَّنْ تَبَرَّءَ وَاَنَّ لِلّٰهِ

बाद कोई इनतेहा नही है मै ख़ुदा के लिए गवाही देता हूँ जिस की तरफ उसने बुलाया और वो बरी हे उस

اَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى۔

से जो बराएत करता है और ख़ुदा ही के लिए दुनिया व आख़ेरत है।

उसवे बाद हज़रते ईसा (अ.स.) ने इन पाँच दुआओं को सौ बार पढ़ने वाले के लिए अज़ीम तरीन सवाब नक़्ल किया है। और अगर कोई व्यक्ति उनमें से हर एक दुआ दस बार पढ़े तो वह भी क़ौले अल्लामा मजलिसी साबेक़ा रिवायत पर अमल करने वाला है और अगर सौ बार पढ़े तो ज़्यादा मुनासिब है।

पाँच: इस अशरे के हर दिन में यह तहलील पढ़े जिसको अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से अज़ीम सवाब के साथ नक़्ल किया गया है। और अगर रोज़ाना दस बार पढ़े तो और ज़्यादा बेहतर है। और वह यह है:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ اللَّيَالِيْ وَ الدُّهُوْرِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ

कोई ख़ुदा नही सिवाए अल्लाह के रातों और दिनों के अदद बराबर कोई माबूद नही सिवाए ख़ुदा के

اَمْوَاجِ الْبُحُوْرِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ رَحْمَتُهُ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ

दरयाओं की मौजा के अदद बराबर कोई माबूद नही सिवाए ख़ुदा के और उस की रहमत बेहतर है उससे

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ الشَّوْكِ وَالشَّجَرِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ

जो जमा करते हें कोई माबूद नही सिवाए अल्लाह के, काटा और दरख़्त के अदद बराबर कोई माबूद

الشَّعْرِ وَالْوَبَرِ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ عَدَدَ الْحَجَرِ وَالْمَدَرِ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ

नही सिवाए ख़ुदा के बाल और रोयों के अदद पर कोई माबूद नही सिवाए ख़ुदा के पत्थर और ढ़ेलों के

اللّٰهُ عَدَدَ لَمْحِ الْعُيُوْنِ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ فِى اللَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ

अदद बराबर कोई माबूद नही सिवाए ख़ुदा के आँखो के झपकने के अदद के बराबर। कोई माबूद नही

وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ عَدَدَ الرِّيَاحِ فِى الْبَرَارِىْ

सिवाए ख़ुदा के रात मे जब वो सो जाए और सूबह मे जब वो सांस ले। कोई माबूद नही सिवाए ख़ुदा के

وَ الصُّخُوْرِ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ مِنَ الْيَوْمِ اِلٰى يَوْمِ يُنْفَخُ فِى

बयाबानो और पत्थरों मे हवा के अदद कोई माबूद नही सिवाए ख़ुदा के आजसे उस दिन तक जब सूर

الصُّوْرِ۔

फूंका जाएगा।

पहली का दिन

इन्तेहाई मुबारक दिन है। इस दिन में चंद अम्र हैं:
एक: रोज़ा। जिसका सवाब अस्सी महीनों के रोज़ों के बराबर है।
दो: नमाज़े जनाबे फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.व.व.) अदा करना। शेख़ तूसी ने फ़रमाया है के रिवायतों में है के चार रकत नमाज़ दो सलाम के साथ नमाज़े अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की नमाज़ की तरह वारिद हुई है। उसकी हर रकत में सूरह हम्द के बाद पचास बार सूरह तौहीद और सलाम के बाद तसबीहे जनाबे फ़ातेमा ज़हरा पढ़े। उसके बाद यह ज़िक्र है:

سُبْحَانَ ذِی الْعِزِّ الشَّامِخِ الْمُنِيفِ سُبْحَانَ ذِی الْجَلَالِ الْبَاذِخِ

पाक व मुनज़्ज़ा है वो ख़ुदा जो इज़्ज़त वाला बुलंद मक़ाम वाला है। पाक है वो ख़ुदा ज़लालत

الْعَظِيمِ سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ الْفَاخِرِ الْقَدِيمِ سُبْحَانَ مَنْ يَرٰى اَثَرَ

और शिकोह बुज़ुर्ग वाला, पाक है वो ख़ुदा जो बादशाहत वाला और क़दीम फ़ख़र वाला हे। पाक

النَّمْلِ فِی الصَّفَا سُبْحَانَ مَنْ يَرٰى وَقْعَ الطَّيْرِ فِی الْهَوَاءِ سُبْحَانَ مَنْ

है वो ख़ुदा जो चूटीयों के पैर के निशान को भी देखता है पत्थर पर, पाक है वो ख़ुदा जो परिन्दे के

هُوَ هٰكَذَا لَا هٰكَذَا غَيْرُهُ

हवाओं मे उड़ने को देखता है पाक है वो जो ऐसा है और उस के अलावा कोई नही है।

तीन: ज़वाल के आधे घंटे पहले दो रकत नमाज़ अदा करे और हर रकत में सूरह हम्द के बाद आयतल कुर्सी और सूरह क़द्र दस दस बार पढ़े।
चार: अगर कोई व्यक्ति ज़ालिम का ख़ाफ़ रखता है तो आज के दिन यह पढ़े ताके परवरदिगार इसे ज़ालिमों के शर से महफ़ूज़ रखे:

حَسْبِی حَسْبِی مِنْ سُؤَالِی عِلْمُكَ بِحَالِی

मेरे लिए काफ़ी काफ़ी काफ़ी है मेरे सवाल के लिए तेरा मेरे हाल को जानना।

याद रखो यह रोज़े विलादते जनाबे इब्राहीम ख़लील है।
और रिवायत शेख़ैन के अनुसार आज के दिन जनाबे फ़ातेमा ज़हरा (अ.स.) का अक़्द अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से हुआ था।

सातवीं तारीख़

आज के दिन ११४ हिजरी में जनाबे इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) की वफ़ात मदीने में वाके हुई जो शिओं के लिए रोæजे ग़म है।

आठवीं तारीख़

रोज़े तरवीया है। आज के रोज़े की बड़ी फ़ज़ीलत है। रिवायत की बिना पर यह रोज़ा साठ साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है। शेख़ शहीद से इस दिन ग़ुस्ल को भी क़रार दिया है।

नव्वीं रात

यह रात भी बाबरकत रात है जो काज़ेउल हाजात के साथ मुनाजात और तौबा की रात है। इस शब में तौबा इस्तेग़फ़ार करना चाहिए। और अगर कोई व्यक्ति इस रात को इबादतों में गुज़ार दे तो उसे १७० साल की इबादत का सवाब मिलेगा और आज रात के चंद आमाल हैं:

एक: यह दुआ पढ़े। जिसके बारे में यह रिवायत है के अगर कोई व्यक्ति शबे अरफ़ा या शबे जुमा इस दुआ को पढ़े तो परवरदिगार उसे बख़्श देगा।

اَللّٰهُمَّ يَا شَاهِدَ كُلِّ نَجْوٰى وَ مَوْضِعَ كُلِّ شَكْوٰى وَ عَالِمَ كُلِّ

ऐ ख़ुदा, ऐ शाहिदे इस्रे पिनहाँ और मरजए शिकायते ख़लाएक और हर पोशीदा अम्र के जानने वाले

خَفِيَّةٍ وَ مُنْتَهٰى كُلِّ حَاجَةٍ يَا مُبْتَدِئًا بِالنِّعَمِ عَلَى الْعِبَادِ يَا

और तमाम हाजतों की इन्तेहा ऐ बन्दों पर नेमतों की इब्तेदा करने वाले। ऐ करीम माफ़ करने वाले

كَرِيْمَ الْعَفْوِ يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ يَا جَوَادُ يَا مَنْ لَا يُوَارِيْ مِنْهُ

ऐ अच्छे दर गुज़र करने वाले ऐ सख़ी ऐ वो ज़ात जिस से किसी चीज़ को न तारीक रात छुपा सकती

لَيْلٌ دَاجٍ وَلَا بَحْرٌ عَجَّاجٌ وَلَا سَمَآءٌ ذَاتُ اَبْرَاجٍ وَلَا ظُلَمٌ

है और न मौज दर मौजे दरया और न बुरूज और न आसमान और न ढ़ांक लेने वाली तारीकियाँ।

ذَاتُ ارْتِتَاجٍ يَا مَنِ الظُّلْمَةُ عِنْدَهٗ ضِيَآءٌ اَسْئَلُكَ بِنُوْرِ

ऐ वो ज़ात तारीकी जिस के नज़दीक रौशनी है मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरी करीम ज़ात के नूर के

وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ الَّذِيْ تَجَلَّيْتَ بِهٖ لِلْجَبَلِ فَجَعَلْتَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ

ज़रिए जिस से तूने कोहे तूर को रौशन किया था तो उससे तूने पहाड़ को हिला दिया और मूसा ग़श

مُوْسٰى صَعِقًا وَبِاسْمِكَ الَّذِيْ رَفَعْتَ بِهِ السَّمٰوٰتِ بِلَا عَمَدٍ وَ

खाकर गिर गए और तेरे उस नाम के वास्ते से जिससे तूने आसमानों को बिला सुतून बुलंद किया है

سَطَحْتَ بِهِ الْاَرْضَ عَلٰى وَجْهِ مَآءٍ جَمَدٍ وَبِاسْمِكَ الْمَخْزُوْنِ

और जिसके ज़रिए तूने ज़मीन को मुनजमिद पानी पर बिछाया है और तेरे उस नाम के ज़रिए जो

الْمَكْنُوْنِ الْمَكْتُوْبِ الطَّاهِرِ الَّذِيْ اِذَا دُعِيْتَ بِهٖ اَجَبْتَ وَ

गौहर मख़ज़ून और कमनून और राज़े मकतूब व पाक है जिसके ज़रिए जब बुलाया गया तूने क़ुबूल

اِذَا سُئِلْتَ بِهٖ اَعْطَيْتَ وَ بِاسْمِكَ السُّبُّوْحِ الْقُدُّوْسِ

किया। जिस के ज़रिए जब सवाल किया गया तूने अता किया और तेरे पाक व पाक़ीजा और दलील

الْبُرْهَانِ الَّذِيْ هُوَ نُوْرٌ عَلٰى كُلِّ نُوْرٍ وَّنُوْرٌ مِنْ نُوْرٍ يُضِيْءُ مِنْهُ

वाले नाम के ज़रिए जो तमाम अनवार का नूर है और ऐसा नूर है जिस से तमाम अनवार रौश्नी

كُلَّ نُورٍ اِذَا بَلَغَ الْاَرْضَ انْشَقَّتْ وَاِذَا بَلَغَ السَّمٰوٰتِ فُتِحَتْ وَ

हासिल करते हैं जब वो ज़मीन पर पहूँचा तो उस को शिग़ाफ़्ता किया और जब आसमान पर पहुँचा

اِذَا بَلَغَ الْعَرْشَ اهْتَزَّ وَ بِاسْمِكَ الَّذِىْ تَرْتَعِدُ مِنْهُ فَرَائِصُ

तो उसे खोल दिया और जब अर्श पर पहुँचा तो उसे हिला दिया और तेरे नाम से वासते से जिस से

مَلٰئِكَتِكَ وَ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ جَبْرَئِيْلَ وَ مِيْكَائِيْلَ وَ اِسْرَافِيْلَ وَ

मलाएका लरज़ा बर अनदाम हैं और मै तुझ से सवाल करता हूँ जिबरईल, मीकाईल और इस्राफ़ील

بِحَقِّ مُحَمَّدٍ الْمُصْطَفٰى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ عَلٰى جَمِيْعِ

के हक़ से और मोहम्मदे मुस्तफ़ा (स.अ.व.व.) के हक़ से अल्लाह का दुरूद हो उन पर और तमाम

الْاَنْبِيَآءِ وَ جَمِيْعِ الْمَلٰئِكَةِ وَ بِالْاِسْمِ الَّذِىْ مَشٰى بِهِ الْخَضِرُ

नबियों और तमाम मलाएका के ऊपर और उस नाम के वासते से जिस के ज़रिए जनाबे ख़िज़्र ने

عَلٰى قُلَلِ الْمَآءِ كَمَا مَشٰى بِهٖ عَلٰى جُدَدِ الْاَرْضِ وَ بِاسْمِكَ

दरया की मौजो पर सफ़र किया, हमवार ज़मीन पर चलने की तरह और तेरे उस नाम के वासते से

الَّذِىْ فَلَقْتَ بِهِ الْبَحْرَ لِمُوْسٰى وَ اَغْرَقْتَ فِرْعَوْنَ وَ قَوْمَهٗ وَ

जिस के ज़रिए से मूसा के लिए दरया मे रास्ता बना और फ़िरऔन मै अपनी क़ौम के ग़र्क़ हो गया

اَنْجَيْتَ بِهٖ مُوْسَى بْنَ عِمْرَانَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ

और तू ने मूसा बिन इम्रान और उन के साथियो को नजात दी और तेरे नाम के वास्ते से जिस के

فَاسْتَجَبْتَ لَهٗ وَ اَلْقَيْتَ عَلَيْهِ مَحَبَّةً مِنْكَ وَ بِاسْمِكَ الَّذِىْ بِهٖ

ज़रिए जनाबे मूसा बिन इम्रान ने तुझको तूरे ऐमन मे बुलाया तो तूने सुन लिया और उन पर अपनी

اَحْيٰى عِيْسَى بْنُ مَرْيَمَ الْمَوْتٰى وَ تَكَلَّمَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّا وَ اَبْرَءَ

तरफ़ से मोहब्बत डाल दी और तेरे उस नाम से जिसके ज़रिए जनाबे ईसा बिन मरयम ने मुरदों को

الْاَكْمَهَ وَ الْاَبْرَصَ بِاِذْنِكَ وَ بِاسْمِكَ الَّذِىْ دَعَاكَ بِهٖ حَمَلَةُ

ज़िन्दा किया और गहवारे मे बचपन मे गुफ़तुगू की और अंधे और मबरूस का इलाज किया तेरी

عَرْشِكَ وَ جَبْرَئِيْلُ وَ مِيْكَائِيْلُ وَ اِسْرَافِيْلُ وَ حَبِيْبُكَ مُحَمَّدٌ

इजाज़त से और तेरे उस नाम से जिस के ज़रिए तेरे अर्श उठाने वाले और जिब्रईल, मीकाईल और

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ مَلٰٓئِكَتُكَ الْمُقَرَّبُوْنَ وَ اَنْبِيَآؤُكَ

ईस्राफ़ील और तेरे हबीब मोहम्मद (स.अ.व.व.) तुझको बुलाते हैं और तेरे मुक़रर्ब मलाएका और

الْمُرْسَلُوْنَ وَ عِبَادُكَ الصَّالِحُوْنَ مِنْ اَهْلِ السَّمٰوٰتِ وَ

तेरे अंबिया मुरसलीन और आसमानों और ज़मीनो मे रहने वाले तेरे नेक बन्दे तुझको बुलाते हैं और

الْاَرَضِيْنَ وَ بِاسْمِكَ الَّذِىْ دَعَاكَ بِهٖ ذُو النُّوْنِ اِذْ ذَهَبَ

तेरे नाम से जिस के ज़रिए जुन्नून ने दुआ की जब वो ग़ुससे की हालत मे क़ौम से निकल गए तो गुमान

مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمَاتِ اَنْ لَا

किया के तू उस पर तंगी नही करेगा तो शिकमे माही और कहरे दरया मे पुकारा के तेरे अलावा कोई

اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ فَاسْتَجَبْتَ لَہٗ

माबूद नही है तू पाक है, मै अपने बारे मे ज़ालिम हूँ तो तूने उनकी दूआ क़ुबूल की और ग़म से उन

وَ نَجَّیْتَہٗ مِنَ الْغَمِّ وَ كَذٰلِكَ نُنْجِی الْمُؤْمِنِیْنَ وَ بِاسْمِكَ

को नजात दी और इसी तरह तू मोमिनीन को नजात देता रहता है और तेरे नाम से जिसके ज़रिए

الْعَظِیْمِ الَّذِیْ دَعَاكَ بِہٖ دَاوٗدُ وَ خَرَّ لَكَ سَاجِدًا فَغَفَرْتَ لَہٗ

जनाबे दाऊद ने तुझको पुकारा और तेरे लिए सजदा रेज़ हुए तो तूने उनकी मग़फिरत की और तेरे

ذَنْبَہٗ وَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ دَعَتْكَ بِہٖ اٰسِیَۃُ امْرَاَۃُ فِرْعَوْنَ اِذْ

नाम से जिसके ज़रिए आसिया ज़ने फ़िरऔन ने तुझको पुकारा जब उन्होनें कहा के पालने वाले मेरे

قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِیْ عِنْدَكَ بَیْتًا فِی الْجَنَّۃِ وَ نَجِّنِیْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ

लिए अपने पास एक घर जन्नत मे बना दे और मुझको फ़िरऔन और उसके अमल से नजात देदे

عَمَلِہٖ وَ نَجِّنِیْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ فَاسْتَجَبْتَ لَھَا دُعَآءَھَا وَ

और मुझको ज़ालिम लोगों से नजात अता करदे। तो तूने उनकी दुआ को क़ुबूल किया और तेरे नाम

بِاسْمِكَ الَّذِیْ دَعَاكَ بِہٖ اَیُّوْبُ اِذْ حَلَّ بِہِ الْبَلَآءُ فَعَافَیْتَہٗ وَ

के साथ जिसके ज़रिए जनाबे अय्युब ने दुआ की जब वो बला मे मुब्तेला हुए तो तूने उन को

اٰتَیْتَہٗ اَھْلَہٗ وَ مِثْلَھُمْ مَعَھُمْ رَحْمَۃً مِّنْ عِنْدِكَ وَ ذِكْرٰی

आफ़ियत अता की और तूने उनको और उनके अहल को दो चन्द कर के अपने पास से रहमत दी

لِلْعَابِدِيْنَ وَ بِاسْمِكَ الَّذِيْ دَعَاكَ بِهٖ يَعْقُوْبُ فَرَدَدْتَ عَلَيْهِ

और इबादत करने वालों के लिए यादगार बना दिया और तेरे नाम से जिसके ज़रिए जनाबे याक़ूब ने

بَصَرَهٗ وَ قُرَّةَ عَيْنِهٖ يُوْسُفَ وَ جَمَعْتَ شَمْلَهٗ وَ بِاسْمِكَ الَّذِيْ

तुझसे दुआ की तो तूने उन की बसारत वापस की और उन की आखों की ठंडक यूसुफ़ से मिला दिया

دَعَاكَ بِهٖ سُلَيْمَانُ فَوَهَبْتَ لَهٗ مُلْكًا لَّا يَنْبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ

और उनकी परेशानी को दूर कर दिया और तेरे नाम से जिसके ज़रिए जनाबे सुलैमान ने तुझको

اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ وَ بِاسْمِكَ الَّذِيْ سَخَّرْتَ بِهِ الْبُرَاقَ لِمُحَمَّدٍ

पुकारा तो तूने उन को बादशाहत अता की जो उन के बाद किसी के लिए न हुई। बेशक तू बेहतरीन

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ سَلَّمَ اِذْ قَالَ تَعَالٰى سُبْحَانَ الَّذِيْ

अता करने वाला है और तेरे नाम से जिसके ज़रिए तूने मोहम्मद के लिए बुराक़ को मुसख़्ख़र किया

اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ

जब ख़ुदा वन्दे आलम ने इरशाद फ़रमाया पाक है वो ख़ुदा जो रातो रात अपने बन्दे को ले गया

الْاَقْصٰى وَ قَوْلُهٗ سُبْحَانَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَ مَا كُنَّا لَهٗ

मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक और ख़ुदा वन्दे आलम का क़ौले पाक है वो ख़ुदा जिसने हमारे

مُقْرِنِيْنَ وَ اِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ وَ بِاسْمِكَ الَّذِيْ تَنَزَّلَ بِهٖ

लिए उस को मसख्खर किया वरना हम उसपर कभी मुसल्लत न हो पाते और हम सब के सब ख़ुदा

جَبْرَئِيْلُ عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ بِاسْمِكَ الَّذِىْ

की जानिब लौटने वाले हैं और तेरे नाम से जिस के ज़रिए जिब्रईले अमीन मोहम्मद व आले मोहम्मद

دَعَاكَ بِهٖ اٰدَمُ فَغَفَرْتَ لَهٗ ذَنْبَهٗ وَ اَسْكَنْتَهٗ جَنَّتَكَ وَ اَسْئَلُكَ

पर नाज़ल हुए और तेरे नाम से जिस के ज़रिए जनाबे आदम (अ.स.) ने दुआ की थी तो तूने उनके

بِحَقِّ الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَ بِحَقِّ

तर्के ऊला को माफ़ किया और अपनी जन्नत मे उनको साकिन किया और मै तुझसे सवाल करता

اِبْرَاهِيْمَ وَ بِحَقِّ فَصْلِكَ يَوْمَ الْقَضَآءِ وَ بِحَقِّ الْمَوَازِيْنِ اِذَا

हूँ क़ुरआने अज़ीम के हक के वासते से और ख़ातिमुल अंबिया मोहम्मद के हक़ के वासते से और

نُصِبَتْ وَ الصُّحُفِ اِذَا نُشِرَتْ وَ بِحَقِّ الْقَلَمِ وَ مَا جَرٰى وَ

जनाबे इब्राहीम के हक़ के वास्ते से और राज़े क़यामत तेरे फ़ैसले के वास्ते से और मीज़ान के हक़

اللَّوْحِ وَ مَا اَحْصٰى وَ بِحَقِّ الْاِسْمِ الَّذِىْ كَتَبْتَهٗ عَلٰى سُرَادِقِ

के वास्ते से जब वो नसब की जाए और सहीफ़ों के वास्ते से जब वो नश्र किए जाएं और क़लम के

الْعَرْشِ قَبْلَ خَلْقِكَ الْخَلْقَ وَ الدُّنْيَا وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ

हक़ के वास्ते से और जो उससे जारी हुआ हो और लौह के वास्ते से जिसका एहसा न जाए और उस

بِاَلْفَىْ عَامٍ وَ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَنَّ

नाम के हक़ के वास्ते से जिसको तूने अर्श के पर्दाए नूरानी पर लिख दिया, मख़लूक़, सूरज, चाँद के

مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ وَ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الْمَخْزُوْنِ فِيْ

पैदा करने से दो हज़ार साल क़ब्ल और मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नही है वो

خَزَائِنِكَ الَّذِيْ اسْتَأْثَرْتَ بِهٖ فِيْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ لَمْ

एक है ला शरीक है और मोहम्मद उस के बन्दे और रसूल हैं और मै सवाल करता हूँ तेरे नाम से जो

يَظْهَرْ عَلَيْهِ اَحَدٌ مِنْ خَلْقِكَ لَا مَلَكٌ مُّقَرَّبٌ وَّلَا نَبِيٌّ مُرْسَلٌ

तेरे ख़ज़ाने मे मख़ज़ून है जिस को तूने अपने इल्मे ग़ैब मे मख़सूस किया है जिससे कोई वाक़िफ़ नही

وَّلَا عَبْدٌ مُصْطَفًى وَ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِيْ شَقَقْتَ بِهِ الْبِحَارَ

है न मख़लूक़ मे से कोई न मलके मुक़र्रब और न नबीए मुरसल और न कोई मुंतिख़ब बन्दा और मै

وَ قَامَتْ بِهِ الْجِبَالُ وَ اخْتَلَفَ بِهِ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ وَ بِحَقِّ

सवाल करता हूँ तुझ से तेरे नाम से जिस के ज़रिए तूने दरयाओं को शिगाफ़्ता किया और जिसके

السَّبْعِ الْمَثَانِيْ وَ الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَقِّ الْكِرَامِ الْكَاتِبِيْنَ

ज़रिए पहाड़ों को क़ाएम किया और रात दिन को तबदील किया और सबा मसानी और क़ुरआने

وَبِحَقِّ طٰهٰ وَ يٰسٓ وَ كٓهٰيٰعٓصٓ وَ حٰمٓ عٓسٓقٓ وَ بِحَقِّ تَوْرٰيةِ مُوْسٰى وَ

अज़ीम के हक़ के वास्ते से और आमाल के लिखने वाले मुकरर्म फ़रिशता के हक़ के वास्ते से और

اِنْجِيْلِ عِيْسٰى وَ زَبُوْرِ دَاوٗدَ وَ فُرْقَانِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ

ताहा, यासीन और काफ-ये-ऐन-स्वाद और हा-मी-ऐन-सीन काफ़ के वास्ते से और मूसा की तौरेत,

اٰلِهٖ وَ عَلٰى جَمِيْعِ الرُّسُلِ وَ بَاهِيَا شَرَاهِيَا اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ

ईसा की इंजील और दाऊद की ज़ुबूर और मोहम्मद के क़ुरआन के हक़ के वास्ते से सलवाते ख़ुदा

بِحَقِّ تِلْكَ الْمُنَاجَاتِ الَّتِىْ كَانَتْ بَيْنَكَ وَ بَيْنَ مُوْسَى بْنِ

हो उन पर और उनकी आल पर और तमाम रसूलों पर और अहया व शराहीया के हक़ के वास्ते से

عِمْرَانَ فَوْقَ جَبَلِ طُوْرِ سَيْنَاءَ وَ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِىْ

(अली, फ़ातेमा, हसन व हुसैन) ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ उन मुनाजातों के वासते से जो तेरे

عَلَّمْتَهٗ مَلَكَ الْمَوْتِ لِقَبْضِ الْاَرْوَاحِ وَ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ

और जनाब मूसा के दरमियान तूरे सिना के पहाड़ों पर हुईं और मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरे नाम के

الَّذِىْ كُتِبَ عَلٰى وَرَقِ الزَّيْتُوْنِ فَخَضَعَتِ النِّيْرَانُ لِتِلْكَ

साथ जिसको तूने मलकुल मौत को क़ब्ज़े अरवाह के लिए तालीम किया है और मै तुझसे सवाल

الْوَرَقَةِ فَقُلْتَ يَا نَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّ سَلَامًا وَ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ

करता हूँ तेरे नाम के साथ जो ज़ैतून के पत्ते पर लिखा गया तो आग उस पत्ते के लिए ख़ुज़ू व ख़ुशू के

الَّذِىْ كَتَبْتَهٗ عَلٰى سُرَادِقِ الْمَجْدِ وَ الْكَرَامَةِ يَا مَنْ لَا يُحْفِيْهِ

आलम मे हो गई पस तूने कहा ऐ आग ठंडी और सलामती बन जा और मै सवाल करता हूँ तेरे नाम

سَآئِلٌ وَ لَا يَنْقُصُهٗ نَآئِلٌ يَا مَنْ بِهٖ يُسْتَغَاثُ وَ اِلَيْهِ يُلْجَاءُ

के साथ जिसको तूने मजदो करामत के नूरानी हिजाब पर लिखा है ऐ वो ज़ात जिसको सवाल करने

اَسْئَلُكَ بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِكَ وَ مُنْتَهَى الرَّحْمَةِ مِنْ

वाला मलाल नही करता और अता बख़शिश को कम नही करती है। ऐ वो ज़ात जिससे इसतेग़ासाह

كِتَابِكَ وَ بِاسْمِكَ الْاَعْظَمِ وَ جَدِّكَ الْاَعْلٰى وَ كَلِمَاتِكَ

किया जाता है और जिस की तरफ़ पनाह ली जाती है। मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरे अर्श की इज़्ज़त

التَّامَّاتِ الْعُلٰى اَللّٰهُمَّ رَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَتْ وَالسَّمَآءِ وَمَا

के मक़ाम के वास्ते से और तेरी किताब की इन्तेहाए रहमत के वास्ते से और तेरे अज़ीम नाम के

اَظَلَّتْ وَ الْاَرْضِ وَ مَا اَقَلَّتْ وَ الشَّيَاطِيْنِ وَ مَا اَضَلَّتْ وَ

ज़रिए और तेरी बुलंद अज़मत के वास्ते से और तेरे बुलंद मुकम्मल कलेमात के वास्ते से ख़ुदाया

الْبِحَارِ وَ مَا جَرَتْ وَ بِحَقِّ كُلِّ حَقٍّ هُوَ عَلَيْكَ حَقٌّ وَ بِحَقِّ

हवाओं के परवरदिगार और जो कुछ हरकत करता है उस के परवरदिगार और आसमानों और

الْمَلٰئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ الرَّوْحَانِيِّيْنَ وَ الْكَرُّوْبِيِّيْنَ وَ

जिसपर उसने साया किया है उसके परवरदिगार और ज़मीन और जो उसमे है उसके परवरदिगार ऐ

الْمُسَبِّحِيْنَ لَكَ بِاللَّيْلِ وَ النَّهَارِ لَا يَفْتُرُوْنَ وَبِحَقِّ اِبْرَاهِيْمَ

शैतानों और जिन को गुमराह किया है उसके परवरदिगार और दरयाओं और जो उसमे जारी है

خَلِيْلِكَ وَ بِحَقِّ كُلِّ وَلِيٍّ يُّنَادِيْكَ بَيْنَ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةِ وَ

उसके परवरदिगार और हर हक़ के वास्ते से जो तेरे ऊपर हक़ है और मुक़रर्ब मलाएका और रूहानी

تَسْتَجِيْبُ لَهٗ دُعَآئَهٗ يَا مُجِيْبُ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ هٰذِهِ الْاَسْمَآءِ وَ

करूबीन के हक़ के वास्ते से और रात दिन न थक कर तेरे तसबीह करने वालों के हक़ के वास्ते से

بِهٰذِهِ الدَّعْوَاتِ اَنْ تَغْفِرَ لَنَا مَا قَدَّمْنَا وَ مَا اَخَّرْنَا وَ مَا

और तेरे ख़लील इब्राहीम के हक़ के वासते से और तेरे तमाम वलियों के वास्ते से जो तुझको पुकारते

اَسْرَرْنَا وَمَا اَعْلَنَّا وَمَا اَبْدَيْنَا وَمَا اَخْفَيْنَا وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ

हैं सफ़ा व मरवा के दरमियान और तू उनकी दुआ को क़ुबूल करता है। ऐ दुआ क़ुबूल करने वाले

بِهٖ مِنَّا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا

मै तुझसे उन नामो के ज़रिए और उन दुआओं के ज़रिए सवाल करता हूँ के तू मेरे गूज़श्ता और

حَافِظَ كُلِّ غَرِيْبٍ يَا مُوْنِسَ كُلِّ وَحِيْدٍ يَا قُوَّةَ كُلِّ ضَعِيْفٍ يَا

आईंदा गुनाहों को, पोशीदा और ज़ाहिर और वज़ेह और मख़फ़ी गुनाहों को बख़्श दे और जिस का

نَاصِرَ كُلِّ مَظْلُوْمٍ يَا رَازِقَ كُلِّ مَحْرُوْمٍ يَا مُوْنِسَ كُلِّ

तू मुझसे ज़्यादा इल्म वाला है उसको बख़्श दे, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है अपनी रहमत के ज़रिए

مُسْتَوْحِشٍ يَا صَاحِبَ كُلِّ مُسَافِرٍ يَا عِمَادَ كُلِّ حَاضِرٍ يَا غَافِرَ

ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले हर ग़रिब के निग्हेदार, ऐ हर तन्हा के मोनिस, ऐ हर कमज़ोर की

كُلِّ ذَنْبٍ وَّ خَطِيْئَةٍ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ يَا صَرِيْخَ

क़ूव्वत, ऐ हर मज़लूम के मददगार ऐ हर महरूम के राज़क, ऐ हर वहशत ज़दा के मोनीस, ऐ हर

الْمُسْتَصْرِخِيْنَ يَا كَاشِفَ كَرْبِ الْمَكْرُوْبِيْنَ يَا فَارِجَ هَمِّ

मुसाफ़र के दोस्त, ऐ हर हाज़र के निगेहबान, ऐ हर गुन्हा और ग़ल्ती के बख़्शने वाले, ऐ फ़र्याद करने

الْمَهْمُوْمِيْنَ يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرَضِيْنَ يَا مُنْتَهٰى غَايَةِ

वालों के फ़र्याद रस, ऐ नाला करने वालों के दादे रस, ऐ ग़मज़दों के ग़म को दूर करने वाले, ऐ

الطَّالِبِيْنَ يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا رَبَّ

ग़मनाक दिलों को निशात बख़्शने वाले, ऐ आसमानो और ज़मीनो के पैदा करने वाले, ऐ तलबगारों

الْعَالَمِيْنَ يَا دَيَّانَ يَوْمِ الدِّيْنِ يَا اَجْوَدَ الْاَجْوَدِيْنَ يَا اَكْرَمَ

के इन्तेहाए मक़सद, ऐ परेशान हाल लोगों की दुआओं के क़ुबूल करने वाले, ऐ सब से बड़े रहम

الْاَكْرَمِيْنَ يَا اَسْمَعَ السَّامِعِيْنَ يَا اَبْصَرَ النَّاظِرِيْنَ يَا اَقْدَرَ

करने वाले, ऐ आलमीन के परवरदिगार ऐ रोज़े जज़ा के हाकीम ऐ सख़ीयों मे सबसे बड़े सख़ी और

الْقَادِرِيْنَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوْبَ الَّتِيْ تُغَيِّرُ النِّعَمَ وَ اغْفِرْ لِيَ

करीमो मे सबसे बड़े करीम ऐ सुनने वालों मे सबसे बड़े सुनने वाले ऐ देखनेवाला मे सबसे ज़्यादा

الذُّنُوْبَ الَّتِيْ تُوْرِثُ النَّدَمَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوْبَ الَّتِيْ تُوْرِثُ

देखनेवाले, ऐ क़ादिरों मे सबसे ज़्यादा क़ुदरतवाले मेरे उन गुनाहों को बख़्श दे जो नेमतों को बदल

السَّقَمَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوْبَ الَّتِيْ تَهْتِكُ الْعِصَمَ وَ اغْفِرْ لِيَ

देते हैं मेरे उन गूनाहा को बख़्श दे जो शर्मिंदगी लाते हैं मेरे उन गूनाहों को बख़्श दे जो बीमारी का

الذُّنُوبَ الَّتِي تَرُدُّ الدُّعَآءَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تَحْبِسُ

सबब बनते हैं मेरे उन गूनाहों को बख़्श दे जो परदए तहफ़्फ़ुज़ को चाक करते हैं और मेरे उन गूनाहों

قَطْرَ السَّمَآءِ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تُعَجِّلُ الْفَنَآءَ وَ اغْفِرْ لِيَ

को बख़्श दे जो दुआ को वापस कर देते हैं मेरे उन गूनाहों को बख़्श दे जो आसमान से बारिश को

الذُّنُوبَ الَّتِي تَجْلِبُ الشَّقَآءَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تُظْلِمُ

रोक देते हैं, मेरे उन गूनाहों को बख़्श दे जो मौत को जल्दी लाते और उम्र को कम करते हैं, मेरे उन

الْهَوَآءَ وَ اغْفِرْ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تَكْشِفُ الْغِطَآءَ وَ اغْفِرْ لِيَ

गूनाहों को बख़्श दे जो मौजिबे शक़ावत होते हैं और मेरे उन गूनाहों को बख़्श दे जो हवा को तीरा व

الذُّنُوبَ الَّتِي لَا يَغْفِرُهَا غَيْرُكَ يَا اَللّٰهُ وَ احْمِلْ عَنِّي كُلَّ تَبِعَةٍ

तार करते हैं और मेरे उन गूनाहों को बख़्श दे जो परदा को उठा देते हैं और मेरे उन गूनाहों को बख़्श

لِأَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ وَ اجْعَلْ لِي مِنْ اَمْرِي فَرَجًا وَ مَخْرَجًا وَّ يُسْرًا

दे जिनको तेरे अलावा ऐ ख़ुदा कोई नही बख़्श सकता है और हर मख़लूक़ का बार मेरी गरदन से

وَ اَنْزِلْ يَقِينَكَ فِي صَدْرِي وَ رَجَآئَكَ فِي قَلْبِي حَتّٰى لَا اَرْجُوَ

उतार दे और मेरे लिए मेरे अम्र मे कुशादगी, आसानी और आसाईश क़रार दे और मेरे दिल मे

غَيْرَكَ اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِي وَ عَافِنِي فِي مَقَامِي وَ اصْحَبْنِي فِي لَيْلِي وَ

यक़ीन नाज़िल कर और मेरे क़ल्ब मे अपनी उम्मीद नाज़ल कर ताकि मै तेरे अलावा किसी से

نَهَارِي وَمِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي وَ

उम्मीद न लगाऊँ। ख़ुदाया मुझको महफ़ूज़ रख और मेरे मक़ाम मे मुझको आफ़ियत दे और मेरी रात

مِنْ فَوْقِي وَمِنْ تَحْتِي وَيَسِّرْ لِيَ السَّبِيلَ وَأَحْسِنْ لِيَ التَّيْسِيرَ وَ

और दिन मे मेरे सामने और पसे पुश्त दाहिने और बाए और ऊपर और नीचे मेरे साथ हो जा। और

لَا تَخْذُلْنِي فِي الْعَسِيرِ وَاهْدِنِي يَا خَيْرَ دَلِيلٍ وَلَا تَكِلْنِي إِلَى

मेरी लिए राहे आख़िरत आसान करदे और सआदत को मेरे लिए आसान कर और आसानी मे ख़ूबी

نَفْسِي فِي الْأُمُورِ وَلَقِّنِّي كُلَّ سُرُورٍ وَاقْلِبْنِي إِلَى أَهْلِي بِالْفَلَاحِ

पैदा कर और मुझको मुश्किल मे नज़र अंदाज़ न कर और मेरी हिदायत कर, ऐ बेहतरीन रहनुमा

وَالنَّجَاحِ مَحْبُورًا فِي الْعَاجِلِ وَالْآجِلِ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

और मुझको मेरे उमूर मे मुझपर न छोड और मुझको हर खुशी की तलक़ीन कर और मुझको पल्टा

قَدِيرٌ وَارْزُقْنِي مِنْ فَضْلِكَ وَأَوْسِعْ عَلَيَّ مِنْ طَيِّبَاتِ رِزْقِكَ وَ

दे मेरे अहल की जानिब कामयाबी, नजात व जदो सुरूर के आलम मे दुनिया और आख़िरत मे,

اسْتَعْمِلْنِي فِي طَاعَتِكَ وَأَجِرْنِي مِنْ عَذَابِكَ وَنَارِكَ وَاقْلِبْنِي

बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है और मुझको अपने फ़ज़्ल का रिज़्क़ दे और मेरे ऊपर अपने पाक़ीज़ा

إِذَا تَوَفَّيْتَنِي إِلَى جَنَّتِكَ بِرَحْمَتِكَ اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ

रिज़्क़ को वसी कर और मुझको अपनी इताअत मे मशग़ूल रख और मुझको अपने अज़ाब से बचा

زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَمِنْ تَحْوِيْلِ عَافِيَتِكَ وَمِنْ حُلُوْلِ نَقِمَتِكَ وَ

ले और जहन्नम से और जब मै मर जाउं तो मुझको अपनी जन्नत मे लौटा अपनी रहमत से ख़ुदाया मै

مِنْ نُزُوْلِ عَذَابِكَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَآءِ وَدَرَكِ الشَّقَآءِ

तेरी पनाह चाहता हूँ तेरी नेमत के ज़ाएल होने से और तेरी आफ़ियत के तबदील होने से और बला

وَمِنْ سُوْٓءِ الْقَضَآءِ وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَآءِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ

के आने से और अज़ाब के नाज़ल होने से और मै तेरी पनाह चाहता हूँ बला की सख़्ती और

السَّمَآءِ وَمِنْ شَرِّ مَا فِى الْكِتَابِ الْمُنْزَلِ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْنِىْ

बदबख़्ती के पाने और बड़े फ़ैसले और दुश्मनो की शमातत और उन चीज़ की बुराई से जो आसमान

مِنَ الْاَشْرَارِ وَ لَا مِنْ اَصْحَابِ النَّارِ وَ لَا تَحْرِمْنِىْ صُحْبَةَ

से नाज़ल होती हैं और उन तमाम बुराईयों से जो नाज़ल शुदा किताब मे हैं। ख़ुदाया मुझको बुरे लोगों

الْاَخْيَارِ وَاَحْيِنِىْ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَتَوَفَّنِىْ وَفَاةً طَيِّبَةً تُلْحِقُنِىْ

मे न क़रार दे और न जहन्नम वालो मे और मुझको नेक लोगों की सोबत से महरूम न कर और

بِالْاَبْرَارِ وَ ارْزُقْنِىْ مُرَافَقَةَ الْاَنْبِيَآءِ فِىْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ

मुझको पाकीज़ा ज़िन्दगी अता कर और मुझे बेहतरीन मौत दे जो मुझको नेक लोगों से मूलहक़ करे

مَلِيْكٍ مُقْتَدِرٍ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى حُسْنِ بَلَآئِكَ وَصُنْعِكَ

और मुझको अम्बिया की रिफ़ाक़त सच्चाई के मक़ाम मे इक़्तेदा वाले बादशाह के दरबार मे अता

وَ لَكَ الْحَمْدُ عَلَى الْإِسْلَامِ وَ اتِّبَاعِ السُّنَّةِ يَا رَبِّ كَمَا

कर। ख़ुदाया तेरे ही लिए हम्द है तेरे हुस्ने इम्तेहान और हुस्ने सुलूक़ पर और तेरी ही हम्द है इसलाम

هَدَيْتَهُمْ لِدِيْنِكَ وَ عَلَّمْتَهُمْ كِتَابَكَ فَاهْدِنَا وَ عَلِّمْنَا وَ لَكَ

और सून्नत के इत्तेबा पार ऐ परवरदिगार जिस तरह तूने उन की हिदायत की अपने दीन के लिए और

الْحَمْدُ عَلٰى حُسْنِ بَلَآئِكَ وَ صُنْعِكَ عِنْدِىْ خَاصَّةً كَمَا

उनको अपनी किताब की तालीम दी हमारी भी हिदायत कर और हमको तालीम दे और तेरे लिए

خَلَقْتَنِىْ فَاَحْسَنْتَ خَلْقِىْ وَ عَلَّمْتَنِىْ فَاَحْسَنْتَ تَعْلِيْمِىْ وَ

हम्द है तेरे हूस्ने इम्तेहान और हस्ने सुलूक़ पर मेरे नज़दीक़ ख़ास तौर पर जैसा के तूने मुझको पैदा

هَدَيْتَنِىْ فَاَحْسَنْتَ هِدَايَتِىْ فَلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى اِنْعَامِكَ عَلَىَّ

किया तूने मुझे बेहतरीन मख़लूक़ बनाया और तूने मुझको तालीम दी और तूने बहतरीन हिदायत की

قَدِيْمًا وَّ حَدِيْثًا فَكَمْ مِنْ كَرْبٍ يَا سَيِّدِىْ قَدْ فَرَّجْتَهٗ وَ كَمْ

तो तेरे ही लिए हम्द है मेरे ऊपर तेरे क़दीम व जदी इनाम पर कितने ही ग़म व अलम को तूने ऐ

مِنْ غَمٍّ يَا سَيِّدِىْ قَدْ نَفَّسْتَهٗ وَ كَمْ مِنْ هَمٍّ يَا سَيِّدِىْ قَدْ

परवरदिगार मुझसे दूर किया और कितने ही ग़म को ऐ मालिक तूने ज़ाएल किया और कितनी ही

كَشَفْتَهٗ وَ كَمْ مِّنْ بَلَآءٍ يَا سَيِّدِىْ قَدْ صَرَفْتَهٗ وَ كَمْ مِنْ

तकलीफ़ को ऐ मेरे सरदार तूने ख़त्म किया और कितनी ही बलाओं को ऐ सरदार तूने बरतरफ़ किया

عَيْبٍ يَا سَيِّدِيْ قَدْ سَتَرْتَهٗ فَلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ حَالٍ فِيْ كُلِّ

और कितने ही ऐब को ऐ सरदार तूने छिपा लिया तो तेरी हम्द है हर हाल मे हर मक़ाम और हर

مَثْوًى وَّ زَمَانٍ وَ مُنْقَلَبٍ وَّ مَقَامٍ وَ عَلٰى هٰذِهِ الْحَالِ وَ كُلِّ

ज़माना मे सफ़र और हज़र मे इस हाम मे और हर हाल मे ख़ुदाया मुझको क़रार दे अपनी बन्दां मे

حَالٍ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنْ اَفْضَلِ عِبَادِكَ نَصِيْبًا فِيْ هٰذَا

सबसे बेहतर नसीब के लेहाज़ से उस ख़ैर मे जिसको तू तक़सीम करेगा या नुक़सान जिसको तू दूर

الْيَوْمِ مِنْ خَيْرٍ تَقْسِمُهٗ اَوْ ضُرٍّ تَكْشِفُهٗ اَوْ سُوْءٍ تَصْرِفُهٗ اَوْ

करेगा या बुराई जिसको तू बरतरफ़ करेगा और बला जिसको तू दफ़ा करेगा या नेकी जिसको तू भेज

بَلَاءٍ تَدْفَعُهٗ اَوْ خَيْرٍ تَسُوْقُهٗ اَوْ رَحْمَةٍ تَنْشُرُهَا اَوْ عَافِيَةٍ

देगा या रहमत जिसको तू फ़ैलाएगा या आफ़ियत जिसको तू पिन्हाएगा , बेशक तू हर चीज़ पर

تُلْبِسُهَا فَاِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَ بِيَدِكَ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ

क़ादिर है और तेरे ही क़ब्ज़े मे आसमानो और ज़मीन का ख़ज़ाना है और तू एक ही करीम है अता

وَ الْاَرْضِ وَ اَنْتَ الْوَاحِدُ الْكَرِيْمُ الْمُعْطِي الَّذِيْ لَا يُرَدُّ

करने वाला है जिससे सवाल करने वाला वापस नही लौटाया जाता है और जिससे उम्मीद लगाने

سَائِلُهٗ وَلَا يُخَيَّبُ اٰمِلُهٗ وَلَا يَنْقُصُ نَائِلُهٗ وَلَا يَنْفَدُ مَا عِنْدَهٗ

वाला घाटा नही उठाता है और जिसकी अता कम नही होती है और जो उसके पास है कम नही होता

بَلْ يَزْدَادُ كَثْرَةً وَّ طِيْبًا وَّ عَطَآءً وَّ جُوْدًا وَ ارْزُقْنِيْ مِنْ خَزَآئِنِكَ

है बल्के कस्रत और पाकीज़गी और अता व जूद मे ज़्यादती होती है और मुझको अपने ख़ज़ाने से

الَّتِيْ لَا تَفْنٰى وَ مِنْ رَحْمَتِكَ الْوَاسِعَةِ اِنَّ عَطَآئَكَ لَمْ يَكُنْ

रिज़्क दे जो फ़ना न होता हो और अपनी वसीह रहमत से बेशक तेरी अता रोकी नही जा सकती है

مَّحْظُوْرًا وَ اَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

और तू हर चीज़ पर क़ादिर है अपनी रहमत से ऐ सब से बड़े रहम करने वाले

दो: कफ़अमी के अनुसार इन दस तस्बीहात को एक हज़ार बार पढ़े जिनहें सय्यद ने नक़्ल किया है। और जो आमाल रोज़े अरफ़ा में बयान किए जाएंगे।
तीन: यह दुआ पढ़े जो अरफ़ा के दिन के लिए वारिद हुई है:
शबो रोज़े जुमा भी रिवायत है।
और यह दुआ आमाले शबे जुमा में गुज़र चुकी है:
चार: इमाम हुसन (अ.स.) की ज़ियारत पढ़े करबला जाए, और वहाँ रोज़े ईद तक मुक़ीम रहे। ताके उस साल के शर से महफ़ूज़ रहे।

अरफ़ा का दिन

अज़ीम ईदों में है अगरचे उसे ईद के नाम से नहीं याद किया गया है। लेकिन यह वह दिन है जिसमें परवरदिगार ने अपने बंदो को इताअत और इबादत की दावत दी है। और जूदो एहसान के दस्तरख़्वान उनके लिए बिछा दिए हैं। शैतान उस दिन ज़लीलो हक़ीर और रांदे दरगाह हो जाता है। रिवायत है के हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) ने अरफ़ा के दिन एक भिखारी की आवाज़ सुनी जो लोगों से भीख मांग रहा था। तो फ़रमाया के वाय हो तुझ पर के आज के रोज़ भी ग़ैरे ख़ुदा से माँग रहा है? जबके आज इस बात की उम्मीद की जाती है के शिकमें मादर के बच्चे के लिए भी फ़ज़्ले ख़ुदा शामिल हो जाए। और वह सईद हो जाए। उस दिन चंद आमाल यह हैं:

एक: गुस्ल करना।
दो: ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) का पढ़ना जो हज़ार हज, हज़ार उमरा और हज़ार जेहाद के मुक़ाबले में है। बल्के उससे भी बुलंदतर है। और आपकी ज़ियारत की फ़ज़ीलत में कसरत से तवातुर के साथ हदीसें वारिद हुई हैं। और अगर किसी को ताफ़ीक हासिल हो जाए के आज के दिन इमाम (अ.स.) के रौज़े में क़ुब्बे के नीचे रहे तो उसका सवाब इससे कम नहीं है जो अरफ़ात में रहे बलके ज़्यादा और मुक़द्दम है। इस ज़ियारत की कैफ़ियत ज़्यारात के बाब में इन्शाअल्लाह नक़्ल की जाएगी।
तीन: नमाज़े अस्र के बाद दुआ-ए-अरफ़ा पढ़ने में व्यस्त होने से पहले आसमान के नीचे दो रकत नमाज़ पढ़े और ख़ुदा की बारगाह में अपने गुनाहों का इक़रार करे ताके अरफ़ात का सवाब हासिल कर सके और गुनाह बख़्शे जा सकें। फिर आमाल और दुआ अरफ़ा में व्यस्त हो जो अइम्मा मासूमीन (अ.स.) से मरवी हैं। और वह इस्से ज़्यादा हैं के इस मुख़तसर किताब में ज़िक्र की जाएं। हम गुंजाइश भर इस किताब में ज़िक्र कर रहे हैं।
शेख़ कफ़अमी ने मिसबाह में फ़रमाया है के अरफ़ा के दिन रोज़ा रखना उस व्यक्ति के लिए मुसत्हब है जिसके वास्ते रोज़ा रखना दुआ के पढ़ने में कमज़ोरी पैदा न करे। और मुस्तहब है के ज़वाल से क़ब्ल गुस्ल करे और ज़ियारते इमामे हुसैन (अ.स.) शबो रोज़ अरफ़ा पढ़े और जब ज़वाल का समय हो तो आसमान के नीचे नमाज़े ज़ोहर अस्र को बेहतरीन रूकू और सजदे के साथ अदा करे और फ़ारिग़ होने के बाद दो रकत नमाज़ पढ़े जिसमे पहली रकत में सूरह हम्द के बाद सूरह तौहीद और दूसरी रकत में हम्द के बाद सूरह काफ़ेरून पढ़े। फिर उसके बाद चार रकत नमाज़ पढ़े। हर रकत में हम्द के बाद पचास बार सूरह तौहीद पढ़े।
लेखक के अनुसार यह नमाज़ वही नमाज़े अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) है जो आमाले जुमा में गुज़र चुकी है।
उसके बाद वह तसबीह पढ़े जो रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) से मरवी है और जिसको सय्यद बिन ताऊस ने इक़बाल में लिखा है।

سُبْحَانَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ عَرْشُهُ سُبْحَانَ الَّذِيْ فِي الْاَرْضِ حُكْمُهُ

पाक व मुनज़्ज़ा है वो ख़ुदा जिसका अर्श आसमान मे है पाक है वो ख़ुदा जिसका हुक्म ज़मीन

سُبْحَانَ الَّذِيْ فِي الْقُبُوْرِ قَضَاؤُهُ سُبْحَانَ الَّذِيْ فِي الْبَحْرِ سَبِيْلُهُ

मे जारी है। पाक है वो ख़ुदा जिसका फ़ैसला क़बरों मे नाफ़ज है। पाक है वो ख़ुदा दरया मे जिस

سُبْحَانَ الَّذِيْ فِي النَّارِ سُلْطَانُهُ سُبْحَانَ الَّذِيْ فِي الْجَنَّةِ رَحْمَتُهُ

का रास्ता है। पाक है वो ख़ुदा दोज़ख़ मे जिसकी बादशाहत है वो ख़ुदा जन्नत मे जिसकी रहमत

سُبْحَانَ الَّذِيْ فِي الْقِيَامَةِ عَدْلُهُ سُبْحَانَ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمَآءَ

है। पाक है वो ख़ुदा क़यामत मे जिसका अदल है। पाक है वो ख़ुदा जिसने आसमान को बुलंद

سُبْحَانَ الَّذِيْ بَسَطَ الْاَرْضَ سُبْحَانَ الَّذِيْ مَلْجَاَ وَلَا مَنْجَا مِنْهُ

किया। पाक है वो ख़ुदा जिसने ज़मीन को फैलाया। पाक है वो ख़ुदा जिससे पनहा व नजात नही

اِلَّا اِلَيْهِ.

है मगर उसी की तरफ़

फिर यह तसबीह और दुआएं दस दस बार पढ़े:

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ.

पाक है ख़ुदा, हम्द ख़ुदा के लिए है अल्लाह के अलावा कोई माबूद नही है और अल्लाह बड़ा है।

फिर सूरह तौहीद, आयतल कुरसी, और सलवात सौ सौ बार:
फिर दस बार यह पढ़े:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ يُحْيِیْ وَ

कोई ख़ुदा नही है सिवाए अल्लाह के। वो एक है उसका कोई शरीक नही है उसीके लिए बादशाहत है

يُمِيْتُ وَيُمِيْتُ وَيُحْيِیْ وَهُوَ حَیٌّ لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ

उसीके लिए हम्द है वो ज़िन्दा करता है मारता है, मौत देता है, जिलता है, वो ऐसा ज़िन्दा है कभी मर

شَیْءٍ قَدِيْرٌ.

नही सकता उस के क़ब्ज़े मे हर चीज़ है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। मै इसतेग़फ़ार करता हूँ ख़ुदा

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَيُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَيْهِ.

से उसके अलावा कोई माबूद नही है वो ज़िन्दा व पाईन्दा है और उसीकी बारगाह मे तौबा करता हूँ।

يَا اَللهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا بَدِيْعَ السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضِ

ऐ अल्लाह ऐ बख़्शने वाले ऐ रहीम ऐ आसमानो और ज़मीन के पैदा करनेवाले

يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ يَا حَیُّ يَا قَيُّوْمُ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ

ऐ जलालत और बुज़ुर्गा वाले ऐ ज़िन्दा व पाईन्दा ऐ बख़्शने वाले ऐ नेमत वाले

يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اٰمِيْنَ.

ऐ वो ख़ुदा के तेरे अलावा कोई माबूद नही है आमीन।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ يَا مَنْ هُوَ اَقْرَبُ اِلَیَّ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ يَا مَنْ

ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ ऐ वो जो मेरी शहे रगे गरदन से क़रीब है। ऐ वो जो इन्सान

يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ قَلْبِهٖ يَا مَنْ هُوَ بِالْمَنْظَرِ الْاَعْلَى وَ بِالْاُفُقِ

और उसके दिलके दरमयान आता है। ऐ वो जो मानाज़रे आला और खुले उफ़क़ पर है। ऐ वो जो

الْمُبِيْنِ يَا مَنْ هُوَ الرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى يَا مَنْ لَيْسَ

रहमान है अपने तख़्त पर बिराजमान है। ऐ वो जिसकी तरह कोई नही है। और वो सब कुछ सुनने

كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

वाला और सब कुछ देखनेवाला है। मै तुझसे दरख़्वास्त करता हूँ के मुहम्मद व आले मुहम्मद

وَّآلِ مُحَمَّدٍ.

पर रहमत नाज़ल कर।

उसके बाद अपनी हाजत तलब करे के पूरी होगी इन्शाअल्लाह तआला। फिर यह सलवात पढ़े जो इमामे सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो व्यक्ति मोहम्मदो आले मोहम्मद (अ.स.) को ख़ुश करना चाहे वह यह सलवात पढ़े:

اَللّٰهُمَّ يَا اَجْوَدَ مَنْ اَعْطٰى وَيَا خَيْرَ مَنْ سُئِلَ وَيَا اَرْحَمَ مَنِ اسْتُرْحِمَ

ऐ ख़ुदा ऐ अता करने वालों मे सबसे ज़्यादा सखी। ऐ वो बेहतरीन ज़ात जिससे सवाल किया जाए,

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهٖ فِي الْاَوَّلِيْنَ وَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاٰلِهٖ فِي

ऐ बहतरीन रहम करनेवाले जिससे रहम चाहा जाए। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद और उन

الْاٰخِرِيْنَ وَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِهٖ فِي الْمَلَاءِ الْاَعْلٰى وَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

की आल पर अव्वलीन मे और दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद और उन की आल पर आख़िरीन

وَ اٰلِهٖ فِى الْمُرْسَلِيْنَ اَللّٰهُمَّ اَعْطِ مُحَمَّدًا وَآلِهِ الْوَسِيْلَةَ الْفَضِيْلَةَ

मे और दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद और उन की आल पर मलए आला मे और दुरूद नाज़ल कर

وَ الشَّرَفَ وَ الرِّفْعَةَ وَ الدَّرَجَةَ الْكَبِيْرَةَ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اٰمَنْتُ بِمُحَمَّدٍ

मोहम्मद और उन की आल पर मुरसलीन मे। ख़ुदाया मोहम्मद और उन की आल को वसीला

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ لَمْ اَرَهُ فَلَا تَحْرِمْنِىْ فِى الْقِيَامَةِ رُؤْيَتَهٗ وَ

और फ़जीलत और शरफ और रफ़अत और बड़ा दरजा अता कर। ख़ुदाया मै मोहम्मद (अ.स.) पर

ارْزُقْنِىْ صُحْبَتَهٗ وَ تَوَفَّنِىْ عَلٰى مِلَّتِهٖ وَ اسْقِنِىْ مِنْ حَوْضِهٖ مَشْرَبًا

ईमान लाया जब के मैने उनको नही देखा है तू मुझको महरूम न करना क़यामत मे उनके दीदार से

رَوِيًّا سَآئِغًا هَنِيْٓئًا لَا اَظْمَاُ بَعْدَهٗ اَبَدًا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

और मुझको उनकी हमनशिनी अता करना और मुझको उन्ही की मिल्लत पर मौत देना और हौज़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اٰمَنْتُ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَلَمْ اَرَهُ فَعَرِّفْنِىْ فِى

कौसर से सेराब करना के जिसके बाद मै कभी पयासा न हूँ, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। ख़ुदाया

الْجِنَانِ وَجْهَهٗ اَللّٰهُمَّ بَلِّغْ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ مِنِّىْ تَحِيَّةً

मै ईमान लाया मोहम्मद पर जब के मैने उनको नही देखा तो तू मुझको जन्नत मे उनको पहुँचवा दे।

كَثِيْرَةً وَ سَلَامًا.

ख़ुदाया मेरी तरफ़ से सलाम व तहैय्या कसीर मोहम्मद (स.अ.व.व.) को पहुँचा दे।

फिर दुआ उम्मे दाऊद पढ़े जिसका बयान आमाले रजब के सिलसिले में आ चुका है। जो इन शब्दों से प्रारंभ होती है: अल्लाहे बुज़ुर्ग ने सच कहा। फिर यह तसबीह पढ़े जिसके सवाब का अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता है:

سُبْحَانَ اللّٰهِ قَبْلَ كُلِّ اَحَدٍ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بَعْدَ كُلِّ اَحَدٍ وَسُبْحَانَ

पाक है वो ख़ुदा जो सबसे पहले है और पाक है वो ख़ुदा जो हर एक के बाद रहेगा। पाक है वो ख़ुदा

اللّٰهِ مَعَ كُلِّ اَحَدٍ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ يَبْقٰى رَبُّنَا وَيَفْنٰى كُلُّ اَحَدٍ

जो हर एक के साथ है और पाक है वो ख़ुदा हमारा रब बाक़ी रहेगा और हर एक फ़ना हो जाएगा और

وَسُبْحَانَ اللّٰهِ تَسْبِيحًا يَفْضُلُ تَسْبِيحَ الْمُسَبِّحِينَ فَضْلًا

पाक है ख़ुदा ऐसी पाक़ीजगी जो तसबीह करने वालों की तसबीह से अफ़ज़ल है बहुत ज़्यादा हर एक से

كَثِيرًا قَبْلَ كُلِّ اَحَدٍ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ تَسْبِيحًا يَفْضُلُ تَسْبِيحَ

पहले और पाक है ख़ुदा ऐसी पाक़ीजगी जो तसबीह करने वालों की तसबीह से बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल

الْمُسَبِّحِينَ فَضْلًا كَثِيرًا بَعْدَ كُلِّ اَحَدٍ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ تَسْبِيحًا

है हर एक के बाद। और पाक है ख़ुदा ऐसी पाक़ीजगी है के तसबीह करनेवालों की तसबीह से बहुत

يَفْضُلُ تَسْبِيحَ الْمُسَبِّحِينَ فَضْلًا كَثِيرًا مَعَ كُلِّ اَحَدٍ

ज़्यादा अफ़ज़ल है हर एक तसबीह करनेवालों की तसबीह के साथ और पाक है ख़ुदा ऐसी पाक़ीजगी

وَسُبْحَانَ اللّٰهِ تَسْبِيحًا يَفْضُلُ تَسْبِيحَ الْمُسَبِّحِينَ فَضْلًا

के तसबीह करनेवालें की तसबीह से बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल है। हमारे रब के लिए बक़ा है और हर एक

كَثِيرًا لِرَبِّنَا الْبَاقِي وَيَفْنٰى كُلُّ اَحَدٍ وَسُبْحَانَ اللهِ تَسْبِيحًا

फ़ना होने वाला है। पाक है ख़ुदा ऐसा पाक जिसका एहसा नही किया जा सकता व जाना नही जा सकता,

لَا يُحْصٰى وَلَا يُدْرٰى وَلَا يُنْسٰى وَلَا يَبْلٰى وَلَا يَفْنٰى وَلَيْسَ لَهٗ

भुलाया नही जाता है पुराना नही होता है, फ़ना नही होता है, इस लिए इन्तेहा नही है और पाक है ख़ुदा

مُنْتَهٰى وَسُبْحَانَ اللهِ تَسْبِيحًا يَدُومُ بِدَوَامِهٖ وَيَبْقٰى بِبَقَائِهٖ

ऐसी पाकीज़गी के दाएम रहती है उसके दवाम के साथ और बाक़ी रहती है उसकी बक़ा के साथ दुनिया

فِي سِنِيِّ الْعَالَمِينَ وَشُهُورِ الدُّهُورِ وَاَيَّامِ الدُّنْيَا وَسَاعَاتِ

के सालों मे और ज़माने के महीनो मे और दुनिया के दिनो मे और रात दिनो के साअतों मे और पाक

اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَسُبْحَانَ اللهِ اَبَدَ الْاَبَدِ وَمَعَ الْاَبَدِ مِمَّا لَا

है ख़ुदा हमेशा जिसका अदद एहसा नही करता है और ज़माना उसको फ़ना नही करता है और अबद

يُحْصِيهِ الْعَدَدُ وَلَا يُفْنِيهِ الْاَمَدُ وَلَا يَقْطَعُهُ الْاَبَدُ وَتَبَارَكَ

उसको मुनकता नही करता है और अल्लाह बड़ा बेहतरीन ख़ालिक़ है। हम्द उस ख़ुदा की जो सबसे पहले

اللهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِينَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ قَبْلَ كُلِّ اَحَدٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

है और हम्द उस ख़ुदा की जो हर एक के बाद रहेगा। हम्द उस ख़ुदा की जो हर एक के साथ है और हम्द

بَعْدَ كُلِّ اَحَدٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مَعَ كُلِّ اَحَدٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ يَبْقٰى رَبُّنَا

उस ख़ुदा की, हमारा रब बाक़ी रहेगा और हर एक फ़ना हो जाएगा और हम्द उस ख़ुदा की ऐसी पाक़ीजगी

وَيَفْنٰى كُلَّ اَحَدٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا يَفْضُلُ حَمْدَ الْحَامِدِيْنَ

जो तसबीह करनेवाला की तसबीह से अफ़ज़ल है बहुत ज़्यादा हर एक से पहले और हम्द उस ख़ुदा की

فَضْلًا كَثِيْرًا قَبْلَ كُلِّ اَحَدٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا يَفْضُلُ حَمْدَ

ऐसी हम्द जो हम्द करनेवाला की हम्द से बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल है हर एक के बाद। और हम्द उस ख़ुदा

الْحَامِدِيْنَ فَضْلًا كَثِيْرًا بَعْدَ كُلِّ اَحَدٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا

की ऐसी पाकीज़गी है के तसबीह करनेवालों की तसबीह से बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल है हर एक साथ और

يَفْضُلُ حَمْدَ الْحَامِدِيْنَ فَضْلًا كَثِيْرًا مَعَ كُلِّ اَحَدٍ وَالْحَمْدُ

हम्द उस ख़ुदा की ऐसी पाकीज़गी के तसबीह करने वालों की तसबीह से बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल है। हमारे

لِلّٰهِ حَمْدًا يَفْضُلُ حَمْدَ الْحَامِدِيْنَ فَضْلًا كَثِيْرًا لِرَبِّنَا الْبَاقِيْ

रब के लिए बक़ा है और हर एक फ़ना होनेवाला है। हम्द उस ख़ुदा की ऐसा पाक जिसका एहसा नही

وَيَفْنٰى كُلُّ اَحَدٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا لَا يُحْصٰى وَلَا يُدْرٰى وَلَا

किया जा सकता वो जाना नही जा सकता, भुलाया नही जाता है पुराना नही होता है, फ़ना नही होता है,

يُنْسٰى وَلَا يَبْلٰى وَلَا يَفْنٰى وَلَيْسَ لَهٗ مُنْتَهٰى وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا

इस लिए इन्तेहा नही है और हम्द उस ख़ुदा की ऐसी पाक़ीजगी के दाएम रहती है उसके दवाम के साथ

يَدُوْمُ بِدَوَامِهٖ وَيَبْقٰى بِبَقَائِهٖ فِيْ سِنِيِّ الْعَالَمِيْنَ وَشُهُوْرِ

और बाक़ी रहती है उसकी बक़ा के साथ दुनिया के सालों मे और ज़माने के महीनो मे और दुनिया के

الدُّهُورِ وَاَيَّامِ الدُّنْيَا وَسَاعَاتِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْحَمْدُ

दिनो मे और रात दिनो के साअतों मे और हम्द उस ख़ुदा की हमेशा जिसका अदद एहसा नही करता

لِلّٰهِ اَبَدَ الْاَبَدِ وَمَعَ الْاَبَدِ مِمَّا لَا يُحْصِيهِ الْعَدَدُ وَلَا يُفْنِيهِ

है और ज़माना उसको फ़ना नही करता है और अबद उस को मुनक़ता नही करता है और अल्लाह बड़ा

الْاَمَدُ وَلَا يَقْطَعُهُ الْاَبَدُ وَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِينَ لَا

बेहतरीन ख़ालिक है। कोई ख़ुदा नही अल्लाह के सिवा जो सबसे पहले है और कोई ख़ुदा नही अल्लाह के

اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ قَبْلَ كُلِّ اَحَدٍ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ بَعْدَ كُلِّ اَحَدٍ وَلَا

सिवा जो हर एक के बाद रहेगा। कोई ख़ुदा नही अल्लाह के सिवा जो हर एक के साथ है और कोई ख़ुदा

اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مَعَ كُلِّ اَحَدٍ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَبْقٰى رَبُّنَا وَيَفْنٰى كُلُّ

नही अल्लाह के सिवा, हमारा रब बाक़ी रहेगा और हर एक फ़ना हो जाएगा और कोई ख़ुदा नही अल्लाह

اَحَدٍ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تَهْلِيلًا يَفْضُلُ تَهْلِيلَ الْمُهَلِّلِينَ فَضْلًا

के सिवी ऐसी पाक़ीजगी जो तसबीह करनेवालें की तसबीह से अफ़ज़ल है बहुत ज़्यादा हर एक से पहले

كَثِيرًا قَبْلَ كُلِّ اَحَدٍ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تَهْلِيلًا يَفْضُلُ تَهْلِيلَ

और कोई ख़ुदा नही अल्लाह के सिवा ऐसी हम्द जो हम्द करनेवाला की हम्द से बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल है

الْمُهَلِّلِينَ فَضْلًا كَثِيرًا بَعْدَ كُلِّ اَحَدٍ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تَهْلِيلًا

हर एक के बाद। और कोई ख़ुदा नही अल्लाह के सिवा ऐसी हम्द जो हम्द करनेवालों की हम्द से बहुत

يَفْضُلُ تَهْلِيلَ الْمُهَلِّلِينَ فَضْلًا كَثِيرًا مَعَ كُلِّ اَحَدٍ وَلَا اِلٰهَ

ज़्यादा अफ़ज़ल है। बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल है हर एक के साथ। और कोई ख़ुदा नही अल्लाह के सिवा

اِلَّا اللّٰهُ تَهْلِيلًا يَفْضُلُ تَهْلِيلَ الْمُهَلِّلِينَ فَضْلًا كَثِيرًا لِرَبِّنَا

ऐसी हम्द जो हम्द करनेवालों की हम्द से बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल है। बहुत ज़्यादा फ़ज़्ल है मेरे रब का जो

الْبَاقِي وَيَفْنٰى كُلُّ اَحَدٍ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تَهْلِيلًا لَا يُحْصٰى وَلَا

बाक़ी रहेगा और सब फ़ना हो जाएंगे। और कोई ख़ुदा नही अल्लाह के सिवा ऐसी हम्द जो न कोई समझ

يُدْرٰى وَلَا يُنْسٰى وَلَا يَبْلٰى وَلَا يَفْنٰى وَلَيْسَ لَهُ مُنْتَهٰى وَلَا

सकता है न कोई उसका अहाता कर सकता है। न भुलानेवली न ख़त्म होनेवाली, न फ़ना होनेवाली न

اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تَهْلِيلًا يَدُومُ بِدَوَامِهِ وَيَبْقٰى بِبَقَائِهِ فِي سِنِيِّ

रूकने वाली, और कोई ख़ुदा नही अल्लाह के सिवा ऐसे इक़्रार के साथ जिस तरह वो बाक़ी है इस दुनया

الْعَالَمِينَ وَشُهُورِ الدُّهُورِ وَاَيَّامِ الدُّنْيَا وَسَاعَاتِ اللَّيْلِ

के वर्षों मे, काल के महीनों मे, दुनिया के दिनों मे, दिन व रात के घंटों मे। और कोई ख़ुदा नही अल्लाह

وَالنَّهَارِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَبَدَ الْاَبَدِ وَمَعَ الْاَبَدِ مِمَّا لَا يُحْصِيهِ

के सिवा हमेशा के लिए और इतना के कोई अंक उसको बयान नही कर सकता कोई हमेशगी उसे रोक

الْعَدَدُ وَلَا يُفْنِيهِ الْاَمَدُ وَلَا يَقْطَعُهُ الْاَبَدُ وَتَبَارَكَ اللّٰهُ

नही सकती और कोई हमेशगी उसमे बाधा नही डाल सकती। ख़ुदा बाबरकत है जो सब बनाने वलों से

اَحۡسَنُ الۡخَالِقِيۡنَ وَاللهُ اَكۡبَرُ قَبۡلَ كُلِّ اَحَدٍ وَاللهُ اَكۡبَرُ بَعۡدَ

बेहतर है। अल्लाह सबसे बड़ा है हर एक से पहले अल्लाह सबसे बड़ा है हर एक के बाद अल्लाह सबसे

كُلِّ اَحَدٍ وَاللهُ اَكۡبَرُ مَعَ كُلِّ اَحَدٍ وَاللهُ اَكۡبَرُ يَبۡقٰى رَبُّنَا وَيَفۡنٰى

बड़ा है हर एक हे साथ। अल्लाह सबसे बड़ा है हमारा रब बाक़ी रहेगा और हर एक फ़ना हो जाएगा अल्लाह

كُلُّ اَحَدٍ وَاللهُ اَكۡبَرُ تَكۡبِيۡرًا يَفۡضُلُ تَكۡبِيۡرَ الۡمُكَبِّرِيۡنَ فَضۡلًا

सबसे बड़ा है ऐसी बड़ाई के साथ जो सारे तकबीर कहने वालों की तकबीर से अफ़ज़ल है। अफ़ज़ल है

كَثِيۡرًا قَبۡلَ كُلِّ اَحَدٍ وَاللهُ اَكۡبَرُ تَكۡبِيۡرًا يَفۡضُلُ تَكۡبِيۡرَ

बहुत ज़्यादा हर एक से पहले। अल्लाह सबसे बड़ा है ऐसी बड़ाई के साथ जो सारे तकबीर कहने वालों की

الۡمُكَبِّرِيۡنَ فَضۡلًا كَثِيۡرًا بَعۡدَ كُلِّ اَحَدٍ وَاللهُ اَكۡبَرُ تَكۡبِيۡرًا

तकबीर से अफ़ज़ल है। अफ़ज़ल है बहुत ज़्यादा हर एक के बाद। अल्लाह सबसे बड़ा है ऐसी बड़ाई के

يَفۡضُلُ تَكۡبِيۡرَ الۡمُكَبِّرِيۡنَ فَضۡلًا كَثِيۡرًا مَعَ كُلِّ اَحَدٍ وَاللهُ

साथ जो सारे तकबीर कहने वालों की तकबीर से अफ़ज़ल है। अफ़ज़ल है बहुत ज़्यादा हर एक के साथ।

اَكۡبَرُ تَكۡبِيۡرًا يَفۡضُلُ تَكۡبِيۡرَ الۡمُكَبِّرِيۡنَ فَضۡلًا كَثِيۡرًا

अल्लाह सबसे बड़ा है ऐसी बड़ाई के साथ जो सारे तकबीर कहने वालों की तकबीर से अफ़ज़ल है। बहुत

لِرَبِّنَا الۡبَاقِىۡ وَيَفۡنٰى كُلُّ اَحَدٍ وَاللهُ اَكۡبَرُ تَكۡبِيۡرًا لَا يُحۡصٰى

ज़्यादा अफ़ज़ल है हमारा रब जो बाक़ी रहेगा और हर एक फ़ना हो जाएगा। अल्लाह बड़ा है ऐसी बड़ाई के

وَلَا يُدْرٰى وَلَا يُنْسٰى وَلَا يَبْلٰى وَلَا يَفْنٰى وَلَيْسَ لَهٗ مُنْتَهٰى

साथ जिसे न कोई घेर सके न कोई समझ सके। जो न कोई समझ सकता है न कोई उसका अहाता कर

وَاللّٰهُ اَكْبَرُ تَكْبِيرًا يَدُومُ بِدَوَامِهِ وَيَبْقٰى بِبَقَائِهِ فِي سِنِيِّ

सकता है। न भुलाने वली न ख़त्म होने वाली, न फ़ना होने वाली न रूकने वाली। और अल्लाह बड़ा है

الْعَالَمِيْنَ وَشُهُورِ الدُّهُورِ وَاَيَّامِ الدُّنْيَا وَسَاعَاتِ اللَّيْلِ

ऐसी तकबीर के साथ जिस तरह वो बाक़ी है इस दुनया के वर्षों मे, काल के महीनों मे, दुनिया के दिनों मे,

وَالنَّهَارِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَبَدَ الْاَبَدِ وَمَعَ الْاَبَدِ مِمَّا لَا يُحْصِيهِ

दिन व रात के घंटों मे। और अल्लाह बड़ा है हमेशा के लिए और इतना के कोई अंक उसको बयान नही

الْعَدَدُ وَلَا يُفْنِيهِ الْاَمَدُ وَلَا يَقْطَعُهُ الْاَبَدُ وَتَبَارَكَ اللّٰهُ

कर सकता कोई हमेशगी उसे रोक नही सकती और कोई हमेशगी उसमे बाधा नही डाल सकती। ख़ुदा

اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ.

बाबरकत है जो सब बनाने वलों से बेहतर है।

फिर यह दुआ पढ़े: اَللّٰهُمَّ مَنْ تَعَبَّاَ وَتَهَيَّاَ यह दुआ शबे जुमा में गुज़र चुकी है। फिर दुआ अली बिन हुसैन (अ.स.) को पढ़े जिसे शेख तूसी ने मिसबाहुल मोतहज्जिद में ज़िक्र किया है।

लेखक: यह दुआ अरफ़ात में पढ़ने की है। लंबी भी है इस लिए हमने इसे ज़िक्र नहीं किया है। इस लिए उस दिन ख़ुशू और रिक़्क़त के साथ पढ़े सहीफ़ा कामेला की ४७ वीं दुआ जो दुनिया व आख़िरत के तमाम मक़सद हासिल करने के लिए काफ़ी है। दुआ इस प्रकार शुरू होती है। اَللّٰهُمَّ اَنْتَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ...

दुआ अरफ़ा इमाम हुसैन (अ.स.)

इस दिन की मशहूर दुआओं में से दुआ इमामे हुसैन (अ.स.) सय्यदुश शोहदा है। जिसे ग़ालिब असदी के बेटे बिश्र और बशीर ने रिवायत की है के अरफ़ा के दिन अस्र के समय अरफ़ात में मैं इमाम (अ.स.) के साथ था। आप ख़ैमें से बाहर तशरीफ़ लाए। अपने अहले बैत, लड़कों और शिओं की एक जमाअत के साथ निहायत इन्केसारी और ख़ुज़ू के आलम में और पहाड़ की बांईं जानिब खड़े हो गए। काबे की ओर रूख़ करके हाथ को चेहरे के बराबर बुलंद किया उस मिस्कीन की तरह जो खाना तलब कर रहा हो। और फिर यह दुआ पढ़ी:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَیْسَ لِقَضَآئِهٖ دَافِعٌ وَ لَا لِعَطَآئِهٖ مَانِعٌ وَ

हम्द है उस ख़ुदा के लिए जिस के फ़ैसले को कोई दफ़ा करने वाला नही है और जिसकी अता का कोई

لَا كَصُنْعِهٖ صُنْعُ صَانِعٍ وَ هُوَ الْجَوَادُ الْوَاسِعُ فَطَرَ اَجْنَاسَ

रोकने वाला नही है और किसी सानेह की सुनत की तरह नही है वो सख़ी है, वुसअत करनेवाला है,

الْبَدَائِعِ وَ اَتْقَنَ بِحِكْمَتِهِ الصَّنَائِعَ لَا تَخْفٰی عَلَیْهِ الطَّلَائِعُ

उसने तअज्जुब खेज़ व उमदा मख़लूक़ात की जिनसों को पैदा किया और अपनी हिकमत से सिनतों

وَ لَا تَضِیْعُ عِنْدَهُ الْوَدَآئِعُ جَازِیْ كُلِّ صَانِعٍ وَ رَآئِشُ كُلِّ

को मोहकम किया, कोई ज़ाहिर होने वाली चीज़ उससे मख़फ़ी नही होती है और कोई अमानत

قَانِعٍ وَ رَاحِمُ كُلِّ ضَارِعٍ وَ مُنْزِلُ الْمَنَافِعِ وَ الْكِتَابِ الْجَامِعِ

रखी हुई ज़ाया नही होती है हर अमलवाले को जज़ा देने वाला हे और हर क़िनाअत करनेवाले की

بِالنُّوْرِ السَّاطِعِ وَ هُوَ لِلدَّعَوَاتِ سَامِعٌ وَلِلْكُرُبَاتِ دَافِعٌ وَ

इसलाह करने वाला है और हर तजर्रो करने वाले पर रहम करने वाला है मनाफ़े और किताबे जाम

لِلدَّرَجَاتِ رَافِعٌ وَلِلْجَبَابِرَةِ قَامِعٌ فَلَاۤ اِلٰهَ غَيْرُهٗ وَ لَا شَيْءَ

का नाज़ल करने वाला है, रौशन नूर के साथ और वो दुआओं का सुननेवाला है और मुसीबतों का

يَعْدِلُهٗ وَلَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ اللَّطِيْفُ

दफ़ा करना वाला है, दरज़ात को बुलंद करने वाला और जाबिरों को ख़त्म करने वाला है उसके

الْخَبِيْرُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَرْغَبُ اِلَيْكَ وَ

अलावा कोई ख़ुदा नही है और कोई उसका नज़ीर नही है उसके मिस्ल कोई नही है वो सुननेवाला

اَشْهَدُ بِالرُّبُوْبِيَّةِ لَكَ مُقِرًّا بِاَنَّكَ رَبِّيْ وَ اَنَّ اِلَيْكَ مَرَدِّيْ

देखनेवाला है लुत्फ़ करनेवाला और जानने वाला है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। ख़ुदाया मै

اِبْتَدَاْتَنِيْ بِنِعْمَتِكَ قَبْلَ اَنْ اَكُوْنَ شَيْئًا مَذْكُوْرًا وَ خَلَقْتَنِيْ

शाक़ रखता हूँ और तेरी रूबूबियत की गवाही देता हूँ उस इक़रार के साथ के तू मेरा रब है और

مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ اَسْكَنْتَنِي الْاَصْلَابَ اٰمِنًا لِرَيْبِ الْمَنُوْنِ وَ

तेरी जानिब बाज़गशत है तूने अपनी नेमत से मुझको वुजूद बख़्शा क़ब्ल उसके के मै कोई क़ाबिले

اخْتِلَافِ الدُّهُوْرِ وَ السِّنِيْنَ فَلَمْ اَزَلْ ظَاعِنًا مِنْ صُلْبٍ

तज़केरा चीज़ हो जाऊँ। तूने मुझको मिट्टी से पैदा किया है फिर मुझको सुलबों मे साकिन किया

إِلَىٰ رَحِمٍ فِي تَقَادُمٍ مِّنَ الْأَيَّامِ الْمَاضِيَةِ وَ الْقُرُونِ الْخَالِيَةِ

महफ़ूज़ रखते हुए हादसाते ज़माना और तग़ैयूराते राज़गार से यहाँ तक के मै बराबर सुलबों से रहमों

لَمْ تُخْرِجْنِي لِرَأْفَتِكَ بِي وَ لُطْفِكَ لِي وَ إِحْسَانِكَ إِلَيَّ فِي دَوْلَةِ

मे मुनतिक़ल होता रहा, गुज़रते हुए ज़मानो और गुज़री हुई सदियों मे। तूने मुझको अपनी महेरबानी

أَئِمَّةِ الْكُفْرِ الَّذِينَ نَقَضُوا عَهْدَكَ وَ كَذَّبُوا رُسُلَكَ لٰكِنَّكَ

से नही निकाला और अपने लुत्फ़ और अपने एहसान से नही पैदा किया उन काफ़रो की हुकूमत

أَخْرَجْتَنِي لِلَّذِي سَبَقَ لِي مِنَ الْهُدَىٰ الَّذِي لَهُ يَسَّرْتَنِي وَ

मे जिन्होंने तेरे अहेद का तोड़ दिया और तेरे रसूल की तकज़ीब की लेकीन तूने मुझको निकाला

فِيهِ أَنْشَأْتَنِي وَ مِنْ قَبْلِ ذٰلِكَ رَؤُفْتَ بِي بِجَمِيلِ صُنْعِكَ وَ

और वुजूद दिया ऐसे ज़माने मे जो मेरे लिए हिदायत से साबिक़ हुआ जो तूने मेरे लिए आसान कर

سَوَابِغِ نِعَمِكَ فَابْتَدَعْتَ خَلْقِي مِنْ مَنِيٍّ يُمْنَىٰ وَ أَسْكَنْتَنِي

दिया और उसमे तूने मुझको वुजूद दिया और उसके क़ब्ल तूने मुझपर महरेबानी की अपनी बेहतरीन

فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ بَيْنَ لَحْمٍ وَّ دَمٍ وَّ جِلْدٍ لَمْ تُشْهِدْنِي خَلْقِي وَ

महेरबानी के साथ और अपनी भरपूर नेमत के साथ पस तूने मेरी तख़लीक़ आबे नूतफ़े से की और

لَمْ تَجْعَلْ إِلَيَّ شَيْئاً مِّنْ أَمْرِي ثُمَّ أَخْرَجْتَنِي لِلَّذِي سَبَقَ

तूने मुझको साकिन किया तीन तारीकियों मे गोश्त ख़ून और जिल्द की तूने मुझको मेरी ख़िलक़त से

لِیْ مِنَ الْھُدٰی اِلَی الدُّنْیَا تَآمًّا سَوِیًّا وَ حَفِظْتَنِیْ فِی الْمَھْدِ

आगाह नही किया और कोई कारे तख़लीक़ मुझ पर नही छोड़ा फिर तूने मुझको दुनिया मे हिदायत

طِفْلًا صَبِیًّا وَ رَزَقْتَنِیْ مِنَ الْغِذَآءِ لَبَنًا مَرِیًّا وَ عَطَفْتَ عَلَیَّ

साबेक़ा के साथ मुकम्मल तौर पर पैदा किया और तूने मेरे बचपन मे गहवारे मे मेरी हिफ़ाज़त की

قُلُوْبَ الْحَوَاضِنِ وَ كَفَّلْتَنِی الْاُمَّھَاتِ الرَّوَاحِمَ وَ كَلَاْتَنِیْ مِنْ

और शीरे मादर की बेहतरीन ग़िज़ा मुझको अता की और मोहब्बत रखनेवालों को मुझपर महेरबान

طَوَارِقِ الْجَآنِّ وَ سَلَّمْتَنِیْ مِنَ الزِّیَادَةِ وَ النُّقْصَانِ فَتَعَالَیْتَ

कर दिया और महेरबान माओं को मेरा कफ़ील बना दिया और मुझको जिनों के आसेब से महफ़ूज़

یَا رَحِیْمُ یَا رَحْمٰنُ حَتّٰی اِذَا اسْتَھْلَلْتُ نَاطِقًا بِالْكَلَامِ اَتْمَمْتَ

किया और ऐब व नुक़सान से मुझको बचाया, तू बुलंद है ऐ रहम करने वाले ऐ महेरबान यहाँ तक

عَلَیَّ سَوَابِغَ الْاِنْعَامِ وَ رَبَّیْتَنِیْ زَایِدًا فِیْ كُلِّ عَامٍ حَتّٰی اِذَا

के जब मै ने बात करने के लिए ज़बान खेली तो तूने भरपूर इनाम से मुझको नवाज़ दिया और तूने

اكْتَمَلَتْ فِطْرَتِیْ وَ اعْتَدَلَتْ مِرَّتِیْ اَوْجَبْتَ عَلَیَّ حُجَّتَكَ بِاَنْ

मेरी परवरिश क हर साल ज़्यादा करते हुए यहाँ तक के जब मेरी ख़िलकत मुकम्मल होई और मेरी

اَلْھَمْتَنِیْ مَعْرِفَتَكَ وَ رَوَّعْتَنِیْ بِعَجَآئِبِ حِكْمَتِكَ وَ اَیْقَظْتَنِیْ

हालत एतेदाल को पहुँची तो हुज्जत को मेरे ऊपर लाज़िम किया इस तरह के तूने अपनी मारेफ़त का

لِمَا ذَرَأْتَ فِيْ سَمَآئِكَ وَ اَرْضِكَ مِنْ بَدَآئِعِ خَلْقِكَ وَ نَبَّهْتَنِيْ

मुझको इल्हाम किया और मुझको अपनी हिकमत के अज़ाएब से हैरान कर दिया और तूने जगा

لِشُكْرِكَ وَ ذِكْرِكَ وَ اَوْجَبْتَ عَلَيَّ طَاعَتَكَ وَ عِبَادَتَكَ وَ

दिया इसकी वजह से जो तूने अपने आसमान व ज़मीन मे अज़ीब मख़लूक़ात पैदा किया और तूने

فَهَّمْتَنِيْ مَا جَآئَتْ بِهٖ رُسُلُكَ وَ يَسَّرْتَ لِيْ تَقَبُّلَ مَرْضَاتِكَ وَ

मुझको वो जिसको तेरा रसूल लाया और तूने आसान बना दिया अपनी मर्ज़ा के क़ुबूल करने को

مَنَنْتَ عَلَيَّ فِيْ جَمِيْعِ ذٰلِكَ بِعَوْنِكَ وَ لُطْفِكَ ثُمَّ اِذْ خَلَقْتَنِيْ مِنْ

और तूने एहसान किसा उन सब मे अपनी मदद और लुत्फ़ से फिर जब के तूने मुझको बेहतरीन

خَيْرِ الثَّرٰى لَمْ تَرْضَ لِيْ يَا اِلٰهِيْ نِعْمَةً دُوْنَ اُخْرٰى وَ رَزَقْتَنِيْ

मिट्टी से पैदा किया तो तू मेरे लिए ऐ मेरे ख़ुदा एक नेमत पर बग़ैर दूसरे के राज़ी न हुआ और तूने

مِنْ اَنْوَاعِ الْمَعَاشِ وَصُنُوْفِ الرِّيَاشِ بِمَنِّكَ الْعَظِيْمِ

मुझको रिज़्क अता किया मुख़्तलिफ़ माअश और मुतईद असासे ज़िन्दगी का अपने सब से अज़ीम

الْاَعْظَمِ عَلَيَّ وَ اِحْسَانِكَ الْقَدِيْمِ اِلَيَّ حَتّٰى اِذَا اَتْمَمْتَ عَلَيَّ

एहसान के ज़रिए और क़दीम एहसान के ज़रिए यहाँ तक के जब तूने मुझ पर तमाम नेमतें मुकम्मल

جَمِيْعَ النِّعَمِ وَ صَرَفْتَ عَنِّيْ كُلَّ النِّقَمِ لَمْ يَمْنَعْكَ جَهْلِيْ وَ

कर दीं और तमाम बद बख़्ती व बला को मुझसे दूर कर दिया तो मेरी जेहालत और मेरी ज़ुरअत ने

جُرْأَتِيْ عَلَيْكَ اَنْ دَلَلْتَنِيْ اِلٰى مَا يُقَرِّبُنِيْ اِلَيْكَ وَ وَفَّقْتَنِيْ لِمَا

तुझको नही रोका के तू मेरी रहनुमाई करे उस चीज़ की तरफ़ जो मुझको तुझसे क़रीब कर दे और

يُزْلِفُنِيْ لَدَيْكَ فَاِنْ دَعَوْتُكَ اَجَبْتَنِيْ وَاِنْ سَأَلْتُكَ اَعْطَيْتَنِيْ

तूने मुझको तौफ़ीक़ दी उस उम्र की जानिब के जो मुझको तुझसे क़ुरबत अता करे के अगर मैने

وَاِنْ اَطَعْتُكَ شَكَرْتَنِيْ وَاِنْ شَكَرْتُكَ زِدْتَنِيْ كُلُّ ذٰلِكَ اِكْمَالًا

तुझसे दुआ की तो तूने क़ुबूल किया और जब मैने तुझसे सवाल किया तो तूने मुझको अता किया

لِاَنْعُمِكَ عَلَيَّ وَاِحْسَانِكَ اِلَيَّ فَسُبْحَانَكَ سُبْحَانَكَ مِنْ مُبْدِئٍ

और अगर मैने तेरी इताअत की तो उसका मुकम्मल बदला दिया और अगर मैने तेरा शुक्र किया तो

مُعِيْدٍ حَمِيْدٍ مَّجِيْدٍ تَقَدَّسَتْ اَسْمَآؤُكَ وَعَظُمَتْ اٰلَآؤُكَ فَاَيُّ

तूने ज़्यादा दिया ये सब मेरे ऊपर नेमतों को मुकम्मल करने और एहसान को तमाम करने के लिए

نِعَمِكَ يَا اِلٰهِيْ اُحْصِيْ عَدَدًا وَّ ذِكْرًا اَمْ اَيُّ عَطَايَاكَ اَقُوْمُ

है तू पाक है पैदा करने वाला है लाने वाला है सतूदा सिफ़ात है, इज़्ज़त वाला है तेरे नाम पाक़ीजा हैं

بِهَا شُكْرًا وَهِيَ يَا رَبِّ اَكْثَرُ مِنْ اَنْ يُّحْصِيَهَا الْعَآدُّوْنَ اَوْ يَبْلُغَ

और तेरी नेमतें अज़ीम हैं तो ऐ माबूद तेरी किस नेमत के अदद और तजकेरे का एहसा किया जा

عِلْمًا بِهَا الْحَافِظُوْنَ ثُمَّ مَا صَرَفْتَ وَ دَرَأْتَ عَنِّيْ اَللّٰهُمَّ

सकता है या तेरी किन अताओं के शुक्र को अदा किया जा सकता है जब के वो इनाम शुमार करने

مِنَ الضُّرِّ وَ الضَّرَّآءِ اَكْثَرَ مِمَّا ظَهَرَ لِىْ مِنَ الْعَافِيَةِ وَ السَّرَّآءِ

वालों के एहसा करने से ज़्यादा हैं या याद करनेवाला के इल्म से बुलंद हैं फिर तूने जिस रंजो ग़म को

وَ اَنَا اَشْهَدُ يَا اِلٰهِىْ بِحَقِيْقَةِ اِيْمَانِىْ وَ عَقْدِ عَزَمَاتِ يَقِيْنِىْ وَ

मुझसे दूर किया ऐ ख़ुदा वो उससे कहीं ज़्यादा है जो मेरे लिए आफ़ियत और सुकून ज़ाहिर हुआ और

خَالِصِ صَرِيْحِ تَوْحِيْدِىْ وَ بَاطِنِ مَكْنُوْنِ ضَمِيْرِىْ وَ عَلاَئِقِ

मै गवाही देता हूँ ऐ मेरे ख़ुदा अपने ईमान की हक़ीक़त और अपने यकीन के अज़्मे मोहकम और

مَجَارِىْ نُوْرِ بَصَرِىْ وَ اَسَارِيْرِ صَفْحَةِ جَبِيْنِىْ وَ خُرْقِ مَسَارِبِ

अपनी तौहीद के ख़लिस होने की और अपने ज़मीर के राज़ की और अपनी आँख की रौश्नी के रास्ते

نَفْسِىْ وَ خَذَارِيْفِ مَارِنِ عِرْنِيْنِىْ وَ مَسَارِبِ سِمَاخِ سَمْعِىْ وَ

और अपने सफ़हे जबीन के इसरार के नक़ूश की और अपने नाक की राहों की और अपनी कुव्वते

مَا ضُمَّتْ وَ اَطْبَقَتْ عَلَيْهِ شَفَتَاىَ وَ حَرَكَاتِ لَفْظِ لِسَانِىْ وَ

साम्माह के मखज़न की और अपने कान की ही की राह की और जिस को दोनो लब मिल कर छुपा

مَغْرَزِ حَنَكِ فَمِىْ وَ فَكِّىْ وَ مَنَابِتِ اَضْرَاسِىْ وَ مَسَاغِ مَطْعَمِىْ

लेते हैं और अपनी ज़बान के लफ़्ज़ की हरकतों की और अपने मूह और जबड़े के महले ईरतेबात

وَ مَشْرَبِىْ وَ حِمَالَةِ اُمِّ رَاسِىْ وَ بُلُوْعِ فَارِغِ حَبَائِلِ عُنُقِىْ وَ مَا

की और दातो के निकलने की जग्ह और क़ुव्वते ज़ाएक़ा की जो खाने पीने का ज़रिए है और दिमाग़

اشْتَمَلَ عَلَيْهِ تَامُوْرُ صَدْرِیْ وَ حَمَایِلِ حَبْلِ وَتِیْنِیْ وَنِیَاطِ

की खोपड़ी की और मेरी गरदन के आसाब के रिश्ते की पहुँच की और जो उस पर मुश्तमिल है मेरे

حِجَابِ قَلْبِیْ وَ اَفْلَاذِ حَوَاشِیْ كَبِدِیْ وَ مَا حَوَتْهُ شَرَاسِیْفُ

सीने की फ़ज़ा और मेरी रगों के हमाएल की और परदाए क़ल्ब के राबिते की और जिगर के एतेराफ

اَضْلَاعِیْ وَ حِقَاقُ مَفَاصِلِیْ وَ قَبْضُ عَوَامِلِیْ وَ اَطْرَافُ اَنَامِلِیْ

की और जो उसको हावी है मेरे अज़ला और जोड़ बन्द और क़वाएदे आमला और मेरी उंगलियो के

وَ لَحْمِیْ وَ دَمِیْ وَ شَعْرِیْ وَ بَشَرِیْ وَ عَصَبِیْ وَ قَصَبِیْ وَ عِظَامِیْ

पूरे और मेरे गोश्त और ख़ून और बाल और जिल्द और एहसाब और रगें और ह•ी और गुरदा और

وَ مُخِّیْ وَ عُرُوْقِیْ وَ جَمِیْعِ جَوَارِحِیْ وَ مَا انْتَسَجَ عَلٰى ذٰلِكَ اَيَّامَ

रग और तमाम आज़ा व जवारे और जो मेरे दौराने रजाअत हिस्से वुजूद मे आते रहे और जो कुछ

رِضَاعِیْ وَ مَا اَقَلَّتِ الْاَرْضُ مِنِّیْ وَ نَوْمِیْ وَ يَقْظَتِیْ وَ سُكُوْنِیْ وَ

ज़मीन ने मुझ से उठाया है और मेरी नीन्द और बेदारी और सुकून व हरकात रूकू व सुजूद की के

حَرَكَاتِ رُكُوْعِیْ وَ سُجُوْدِیْ اَنْ لَوْ حَاوَلْتُ وَ اجْتَهَدْتُ مَدَى

अगर मै फिक्र करूँ और कोशिश करूँ ज़मानो और सदियों के तूल के बराबर अगर मै ज़िन्दा रहूँ के

الْاَعْصَارِ وَ الْاَحْقَابِ لَوْ عُمِّرْتُهَا اَنْ اُؤَدِّیَ شُكْرَ وَاحِدَةٍ

तेरी एक नेमत का शक्र अदा कर सकूँ तो मेरे लिए मुमकिन नही हो सकता है मगर तेरे एहसान के

مِنْ اَنْعُمِكَ مَا اسْتَطَعْتُ ذٰلِكَ اِلَّا بِمَنِّكَ الْمُوْجِبِ عَلَيَّ بِهٖ

ज़रिए जिस पर शूक्र ए जदीद लाज़म हो जाएगा और ताज़ा तारीफ़ वाजिब हो जाएगी और अगर मै

شُكْرُكَ اَبَدًا جَدِيْدًا وَ ثَنَآءً طَارِفًا عَتِيْدًا اَجَلْ وَلَوْ حَرَصْتُ

और तमाम मख़लूक़ के शुमार करने वाले चाहें के तेरे इनाम को शुमार कर लों जो माज़ी और हाल

اَنَا وَ الْعَآدُّوْنَ مِنْ اَنَامِكَ اَنْ نُحْصِيَ مَدٰى اِنْعَامِكَ سَالِفِهٖ وَ

मे हैं तो हम उसके अदद को हसर के साथ नही गिन सकते और उस का एहसा नही कर सकते।

اٰنِفِهٖ مَا حَصَرْنَاهُ عَدَدًا وَلَاۤ اَحْصَيْنَاهُ اَمَدًا هَيْهَاتَ اَنّٰى ذٰلِكَ

हैयहात मेरे लिए कहाँ मुमकिन है जबके तूने ख़ुद ही अपनी नातिक़ किताब मे ख़बर दी हे और

وَ اَنْتَ الْمُخْبِرُ فِيْ كِتَابِكَ النَّاطِقِ وَ النَّبَاِ الصَّادِقِ وَ اِنْ

सच्ची ख़बर मे कहा है के अगर तू अल्लाह की नेमतां को शुमार करना चाहे तो उस का एहसान कर

تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا صَدَقَ كِتَابُكَ اَللّٰهُمَّ وَ اِنْبَآؤُكَ

सकोगे। तेरे किताब ने सच कहा है ऐ ख़ुदा ये वो बात है जो तेरे रसूलों और पैग़ामबरों पर इलहाम

وَبَلَّغَتْ اَنْبِيَآؤُكَ وَ رُسُلُكَ مَا اَنْزَلْتَ عَلَيْهِمْ مِنْ وَحْيِكَ وَ

हुई है और तेरी वही के ज़रिए उन पर नाज़ल हुई है और अपने दीन को उस वही और किताब के

شَرَعْتَ لَهُمْ وَ بِهِمْ مِنْ دِيْنِكَ غَيْرَ اَنِّيْ يَا اِلٰهِيْ اَشْهَدُ بِجُهْدِيْ

ज़रिए तशरी किया है। उसके अलावा ऐ मेरे ख़ुदा मै गवाही देता हूँ अपनी तमाम कोशिशों, कसद,

وَ جِدِّیْ وَ مَبْلَغِ طَاعَتِیْ وَ وُسْعِیْ وَ اَقُوْلُ مُؤْمِنًا مُوْقِنًا اَلْحَمْدُ

और मुकम्मल इताअत और कामिल वुसअत के साथ और ईमान व यक़ीन के साथ कहता हूँ हम्द

لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا فَیَكُوْنَ مَوْرُوْثًا وَ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ

उस ख़ुदा के लिए है जिस का कोई फ़रज़न्द नही है के जो वारिस हो जाए और उसकी बादशाहत मे

فِیْ مُلْكِهٖ فَیُضَادَّهٗ فِیْمَا ابْتَدَعَ وَ لَا وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ فَیُرْفِدَهٗ فِیْمَا

कोई शरीक नही है के उस की मुख़ालेफ़त करे उसमे जो उसने पैदा किया है और न कोई वली है

صَنَعَ فَسُبْحَانَهٗ سُبْحَانَهٗ لَوْ كَانَ فِیْهِمَا اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا

जो उस की सनअत मे उस की मदद करे वो पाक है वो पाक है। अगर आसमान व ज़मीन मे ख़ुदा

وَ تَفَطَّرَتَا سُبْحَانَ اللّٰهِ الْوَاحِدِ الْاَحَدِ الصَّمَدِ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ

के अलावा बहुत से ख़ुदा होते तो दोनो फ़ासिद हो जाते और टकरा जाते। पाक है वो ख़ुदा जो एक

وَ لَمْ یُوْلَدْ وَ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا یُعَادِلُ

है एकेला है बे नेयाज़ है जो न पैदा हुआ है न उसकी कोई औलाद है और कोई उस का हमसर भी

حَمْدَ مَلَآئِكَتِهِ الْمُقَرَّبِیْنَ وَ اَنْبِیَآئِهِ الْمُرْسَلِیْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ

नही है। हम्द है ख़ुदा के लिए ऐसी हम्द जो उस के मुक़र्रब मलाएका और मूर्सल नबियों की हम्द के

عَلٰى خِیَرَتِهٖ مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ وَ اٰلِهِ الطَّیِّبِیْنَ الطَّاهِرِیْنَ

मिस्ल है और दुरूद हो अल्लाह का उसके बरगज़ीदा मोहम्मद ख़ातेमुन्नबीईन पर और उनकी पाको

الْمُخْلَصِيْنَ وَسَلَّمَ

फिर इमाम ने अल्लाह से गिड़गिड़ाकर के उनकी आखों से आँसू बहते थे, कहा:

पाक़ीजा मुख़लिस आल पर और सलाम हो।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ اَخْشَاكَ كَاَنِّيْ اَرَاكَ وَاَسْعِدْنِيْ بِتَقْوٰيكَ وَلَا

ख़ुदाया मुझको वो ख़ौफ व ख़शीयत अता कर गोया मै तुझको देख रहा हूँ और मुझको अपने तक़वे

تُشْقِنِيْ بِمَعْصِيَتِكَ وَخِرْ لِيْ فِيْ قَضَآئِكَ وَبَارِكْ لِيْ فِيْ قَدَرِكَ

की सआदत अता कर और अपनी मासियत की बदबख़्ती न दे और अपने क़ज़ा व क़दर को मेरे

حَتّٰى لَا اُحِبَّ تَعْجِيْلَ مَا اَخَّرْتَ وَلَا تَاْخِيْرَ مَا عَجَّلْتَ اَللّٰهُمَّ

लिए ख़ैर व बरकत क़रार दे ताके मै उसमे जल्दी न चाहूँ जिस मे तू ताख़ीर करे और न ताख़ीर चाहूँ

اجْعَلْ غِنَايَ فِيْ نَفْسِيْ وَ الْيَقِيْنَ فِيْ قَلْبِيْ وَ الْاِخْلَاصَ فِيْ

उसमे जिसमे तू जल्दी करे। ख़ुदाया मेरी मालदारी मेरे नफ़स मे क़रार दे और मेरे दिल मे यक़ीन

عَمَلِيْ وَالنُّوْرَ فِيْ بَصَرِيْ وَالْبَصِيْرَةَ فِيْ دِيْنِيْ وَمَتِّعْنِيْ بِجَوَارِحِيْ

क़रार दे और अमल मे ख़ुलूस दे और निगाह मे नूरानियत दे और दीन मे बसीरत अता कर और

وَاجْعَلْ سَمْعِيْ وَبَصَرِيَ الْوَارِثَيْنِ مِنِّيْ وَانْصُرْنِيْ عَلٰى مَنْ

मेरे आज़ा व ज़वारे को बहरामंद कर और मेरी आँख और मेरे कान को मेरा वारिस बना दे और

ظَلَمَنِيْ وَاَرِنِيْ فِيْهِ ثَاْرِيْ وَمَاٰرِبِيْ وَاَقِرَّ بِذٰلِكَ عَيْنِيْ اَللّٰهُمَّ

मेरी मदद कर उसके मुक़ब्ले मे जो मुझपर ज़ुल्म करे और मुझको दिखा दे मेरा इन्तेक़ाम और

اكْشِفْ كُرْبَتِيْ وَاسْتُرْ عَوْرَتِيْ وَاغْفِرْ لِيْ خَطِيْئَتِيْ وَ اخْسَأْ

तसल्लुत और उसके ज़रिए ख़ुनकीए चश्म अता कर। ख़ुदाया मेरे ग़म को दूर करदे। और मेरे ऐब

شَيْطَانِيْ وَفُكَّ رِهَانِيْ وَ اجْعَلْ لِيْ يَا اِلٰهِي الدَّرَجَةَ الْعُلْيَا فِي

को छुपा ले और मेरी ग़लती को माफ़ कर दे और मुझसे शैतान को हटा दे और मेरी गिरफ़तारी को

الْاٰخِرَةِ وَ الْاُوْلٰى اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا خَلَقْتَنِيْ فَجَعَلْتَنِيْ

छुडा दे और ऐ मेरे ख़ुदा मेरे लिए आख़िरत और दुनिया मे बुलंद दरजा क़रार दे। ख़ुदाया तेरे लिए

سَمِيْعًا بَصِيْرًا وَلَكَ الْحَمْدُ كَمَا خَلَقْتَنِيْ فَجَعَلْتَنِيْ خَلْقًا سَوِيًّا

हम्द है जैसा के तूने मुझ को पैदा किया फिर मुझ को सुनने वाला और देखने वाला बनाया और तेरे

رَحْمَةً بِيْ وَقَدْ كُنْتَ عَنْ خَلْقِيْ غَنِيًّا رَبِّ بِمَا بَرَأْتَنِيْ فَعَدَّلْتَ

लिए हम्द है जैसा के तूने मुझको पैदा किया पस तूने मेरी ख़िलक़त को बहतर बनाया अपनी रहमत

فِطْرَتِيْ رَبِّ بِمَا اَنْشَاْتَنِيْ فَاَحْسَنْتَ صُوْرَتِيْ رَبِّ بِمَا

से जब के तू मेरी ख़िलक़त से मुसतग़ना था। ख़ुदाया तूने मुझ को पैदा और मेरी तबियत को

اَحْسَنْتَ اِلَيَّ وَفِيْ نَفْسِيْ عَافَيْتَنِيْ رَبِّ بِمَا كَلَاْتَنِيْ وَوَفَّقْتَنِيْ

एतेदाल बख़्शा। ख़ुदाया तूने मुझको पैदा किया पस मेरी सूरत को अच्छा बनाया। ख़ुदाया तूने

رَبِّ بِمَا اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَهَدَيْتَنِيْ رَبِّ بِمَا اَوْلَيْتَنِيْ وَمِنْ كُلِّ

मुझपर एहसान किया और मेरे नफ़्स को तूने बचाया। ख़ुदाया तूने मुझको बचाया और मुझ को

خَيْرٍ اَعْطَيْتَنِيْ رَبِّ بِمَا اَطْعَمْتَنِيْ وَ سَقَيْتَنِيْ رَبِّ بِمَا

तौफ़ीक़ दी। ख़ुदाया तूने मुझ पर इनाम किया। पस तूने मेरी हिदायत की। ख़ुदाया तूने मुझको

اَغْنَيْتَنِيْ وَ اَقْنَيْتَنِيْ رَبِّ بِمَا اَعَنْتَنِيْ وَ اَعْزَزْتَنِيْ رَبِّ بِمَا

बरगज़ीदा किया और हर भलाई मुझको अता की। ख़ुदाया तूने मुझ को खिलाया और पिलाया।

اَلْبَسْتَنِيْ مِنْ سِتْرِكَ الصَّافِيْ وَ يَسَّرْتَ لِيْ مِنْ صُنْعِكَ الْكَافِيْ

ख़ुदाया तूने मुझको मालदार किया और ग़नी बनाया। ख़ुदाया तूने मेरी मदद की और इज़्ज़त दी।

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَعِنِّيْ عَلٰى بَوَآئِقِ الدُّهُوْرِ وَ

ख़ुदाया तूने मुझको ख़ास करामत का लिबास पिनहाया और काफ़ी हद तक मसनूआत को मेरी

صُرُوْفِ اللَّيَالِيْ وَ الْاَيَّامِ وَ نَجِّنِيْ مِنْ اَهْوَالِ الدُّنْيَا وَ كُرُبَاتِ

दसतरस मे रखा। दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरी मदद कर राज़गार

الْاٰخِرَةِ وَ اكْفِنِيْ شَرَّ مَا يَعْمَلُ الظَّالِمُوْنَ فِي الْاَرْضِ اَللّٰهُمَّ

की सख़ती मे और शबो राज़ की तब्दीली मे और मुझको दुनिया के ख़ौफ़ और आख़िरत के

مَا اَخَافُ فَاكْفِنِيْ وَ مَا اَحْذَرُ فَقِنِيْ وَ فِيْ نَفْسِيْ وَ دِيْنِيْ

मसाएब से नज़ात अता कर और काफ़ी हो जा ज़मीन मे ज़ालिमों के शर से। ख़ुदाया जिससे मै

فَاحْرُسْنِيْ وَ فِيْ سَفَرِيْ فَاحْفَظْنِيْ وَ فِيْ اَهْلِيْ وَ مَالِيْ فَاخْلُفْنِيْ

डरता हूँ उसके लिए काफ़ी हो जा और जिससे मुझको ख़ाफ़ है बचा ले मुझको और मेरे नफ़्स को

وَ فِیْ مَا رَزَقْتَنِیْ فَبَارِكْ لِیْ وَ فِیْ نَفْسِیْ فَذَلِّلْنِیْ وَ فِیْ اَعْیُنِ

और मेरे नफ़्स को और मेरे दीन को बचा ले और मेरे सफ़र मे मेरी हिफ़ाज़त कर और अहलो

النَّاسِ فَعَظِّمْنِیْ وَمِنْ شَرِّ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ فَسَلِّمْنِیْ وَبِذُنُوْبِیْ

अयाल मे मेरी ज़िम्मेदारी अदा कर और जो तूने मुझको रिज़्क दिया है उसमे बरकत दे और मेरे

فَلَا تَفْضَحْنِیْ وَبِسَرِیْرَتِیْ فَلَا تُخْزِنِیْ وَبِعَمَلِیْ فَلَا تَبْتَلِنِیْ وَ

नज़दीक मुझको ज़लील रख और लोगा की निगाह मे मुझको अज़मत अता कर और जिन व

نِعَمَكَ فَلَا تَسْلُبْنِیْ وَ اِلٰی غَیْرِكَ فَلَا تَكِلْنِیْ اِلٰهِیْ اِلٰی مَنْ

इनसान के शर से मुझ को बचा ले और मेरे गुन्हाओं की वहज से मुझ को रूस्वा न कर और मेरे

تَكِلُنِیْ اِلٰی قَرِیْبٍ فَیَقْطَعُنِیْ اَمْ اِلٰی بَعِیْدٍ فَیَتَجَهَّمُنِیْ اَمْ اِلَی

बातनी ख़यालात से ज़लील न कर और न शाईस्ता अमल मे मुबतेला न कर और अपनी नेमत को

الْمُسْتَضْعَفِیْنَ لِیْ وَ اَنْتَ رَبِّیْ وَمَلِیْكُ اَمْرِیْ اَشْكُوْ اِلَیْكَ

न छीन और अपने अलावा की तरफ़ मुझको न डाल दे। ख़ुदाया तू मुझको किस के हवाले करेगा

غُرْبَتِیْ وَبُعْدَ دَارِیْ وَهَوَانِیْ عَلٰی مَنْ مَلَّكْتَهٗ اَمْرِیْ اِلٰهِیْ فَلَا

किसी क़रीब की तरफ़ जो क़ते ताल्लुक करे या बईद की तरफ़ जो मुझसे नफ़रत कर दे या मुझे

تُحْلِلْ عَلَیَّ غَضَبَكَ فَاِنْ لَمْ تَكُنْ غَضِبْتَ عَلَیَّ فَلَا اُبَالِیْ

कमज़ोर बना देने वालों की तरफ़ जबके तू मेरा रब है और मेरे अम्र का मालिक है। मै तेरी तरफ़

سُبْحَانَكَ غَيْرَ اَنَّ عَافِيَتَكَ اَوْسَعُ لِيْ فَاَسْئَلُكَ يَا رَبِّ بِنُوْرِ

अपनी ग़ुरबत और घर की दूरी और उसकी नज़र मे ज़िल्लत की जिसको तूने मेरे अम्र का मालिक

وَجْهِكَ الَّذِيْ اَشْرَقَتْ لَهُ الْاَرْضُ وَ السَّمٰوَاتُ وَ كُشِفَتْ

बनाया है शिकायत करता हूँ मेरे ख़ुदा मुझपर अपना ग़ज़ब न नाज़ल व्ार अगर तूने मुझपर ग़ज़ब

بِهِ الظُّلُمَاتُ وَ صَلُحَ بِهٖ اَمْرُ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ اَنْ لَا

न किया तो मै तेरे अलावा की परवाह भी नही करूँगा तू पाक है तेरी आफ़ियत मेरी लिए वसी है

تُمِيْتَنِيْ عَلٰى غَضَبِكَ وَ لَا تُنْزِلَ بِيْ سَخَطَكَ لَكَ الْعُتْبٰى لَكَ

तो मै तुझसे सवाल करता हूँ ऐ परवरदिगार तेरी ज़ात के नूर के वास्ते से जिससे आसमानो ज़मीन

الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى قَبْلَ ذٰلِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ رَبَّ الْبَلَدِ

चमक रहे हैं और जिस के ज़रिए तारीकियाँ दूर की गई हैं और अव्वलीन व आख़ेरीन के अम्र की

الْحَرَامِ وَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَ الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ الَّذِيْ اَحْلَلْتَهُ

इसलाह हुई है के तू मुझको अपने ग़ज़ब पर मौत न दे और मेरे ऊपर अपना ग़ुस्सा न कर तेरी पनाह

الْبَرَكَةَ وَ جَعَلْتَهُ لِلنَّاسِ اَمْنًا يَا مَنْ عَفَا عَنْ عَظِيْمِ

है तेरी पनाह है। यहाँ तक के तू राज़ी हो जाए अज़ाब के क़ब्ल। सिवाए तेरे कोई माबूद नही है तू मक्के,

الذُّنُوْبِ بِحِلْمِهٖ يَا مَنْ اَسْبَغَ النَّعْمَاۤءَ بِفَضْلِهٖ يَا مَنْ اَعْطٰى

मश्अरल हराम और काबे का परवरदिगार है तूने उसको बरकत दी है और लोगों के लिए अम्नो

الْجَزِيْلَ بِكَرَمِهٖ يَا عُدَّتِيْ فِيْ شِدَّتِيْ وَ يَا صَاحِبِيْ فِيْ وَحْدَتِيْ يَا

सुकून बनाया है। ऐ वो ख़ुदा जिसने अज़ीम गुन्हाओं को अपने इल्म से माफ़ किया है और ऐ वो

غِيَاثِيْ فِيْ كُرْبَتِيْ يَا وَلِيِّيْ فِيْ نِعْمَتِيْ يَا اِلٰهِيْ وَ اِلٰهَ اٰبَآئِيْ اِبْرَاهِيْمَ

ख़ुदा जिसने अपने फ़ज़्ल से नेमतों को मुकम्मल किया है। ऐ वो ख़ुदा जिसने अपने करम से बेहतर

وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ رَبَّ جَبْرَئِيْلَ وَ مِيْكَائِيْلَ وَ

अता किया है ऐ मेरी सख़्ती मे मेरा ज़ख़ीरा ऐ मेरी तनहाई मे मोनिसो ऐ मेरी मुसीबत मे फ़रयाद रस।

اِسْرَافِيْلَ وَ رَبَّ مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَ اٰلِهِ الْمُنْتَجَبِيْنَ وَ

ऐ मेरे वलीए नेमत ऐ मेरे ख़ुदा और मेरे आबाऐ ताहेरीन, इब्राहीमो इस्माईल, इसहाक, याक़ूब के

مُنْزِلَ التَّوْرٰيةِ وَ الْاِنْجِيْلِ وَ الزَّبُوْرِ وَ الْفُرْقَانِ وَ مُنَزِّلَ

ख़ुदा और जिब्रईल व मीकाईल व इस्राफ़ील के परवरदिगार और ख़ातिमुन्न-बीईन मोहम्मद और

كٓهٰيٰعٓصٓ وَ طٰهٰ وَ يٰسٓ وَ الْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ اَنْتَ كَهْفِيْ حِيْنَ

उनकी आले पाक के परवरदिगार और ऐ तौरेत, इन्जील, ज़ुबूर और क़ूरआन के नाज़ल करने

تُعْيِيْنِيْ الْمَذَاهِبُ فِيْ سَعَتِهَا وَ تَضِيْقُ بِيَ الْاَرْضُ بِرُحْبِهَا وَ

वाले और काफ-हा-या-एन-स्वाद, ताहा, यासीन, और क़ुरआने हकीम के नाज़ल करने वाले तू

لَوْلَا رَحْمَتُكَ لَكُنْتُ مِنَ الْهَالِكِيْنَ وَ اَنْتَ مُقِيْلُ عَثْرَتِيْ وَ

मेरी पनाह है जब ज़िन्दगानी की राहें अपनी वुसअतो के साथ मुश्किल हो जाएं और ज़मीन अपनी

لَوْلَا سَتْرُكَ اِيَّايَ لَكُنْتُ مِنَ الْمَفْضُوحِيْنَ وَ اَنْتَ مُؤَيِّدِيْ

पहनाईयों के साथ तंग हो जाए और अगर तेरी रहमत न होती तो मै हलाक होने वालों मे हो जाता

بِالنَّصْرِ عَلٰى اَعْدَآئِيْ وَ لَوْلَا نَصْرُكَ اِيَّايَ لَكُنْتُ مِنَ

और तू मेरी लग़जिश से दर गुज़र करने वाला है और अगर तेरी पोशिश न होती तो मै रूसवा हो

الْمَغْلُوْبِيْنَ يَا مَنْ خَصَّ نَفْسَهٗ بِالسُّمُوِّ وَ الرِّفْعَةِ فَاَوْلِيَآئُهٗ

जाने वालों मे हो जाता और तू मेरे दुश्मनो के मुक़ाबले मे मेरा मददगार है और अगर तेरी मदद न

بِعِزِّهٖ يَعْتَزُّوْنَ يَا مَنْ جَعَلَتْ لَهُ الْمُلُوْكُ نِيْرَ الْمَذَلَّةِ عَلٰى

होती तो मै मग़लूब लोगों मे से होता। ऐ वो ख़ुदा जिसने अपने को बुलंदी और रफअत से महफ़ूज़

اَعْنَاقِهِمْ فَهُمْ مِنْ سَطَوَاتِهٖ خَآئِفُوْنَ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ

किया है तो उसके वली उसकी इज़्ज़त के ज़रिए इज़्ज़तदार हो गए हैं। ऐ वो ख़ुदा जिसकी बारगाह

الْاَعْيُنِ وَ مَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ وَ غَيْبَ مَا تَاْتِيْ بِهِ الْاَزْمِنَةُ وَ

मे बादशा ज़िल्लत को अपनी गरदनों मे डाले हुए हैं और ख़ुदा की सितवतो हुकूमत से ख़ाफ़ज़दा हैं

الدُّهُوْرُ يَا مَنْ لَا يَعْلَمُ كَيْفَ هُوَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَا يَعْلَمُ مَا

वो निगाहों की ख़यानत को और दिलों के पोशीदा राज़ो को जानता है और राज़गार के तमाम ग़ाएब

هُوَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَا يعَلْمُ مَا يَعْلَمُهٗ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ كَبَسَ

को अच्छी तरह जानता है। ऐ वो ज़ात जिसके बारे मे उस के अलावा काई नही जानता है के कैसा

الْاَرْضَ عَلَى الْمَآءِ وَ سَدَّ الْهَوَآءَ بِالسَّمَآءِ يَا مَنْ لَهُ اَكْرَمُ

है वो क्या है कोई नही जानता सिवाए उसके। ऐ वो जिसको सिवाए उसके कोई नही जानता है ऐ

الْاَسْمَآءِ يَا ذَا الْمَعْرُوْفِ الَّذِىْ لَا يَنْقَطِعُ اَبَدًا يَا مُقَيِّضَ

वो ख़ुदा जिसने ज़मीन को पानी पर बिछाया और हवा को आसमान से रोक दिया है ऐ वो ज़ात

الرَّكْبِ لِيُوْسُفَ فِي الْبَلَدِ الْقَفْرِ وَ مُخْرِجَهُ مِنَ الْجُبِّ وَ

जिसके करीम नाम हैं। ऐ वो नेकी वाले जिसकी नेकी कभी ख़त्म नही होती है। ऐ क़ाफ़ेला के

جَاعِلَهُ بَعْدَ الْعُبُوْدِيَّةِ مَلِكًا يَا رَآدَّهُ عَلٰى يَعْقُوْبَ بَعْدَ اَنِ

रूकने वाले यूसुफ़ की नजात के लिए सहरा व बियाबान मे और कुवें से उन को निकालने वाले

ابْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ يَا كَاشِفَ الضُّرِّ

और ग़ुलामी के बाद उनको बादशाह बनाने वाले ऐ यूसुफ़ को याक़ूब के पास वापस करनेवाले ग़म

وَالْبَلْوٰى عَنْ اَيُّوْبَ وَ مُمْسِكَ يَدَىْ اِبْرَاهِيْمَ عَنْ ذَبْحِ ابْنِهٖ

से उनकी आँखो के सफ़ेद हो जाने के बाद जब के वो उसे बरदाश्त किए हुए थे। ए अय्यूब से रंजो

بَعْدَ كِبَرِ سِنِّهٖ وَفَنَآءِ عُمُرِهٖ يَا مَنِ اسْتَجَابَ لِزَكَرِيَّا فَوَهَبَ

ग़म को दूर करनेवाले और ऐ इब्राहीम के हाथ को उन के बेटे के ज़िबह से रोकने वाले कबीरूल

لَهُ يَحْيٰى وَلَمْ يَدَعْهُ فَرْدًا وَحِيْدًا يَا مَنْ اَخْرَجَ يُوْنُسَ مِنْ

सिन हो जाने वाले ग़म के इनतेहा तक पहुँचने के बाद ऐ वो ख़ुदा जिसने ज़करीया की दुआ क़ुबूल

بَطْنِ الْحُوْتِ يَا مَنْ فَلَقَ الْبَحْرَ لِبَنِيْ اِسْرَآئِيْلَ فَاَنْجَاهُمْ وَ

की और यहया जैसा फ़रज़न्द अता किया और उनको अकेला नही छोड़ा। ऐ वो ख़ुदा जिसने यूनुस

جَعَلَ فِرْعَوْنَ وَ جُنُوْدَهٗ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ يَا مَنْ اَرْسَلَ الرِّيَاحَ

को शिकमे माही से निकाला। ऐ वो ख़ुदा जिसने बनी इस्राईल के लिए दरया को शिग़ाफ़ता किया

مُبَشِّرَاتٍ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ يَا مَنْ لَمْ يَعْجَلْ عَلٰى مَنْ عَصَاهُ

पस उनको नजात दी और फिरऔन को मै लश्कर के डूबने वालों मे बना दिया। ऐ वो ख़ुदा जिसने

مِنْ خَلْقِهٖ يَا مَنِ اسْتَنْقَذَ السَّحَرَةَ مِنْ بَعْدِ طُوْلِ الْجُحُوْدِ وَ

हवाओं को अपनी रहमत बाराँ की बशारत के लिए भेजा। ऐ वो जिसने अपनी मख़लूक़ की

قَدْ غَدَوْا فِيْ نِعْمَتِهٖ يَاْكُلُوْنَ رِزْقَهٗ وَ يَعْبُدُوْنَ غَيْرَهٗ وَ قَدْ

मासियत पर जल्दी नही की। ऐ वो जिस ने जादूगरों को तवील कुफ़्र व इन्कार के बाद नजात देदी

حَآدُّوْهُ وَ نَآدُّوْهُ وَ كَذَّبُوْا رُسُلَهٗ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا بَدِيْءُ يَا بَدِيْعُ

जबके वो बराबर नेमतों मे सूबह करते थे उसका रिज़्क खाते थे और ग़ैर की इबादत करते थे। उन

لَا نِدَّ لَكَ يَا دَآئِمًا لَا نَفَادَ لَكَ يَا حَيًّا حِيْنَ لَا حَيَّ يَا مُحْيِيَ

लोगों ने दुश्मनी की शिर्क किया और उनके रसूलों की तकज़ीब की। ऐ ख़ुदा ऐ ख़ुदा ऐ पैदा करने

الْمَوْتٰى يَا مَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ يَا مَنْ قَلَّ

वाले ऐ इजाद करने वाले तेरा कोई मिस्ल नही है। ऐ ज़ाते दाएम जिसके लिए इनतेहा नही है ऐ

لَهُ شُكْرِي فَلَمْ يَحْرِمْنِي وَ عَظُمَتْ خَطِيئَتِي فَلَمْ يَفْضَحْنِي

सबसे पहले ज़िन्दा ऐ मुर्दों के ज़िन्दा करने वाले ऐ वो ख़ुदा जो निगराँ है हर नफ़्स पर उसके कसब

وَ رَآنِي عَلَى الْمَعَاصِي فَلَمْ يَشْهَرْنِي يَا مَنْ حَفِظَنِي فِي صِغَرِي

के लिए। ऐ वो ख़ुदा जिसके लिए मेरा शुक्र कम हुआ तो उसने मुझको महरूम नही किया और मेरी

يَا مَنْ رَزَقَنِي فِي كِبَرِي يَا مَنْ اَيَادِيهِ عِنْدِي لَا تُحْصَى وَ نِعَمُهُ

ग़लती अजील हुई तो उसने मुझको रूस्वा नही किया और मुझको मासियत करते हुए देखा तो

لَا تُجَازَى يَا مَنْ عَارَضَنِي بِالْخَيْرِ وَ الْاِحْسَانِ وَ عَارَضْتُهُ

उसने मशहूर नही किया। ऐ वो ख़ुदा जिसने मुझको बचपन मे महफ़ूज़ किया। ऐ वो ख़ुदा जिसने

بِالْاِسَآئَةِ وَ الْعِصْيَانِ يَا مَنْ هَدَانِي لِلْاِيمَانِ مِنْ قَبْلِ اَنْ

बुढ़ापे मे मुझको रिज़्क दिया। ऐ वो ख़ुदा जिसकी नेमतों को शुमार नही किया जा सकता और

اَعْرِفَ شُكْرَ الْاِمْتِنَانِ يَا مَنْ دَعَوْتُهُ مَرِيضًا فَشَفَانِي وَ

महेरबानीयों की तारीफ़ नही की जा सकती। ऐ वो ख़ुदा जिसने मुझपर ख़ैर व एहसान किया और

عُرْيَانًا فَكَسَانِي وَ جَآئِعًا فَاَشْبَعَنِي وَ عَطْشَانَ فَاَرْوَانِي وَ

मैने उसके साथ बूराई और ईसयान किया। ऐ वो ख़ुदा जिसने मुझ को ईमान की हिदायत की मेरे

ذَلِيلًا فَاَعَزَّنِي وَ جَاهِلًا فَعَرَّفَنِي وَ وَحِيدًا فَكَثَّرَنِي وَ غَائِبًا

एहसान का शुक्र पहुँचाने से क़ब्ल ऐ वो ख़ुदा जिसको मैने बीमार हो कर पुकारा तो उसने मुझको

فَرَدَّنِیْ وَ مُقِلًّا فَاَغْنَانِیْ وَ مُنْتَصِرًا فَنَصَرَنِیْ وَ غَنِيًّا فَلَمْ

शिफ़ा दी और बरैहना हो कर पुकारा तो उसने लिबास अता किया भूक की हालत मे पुकारा तो सेर

يَسْلُبْنِیْ وَ اَمْسَكْتُ عَنْ جَمِيْعِ ذٰلِكَ فَابْتَدَاَنِیْ فَلَكَ الْحَمْدُ وَ

किया, प्यास की हालत मे बुलाया तो सेराब किया ज़िल्लत की हालत मे बुलाया तो इज़्ज़त दी

الشُّكْرُ يَا مَنْ اَقَالَ عَثْرَتِیْ وَ نَفَّسَ كُرْبَتِیْ وَ اَجَابَ دَعْوَتِیْ وَ

जाहिल होकर बुलाया तो आरिफ़ बना दिया अकेले हो कर बुलाया तो कसीर बना दिया, मुसाफ़र

سَتَرَ عَوْرَتِیْ وَ غَفَرَ ذُنُوْبِیْ وَ بَلَّغَنِیْ طَلِبَتِیْ وَ نَصَرَنِیْ عَلٰی عَدُوِّیْ

हो कर पुकारा तो मुझको लौटा दिया, बे माल हो बुलाया तो मालदार बना दिया, मदद तलब की तो

وَ اِنْ اَعُدَّ نِعَمَكَ وَ مِنَنَكَ وَ كَرَائِمَ مِنَحِكَ لَا اُحْصِيْهَا يَا

मदद की मालदारी मे बुलाया तो उसने नही छीना और अगर मै दुआ करने से रूक गया तो उसने

مَوْلَایَ اَنْتَ الَّذِیْ مَنَنْتَ اَنْتَ الَّذِیْ اَنْعَمْتَ اَنْتَ الَّذِیْ

इब्तेदा करदी की पस तेरे लिए हम्द व शुक्र है। ऐ वो ख़ुदा जिसने मेरी लगिज़श से दरगुज़र किया

اَحْسَنْتَ اَنْتَ الَّذِیْ اَجْمَلْتَ اَنْتَ الَّذِیْ اَفْضَلْتَ اَنْتَ

और मेरी मुसीबत को दूर किया और मेरी दुआ को क़ुबूल किया और मेरे ऐब को छुपाया और मेरे

الَّذِیْ اَكْمَلْتَ اَنْتَ الَّذِیْ رَزَقْتَ اَنْتَ الَّذِیْ وَفَّقْتَ اَنْتَ

गुन्हाओं को बख़्श दिया और मेरी हाजतों को अता किया और मेरे दूश्मनो पर मेरी मदद की और

الَّذِىٓ اَعْطَيْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ اَغْنَيْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ اَقْنَيْتَ

अगर मै तेरी नेमत और एहसान और करम की बारिश को शुमार करूँ तो एहसा नही कर सकता।

اَنْتَ الَّذِىٓ اٰوَيْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ كَفَيْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ هَدَيْتَ

ऐ मेरे मौला तूने ही एहसान किया है, तूने ही नेमत दी है तूने ही नेकी से नवाज़ा है, तू ने ही ख़ूबी

اَنْتَ الَّذِىٓ عَصَمْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ سَتَرْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ غَفَرْتَ

अता की है, तूने ही फ़ज़ीलत दी है तूने ही मुकम्मल किया है, तूने ही रिज़्क दिया है, तूने ही तौफ़ीक़

اَنْتَ الَّذِىٓ اَقَلْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ مَكَّنْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ اَعْزَزْتَ

दी है, तूने ही अता किया है, तूने ही मालदार बनाया है, तू ने ही सरमायादार बनाया है, तूने ही पनाह

اَنْتَ الَّذِىٓ اَعَنْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ عَضَدْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ اَيَّدْتَ

दी हे, तू ही काफ़ी हूआ है, तूने ही हिदायत की है , तूने ही दर गुज़र किया है, तूने ही क़ुद्रत दी है, तूने

اَنْتَ الَّذِىٓ نَصَرْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ شَفَيْتَ اَنْتَ الَّذِىٓ عَافَيْتَ

ही इज़्ज़त दी है, तूने ही मदद की है, तूने ही इयानत की है तूने ही ताईद की है, तूने ही नुस्रत की है,

اَنْتَ الَّذِىٓ اَكْرَمْتَ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ فَلَكَ الْحَمْدُ دَآئِمًا

तूने ही शिफ़ा दी है, तूने ही आफ़ियत दी है, तू ही वो है जिसने मुकरर्म किया है, तू बुलंद है, बरकत

وَلَكَ الشُّكْرُ وَاصِبًا اَبَدًا ثُمَّ اَنَا يَآ اِلٰهِىْ الْمُعْتَرِفُ بِذُنُوْبِىْ

वाला है , तेरे लिए हम्द दाएम है और तेरे लिए मुसलसल शूक्र है फिर मै ऐ मेरे माबूद अपने गुन्हाओं

فَاغْفِرْ هَالِيْ اَنَا الَّذِيْ اَسَأْتُ اَنَا الَّذِيْ اَخْطَأْتُ اَنَا الَّذِيْ

का एतेराफ़ करने वाला हूँ तू उन्हें बख़्श दे। मै ही वो हूँ जिसने बुराई की मैने ही ख़ता की है मैने ही

هَمَمْتُ اَنَا الَّذِيْ جَهِلْتُ اَنَا الَّذِيْ غَفَلْتُ اَنَا الَّذِيْ سَهَوْتُ

गुनाह का एहतेमाम किया है। मै ही वो जाहिल हूँ। मै ही ग़ाफ़ल हूँ मै ही भोला हूँ मैने ही एहतेमाल

اَنَا الَّذِيْ اعْتَمَدْتُ اَنَا الَّذِيْ تَعَمَّدْتُ اَنَا الَّذِيْ وَعَدْتُ وَ اَنَا

किया है। मैने ही उम्दा ख़्वाहिश पर अमल किया है। मैने ही वादा किया है और मैने ही मुखालेफ़त

الَّذِيْ اَخْلَفْتُ اَنَا الَّذِيْ نَكَثْتُ اَنَا الَّذِيْ اَقْرَرْتُ اَنَا الَّذِيْ

की है। मैने ही अहेद तोड़ा है मैने ही इक़रार किया है मैने ही तेरी नेमत का अपने ऊपर एतेराफ़ किया

اعْتَرَفْتُ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَ عِنْدِيْ وَ اَبُوْءُ بِذُنُوْبِيْ فَاغْفِرْ هَالِيْ

है और फिर गुनाहों की तरफ़ रूजू किया है तो तू मुझको बख़्श दे। ऐ वो ख़ुदा जिसको बनदों का

يَا مَنْ لَا تَضُرُّهُ ذُنُوْبُ عِبَادِهٖ وَ هُوَ الْغَنِيُّ عَنْ طَاعَتِهِمْ وَ

गुनाह नुक़सान नही पहुँचाता वो बन्दों की इताअत से मुसतग़ना है और तौफ़ीक़ देनेवाला है अपनी

الْمُوَفِّقُ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْهُمْ بِمَعُوْنَتِهٖ وَ رَحْمَتِهٖ فَلَكَ

मदद व रहमत से उस को जो अमले सालेह अनजाम दे, पस हम्द तेरे ही लिए है। ऐ मेरे माबूद ऐ

الْحَمْدُ اِلٰهِيْ وَ سَيِّدِيْ اِلٰهِيْ اَمَرْتَنِيْ فَعَصَيْتُكَ وَ نَهَيْتَنِيْ

मेरे सरदार मेरे ख़ुदा तूने हुकुम दिया तो मैने तेरी मासियत की, तूने मुझको रोका तो मैने इरतेकाबे

فَارْتَكَبْتُ نَهْيَكَ فَاَصْبَحْتُ لَا ذَا بَرَآئَةٍ لِّى فَاَعْتَذِرُ وَلَا ذَا

गुनाह किया तो मै ऐसा हो गया के बराअत वाला नही हूँ के उज्र करूँ और न क़ुव्वत वाला हूँ के

قُوَّةٍ فَاَنْتَصِرُ فَبِاَىِّ شَىْءٍ اَسْتَقْبِلُكَ يَا مَوْلَاىَ اَبِسَمْعِىْ اَمْ

मदद तलब करूँ तो अब किस चीज़ के ज़रिए तेरे सामने आऊँ। ऐ मेरे मौला अपनी समात के

بِبَصَرِىْ اَمْ بِلِسَانِىْ اَمْ بِيَدِىْ اَمْ بِرِجْلِىْ اَلَيْسَ كُلُّهَا نِعَمَكَ

ज़रिए या अपनी बसारत के ज़रिए अपनी ज़बान के ज़रिए या अपने हाथ के ज़रिए या अपने पैर के

عِنْدِىْ وَبِكُلِّهَا عَصَيْتُكَ يَا مَوْلَاىَ فَلَكَ الْحُجَّةُ وَالسَّبِيْلُ

ज़रिए किया। ये सब के सब मेरे पास तेरी नेमत नही है और क्या सब से मैने तेरी नाफ़रमानी नही

عَلَىَّ يَا مَنْ سَتَرَنِىْ مِنَ الْاٰبَآءِ وَالْاُمَّهَاتِ اَنْ يَزْجُرُوْنِىْ وَمِنَ

की है। ऐ मेरे मौला तेरे लिए मोहब्बत है और राह है मूझ पर ऐ वो ख़ुदा जिसने मुझको माँ बाप के

الْعَشَائِرِ وَ الْاِخْوَانِ اَنْ يُعَيِّرُوْنِىْ وَ مِنَ السَّلَاطِيْنِ اَنْ

जज़रो ताबीख़ से बचाया और क़बीले वालां और भाईयों के तानो से मुझको बचाया और बादशाहों

يُعَاقِبُوْنِىْ وَلَوِ اطَّلَعُوْا يَا مَوْلَاىَ عَلٰى مَا اطَّلَعْتَ عَلَيْهِ مِنِّىْ

के इताब से बचाया के अगर वो ऐ मेरे मौला जिस पर तू मेरे बारे मे जानता है तो वो मुझ को मोहलत

اِذًا مَّا اَنْظَرُوْنِىْ وَلَرَفَضُوْنِىْ وَقَطَعُوْنِىْ فَهَا اَنَا ذَا يَا اِلٰهِىْ بَيْنَ

न देते और मुझको छोड़ देते और कते तअल्लुक़ कर लेते तो मै वही गुनाहगार बन्दा हूँ। ऐ ख़ुदा तेरे

يَدَيْكَ يَا سَيِّدِي خَاضِعٌ ذَلِيلٌ حَصِيرٌ حَقِيرٌ لَا ذُوْ بَرَآئَةٍ

हुज़ूर मे ऐ मेरे सरदार गरदन झुकाए हुए ज़लील आज़ीज़ और नाचीज़ हूँ बराएत वाला नही हूँ के

فَاعْتَذِرُ وَلَا ذُوْقُوَّةٍ فَأَنْتَصِرَ وَلَا حُجَّةٍ فَأَحْتَجُّ بِهَا وَلَا قَائِلٌ

इज्ज़ कर सकूँ और न क़ुव्वत वाला हूँ के मदद तलब कर सकूँ और न हुज्ज़त पेश कर सकूँ और न

لَمْ اَجْتَرِحْ وَلَمْ اَعْمَلْ سُوْٓءً وَمَا عَسَى الْجُحُوْدُ وَلَوْ جَحَدْتُ

ये कहने वाला हूँ के मैने ये गुनाह नही किया और ये बुरा अमल अंजाम नही दिया है और इनकार

يَا مَوْلَايَ يَنْفَعُنِي كَيْفَ وَاَنّٰى ذٰلِكَ وَجَوَارِحِي كُلُّهَا شَاهِدَةٌ

मुमकिन भी नही है और अगर इनकार करूँ ए मेरे मौला तो वो मेरे लिए क्या कर और कैसे फ़ाएदे

عَلَيَّ بِمَا قَدْ عَمِلْتُ وَعَلِمْتُ يَقِيْنًا غَيْرَ ذِي شَكٍّ اَنَّكَ

मन्द हो सकता है जबके आज़ा व जवारेह कुल के कुल मेरे ऊपर गवाह हैं जो मैने किया है और

سَآئِلِي مِنْ عَظَائِمِ الْاُمُوْرِ وَاَنَّكَ الْحَكَمُ الْعَدْلُ الَّذِي لَا

बेग़ैर शक के यक़ीनी तौर पर जानता हूँ तू मेरे गुनाहाने कबीरा के बारे मे सवाल करने वाला है।

تَجُوْرُ وَعَدْلُكَ مُهْلِكِي وَمِنْ كُلِّ عَدْلِكَ مَهْرَبِي فَاِنْ تُعَذِّبْنِي

और तू हाकिम है, आदिल है तू ज़ुल्म नही करता और तेरी अदालत ही मुझको हलाक करने वाली

يَا اِلٰهِي فَبِذُنُوْبِي بَعْدَ حُجَّتِكَ عَلَيَّ وَاِنْ تَعْفُ عَنِّي فَبِحِلْمِكَ وَ

है और तेरे हर अदल ही से मै भाग रहा हूँ, पस अगर तू मुझपर अज़ाब करेगा। ऐ मेरे माबूद तू ये

جُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ

मेरे गुनाहों की वजह से होगा तेरी हुज़्ज़त के मुझ पर क़ाएम होने के बाद और अगर तू माफ़ करेगा

الظَّالِمِيْنَ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ

तो ये तेरे रहम व जूद और करम की वजह से होगा। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है तू पाको बेनियाज़

الْمُسْتَغْفِرِيْنَ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ

है मै तो ज़ालिमो मे से हूँ तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है तू पाक है। मै इसतेग़फ़ार करने वाला मे से

الْمُوَحِّدِيْنَ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الْخَآئِفِيْنَ

हूँ। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है तू पाक है मै तेरी वहदानियत का एकरार करनेवालों मे से हूँ तेरे

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الْوَجِلِيْنَ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا

अलावा कोई माबूद नही है मै तुझसे ख़ौफ़ करनेवालों मे से हूँ। तेरे अलावा कोई माबूद नही है तू

اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الرَّاجِيْنَ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ

पाक है मै तेरी सितवत से हरासाँ हूँ तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू पाक है। मै उम्मीद लगानेवालों

سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الرَّاغِبِيْنَ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ

मे से हूँ तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू पाक है मै शाक़ रखनेवालों मे से हूँ तू पाक व बेनेयाज़ के

اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الْمُهَلِّلِيْنَ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ

अलावा कोई माबूद नही है मै तहलील करनेवालों मे से हूँ। तुझ पाक व बे नियाज़ के अलावा कोई

مِنَ السَّآئِلِيْنَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ

माबूद नही है। मै सवाल करनेवालों मे से हूँ। तुझ पास व बेनेयाज़ के अलावा कोई माबूद नही है

الْمُسَبِّحِيْنَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الْمُكَبِّرِيْنَ

मै तसबीह करनेवालों मे से हूँ। तुझ पाक व बेनेयाज़ के अलावा कोई माबूद नही है मै तकबीर

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ رَبِّيْ وَرَبُّ اٰبَآئِيَ الْاَوَّلِيْنَ اَللّٰهُمَّ هٰذَا

कहनेवाला मे से हूँ। तुझ पाक व बेनेयाज़ के अलावा कोई माबूद नही है तू मेरा रब है और मेरे

ثَنَآئِيْ عَلَيْكَ مُمَجِّدًا وَاِخْلَاصِيْ لِذِكْرِكَ مُوَحِّدًا وَاِقْرَارِيْ

गुज़श्ता आबा का रब है। ख़ुदाया ये मेरी हम्द व सना तेरी बारगाहे अहद मे है और ये मेरा तेरे ज़िक्र

بِاٰلَآئِكَ مُعَدِّدًا وَاِنْ كُنْتُ مُقِرًّا اَنِّيْ لَمْ اُحْصِهَا لِكَثْرَتِهَا وَ

का इख़लास मक़ामे तौहीद मे है और मेरा तेरी नेमतों का इक़रार शुमार करने के बाद है अगरचे

سُبُوْغِهَا وَ تَظَاهُرِهَا وَ تَقَادُمِهَا اِلٰى حَادِثٍ مَا لَمْ تَزَلْ

मुझको इक़रार है के उनका एहसह नही हो सकता। उनकी ज़्यादती और कमाल, ज़ुहूर और मेरे

تَتَعَهَّدُنِيْ بِهٖ مَعَهَا مُنْذُ خَلَقْتَنِيْ وَ بَرَاْتَنِيْ مِنْ اَوَّلِ الْعُمُرِ

वजूद पर सबक़त की वजह से तूने उनको हमेशा से मेरे साथ रखा है जिस वक़्त से तूने मुझको पैदा

مِنَ الْاِغْنَاءِ مِنَ الْفَقْرِ وَ كَشْفِ الضُّرِّ وَتَسْبِيْبِ الْيُسْرِ وَ

किया आसानी के असबाब पैदा किए और सख़्ती को दूर किया और ग़म से नजात दी जिस्म को

دَفْعِ الْعُسْرِ وَ تَفْرِيْجِ الْكَرْبِ وَ الْعَافِيَةِ فِي الْبَدَنِ وَ السَّلَامَةِ

आफ़ियत और दीन को सलामती अता की और अगर अव्वलीन व आख़ेरीन के तमाम लोग तेरी

فِي الدِّيْنِ وَ لَوْ رَفَدَنِيْ عَلٰى قَدْرِ ذِكْرِ نِعْمَتِكَ جَمِيْعُ الْعَالَمِيْنَ

बे पायाँ नेमतों को शुमार करना चाहें तो न मै उसपर क़ादिर हो सकता हूँ और न वो लोग। तू पाक

مِنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ مَا قَدَرْتُ وَ لَا هُمْ عَلٰى ذٰلِكَ

है, बुलंद है, करीम परवरदिगारे अज़ीम है, रहम व करम करनेवाला है तेरी नेमतों का एहसा

تَقَدَّسْتَ وَ تَعَالَيْتَ مِنْ رَّبٍّ كَرِيْمٍ عَظِيْمٍ رَّحِيْمٍ لَا

नामुमकिन है और तेरी सना को पहुँचना मुमकिन नही है और तेरी नेमतों का कोई बदला नही है

تُحْصٰى اٰلَاؤُكَ وَ لَا يَبْلُغُ ثَنَاؤُكَ وَ لَا تُكَافٰى نَعْمَاؤُكَ صَلِّ

दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और हमपर अपनी नेमतों को मुकम्मल करदे

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَتْمِمْ عَلَيْنَا نِعَمَكَ وَ اَسْعِدْنَا

और हमको ख़ुशबख़्त बनादे अपनी इताअत के ज़रिए। तू पाक है तेरे अलावा कोई माबूद नही है।

بِطَاعَتِكَ سُبْحَانَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تُجِيْبُ

ख़ुदाया तू परेशान लोगों की दुआ को क़ुबूल करता है और रंजो अलम को दूर करता है और

الْمُضْطَرَّ وَ تَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَ تُغِيْثُ الْمَكْرُوْبَ وَ تَشْفِيْ

ग़मज़दा की फ़रयाद रसी करता है मरीजों को शिफ़ा देता है फ़क़ीरों को मालदार बनाता है। टूटे हुए

السَّقِيْمَ وَ تُغْنِي الْفَقِيْرَ وَ تَجْبُرُ الْكَسِيْرَ وَ تَرْحَمُ الصَّغِيْرَ وَ

को जोड़ता हौ बच्चा पर रहम करता है। बूढ़े की मदद करता है और तेरे अलावा कोई मददगार नही

تُعِيْنُ الْكَبِيْرَ وَلَيْسَ دُوْنَكَ ظَهِيْرٌ وَلَا فَوْقَكَ قَدِيْرٌ وَ اَنْتَ

है और तेरे ऊपर कोई काएद नही है और तू बुलंद व बुज़ुर्ग है। ऐ क़ैदियों को आज़ाद करनेवाले।

الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ يَا مُطْلِقَ الْمُكَبَّلِ الْاَسِيْرِ يَا رَازِقَ الطِّفْلِ

ऐ छोटे बच्चे को रिज़्क देनेवाले, ऐ खाफ़ज़दा पनाह तलब के मोहाफ़ज़ ऐ वो ज़ात जिस का कोई न

الصَّغِيْرِ يَا عِصْمَةَ الْخَآئِفِ الْمُسْتَجِيْرِ يَا مَنْ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ

शरीक है न वजीर दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको इस शाम मे अता

لَا وَزِيْرَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَعْطِنِيْ فِيْ هٰذِهِ الْعَشِيَّةِ

कर बहतरीन वो नेमत जो तूने अता की है अपने बन्दें मे से किसी एक को उन नेमतों मे से जो वो

اَفْضَلَ مَا اَعْطَيْتَ وَ اَنَلْتَ اَحَدًا مِّنْ عِبَادِكَ مِنْ نِعْمَةٍ

ज़हमत जिसको तू ख़त्म करता है और वो दुआ जिस को तू सुनता है और नेकी जिस को तू क़ुबूल

تُوْلِيْهَا وَ اٰلَاءٍ تُجَدِّدُهَا وَ بَلِيَّةٍ تَصْرِفُهَا وَ كُرْبَةٍ تَكْشِفُهَا وَ

करता है और बूराई जिसको तू ढ़ॉक देता है बेशक तू लतीफ़ और जिस से चाहे बाख़बर है हर चीज़

دَعْوَةٍ تَسْمَعُهَا وَ حَسَنَةٍ تَتَقَبَّلُهَا وَ سَيِّئَةٍ تَتَغَمَّدُهَا اِنَّكَ

पर क़ादिर है। खुदाया तू उन सब मे क़रीब है जिनसे दुआ की जाए और उन सब मे जल्दी करने

لَطِيْفٌ بِمَا تَشَآءُ خَبِيْرٌ وَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ

वाला है जो क़ुबूल करे और माफ़ करनेवालों मे करीम है और अता करनेवालों मे वसी है और

اَقْرَبُ مَنْ دُعِيَ وَ اَسْرَعُ مَنْ اَجَابَ وَ اَكْرَمُ مَنْ عَفٰى وَ اَوْسَعُ

जिनसे सवाल किया जाए उन मे सबसे ज्यादा सूनने वाला है ऐ दुनिया और आख़ेरत के रहमान व

مَنْ اَعْطٰى وَ اَسْمَعُ مَنْ سُئِلَ يَا رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ

रहीम तेरे मिस्ल कोई नही है जिस से सवाल किया जाए। और तेरे अलावा किसी से उम्मीद नही

رَحِيْمَهُمَا لَيْسَ كَمِثْلِكَ مَسْئُوْلٌ وَ لَا سِوَاكَ مَاْمُوْلٌ

लगाई जाती मैने तुझसे दुआ की तूने क़ुबूल किया मैने तुझसे सवाल किया तो तू ने अता किया।

دَعَوْتُكَ فَاَجَبْتَنِيْ وَ سَئَلْتُكَ فَاَعْطَيْتَنِيْ وَ رَغِبْتُ اِلَيْكَ

मैने तेरी जानिब रग़बत की तो तूने रहम किया। मैने तुझ पर एतेमाद किया तो तूने मुझ को नजात

فَرَحِمْتَنِيْ وَ وَثِقْتُ بِكَ فَنَجَّيْتَنِيْ وَ فَزِعْتُ اِلَيْكَ فَكَفَيْتَنِيْ

दी और मै तेरी तरफ़ फ़रयादी हुआ तो त मेरे लिए काफ़ी हो गया। ख़ुदाया दुरूद नाज़िल फ़रमा

اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ وَ نَبِيِّكَ وَ عَلٰى

अपने बन्दे रसूल और नबी मोहम्मद पर और उन की पाक व पाकीज़ा तमाम आल पर और हमारे

اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ اَجْمَعِيْنَ وَ تَمِّمْ لَنَا نَعْمَآئَكَ وَ

लिए अपनी नेमतों के याद करनेवालों मे ये दुआ मेरी क़ुबूल कर ले। ऐ आलमीन के पालनेवाले

هَنِّئْنَا عَطَآئَكَ وَاكْتُبْنَا لَكَ شَاكِرِيْنَ وَلِاٰلَآئِكَ ذَاكِرِيْنَ

ख़ुदाया। ऐ वो ज़ात जो मालिक है। तू क़ादिर है और क़ादिर है। तू ग़ालिब भी है और उसकी

اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ يَامَنْ مَلَكَ فَقَدَرَ وَقَدَرَ

मासियत की गई तो उसने छुपाया और उससे इस्तेग़फ़ार किया गया तो उसने बख़्श दिया। ऐ

فَقَهَرَ وَعُصِيَ فَسَتَرَ وَاسْتُغْفِرَ فَغَفَرَ يَا غَايَةَ الطَّالِبِيْنَ

तलबगारों और शौक रखनेवालों की मनजील ऐ उम्मीद लगानेवालें की इन्तेहा। ऐ वो ज़ात जिसके

الرَّاغِبِيْنَ وَمُنْتَهٰى اَمَلِ الرَّاجِيْنَ يَامَنْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ

इल्म ने तमाम चीज़ों का एहाता किया है और उज़्र ख़्वाहिशों पर वसी है उसकी महेरबानी, रहमत

عِلْمًا وَوَسِعَ الْمُسْتَقِيْلِيْنَ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً وَّحِلْمًا اَللّٰهُمَّ اِنَّا

और हिल्म। ख़ुदाया मै तेरी तरफ़ मुतवज्ज़े हूँ इस शाम मे जिसको तूने शरफो अज़मत अता की है

نَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ فِيْ هٰذِهِ الْعَشِيَّةِ الَّتِيْ شَرَّفْتَهَا وَعَظَّمْتَهَا

मोहम्मद के ज़रिए जो तेरे नबी व रसूल और तेरी मख़लूक़ मे बेहतरीन और तेरी वही के अमीन हैं

بِمُحَمَّدٍ نَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ وَخِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ وَاَمِيْنِكَ

बशारत देने वाले डरानेवाले रौशन चिराग हैं जिनके जारिए से तमाम मुसलमानो पर इनाम किया

عَلٰى وَحْيِكَ الْبَشِيْرِ النَّذِيْرِ السِّرَاجِ الْمُنِيْرِ الَّذِيْ اَنْعَمْتَ

है और जिनको आलमीन के लिए रहमत क़रार दिया है। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व

بِهٖ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ وَ جَعَلْتَهٗ رَحْمَةً لِّلْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ

आले मोहम्मद पर जैसे के मोहम्मद तेरी तरफ़ से दुरूद के अहेल हैं। ऐ साहेबे अज़मत दुरूद नाज़ल

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا مُحَمَّدٌ اَهْلٌ لِذٰلِكَ مِنْكَ يَا عَظِيْمُ

कर उन पर और उनकी पाको पाक़ीजा नजीब तमाम आल पर और अपनी माफ़ी के परदे मै हम

فَصَلِّ عَلَيْهِ وَ عَلٰى اٰلِهِ الْمُنْتَجَبِيْنَ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ

को छुपा ले। तेरी ही जानिब मुख़तलिफ़ ज़बानो मे आवाजे फ़रयाद बुलंद है। तो ऐ ख़ुदा मेरे लिए

اَجْمَعِيْنَ وَ تَغَمَّدْنَا بِعَفْوِكَ عَنَّا فَاِلَيْكَ عَجَّتِ الْاَصْوَاتُ

इस शाम (अर्स) मे हर नेकी का हिस्सा क़रार दे दे जिस को तू अपने बन्दों मे तक़सीम करेगा और

بِصُنُوْفِ اللُّغَاتِ فَاجْعَلْ لَنَا اَللّٰهُمَّ فِيْ هٰذِهِ الْعَشِيَّةِ

नूर का हिस्सा जिससे तू हिदायत करता है और रहमत का हिस्सा जिसको तू वुसअत देता है ऐ

نَصِيْبًا مِنْ كُلِّ خَيْرٍ تَقْسِمُهٗ بَيْنَ عِبَادِكَ وَ نُوْرٍ تَهْدِيْ بِهٖ

सबसे अज़ीम रहम करने वाले। ख़ुदाया उस वक़्त मे हम को बदल दे कामयाबी और रूसतगारी मे,

وَرَحْمَةٍ تَنْشُرُهَا وَ بَرَكَةٍ تُنْزِلُهَا وَ عَافِيَةٍ تُجَلِّلُهَا وَ رِزْقٍ

नेकूकारी और फ़एदा मंदी मे और हमको मायूस होनेवालों मे न क़रार दे और अपनी रहमत से

تَبْسُطُهٗ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اقْلِبْنَا فِيْ هٰذَا الْوَقْتِ

हमको बे बहरा न बना और जिस फ़ज़्ल की हम तुझ से उममीद लगाए हैं उससे महरूम न कर और

مُنْجِحِيْنَ مُفْلِحِيْنَ مَبْرُوْرِيْنَ غَانِمِيْنَ وَلَا تَجْعَلْنَ مِنَ

अपने रहमत से महरूम होनेवालों मे न क़रार दे और न तेरे जिस फ़ज़्ल की उम्मीद लगाए हैं उससे

الْقَانِطِيْنَ وَلَا تُخْلِنَا مِنْ رَّحْمَتِكَ وَلَا تَحْرِمْنَا مَا نُؤَمِّلُهُ مِنْ

मायूस होनेवाला मे क़रार दे और हमको उदास न लौटा और अपने दरवाज़े से हमको मरदूद न

فَضْلِكَ وَلَا تَجْعَلْنَا مِنْ رَّحْمَتِكَ مَحْرُوْمِيْنَ وَلَا لِفَضْلِ مَا

कर। ऐ सबसे ज़्यादा सख़ी और सबसे बड़े करम करनेवाले हम तेरी बारगाह मे यक़ीन के साथ

نُؤَمِّلُهُ مِنْ عَطَآئِكَ قَانِطِيْنَ وَلَا تَرُدَّنَا خَائِبِيْنَ وَلَا مِنْ

आए हैं और तेरे घर की दावत पर लब्बैक कही है और उसकी ज़्यारत का क़स्द किया है तू हमारी

بَابِكَ مَطْرُوْدِيْنَ يَا اَجْوَدَ الْاَجْوَدِيْنَ وَ اَكْرَمَ الْاَكْرَمِيْنَ

मदद कर हमारे अरकान की अदाएगी पर और हमारे लिए हुज्ज़त को मुकम्मल कर और गुनाहों से

اِلَيْكَ اَقْبَلْنَا مُوْقِنِيْنَ وَلِبَيْتِكَ الْحَرَامِ اٰمِّيْنَ قَاصِدِيْنَ

दरगुज़र कर और आफ़ीयत दे हमने तेरी तरफ़ अपने हाथ फ़ैलाए हैं जो एतेराफ़े गुनाह की ज़िल्लत

فَاَعِنَّا عَلٰى مَنَاسِكِنَا وَاَكْمِلْ لَنَا حَجَّنَا وَاعْفُ عَنَّا وَعَافِنَا

से मौसूम है। ख़ुदाया हमको इस शाम मे अता कर वो चीज़ जिसका हमने तुझसे सवाल किया है

فَقَدْ مَدَدْنَا اِلَيْكَ اَيْدِيَنَا فَهِيَ بِذِلَّةِ الْاِعْتِرَافِ مَوْسُوْمَةٌ

और हमारे लिए काफ़ी हो जा जिसकी हमने किफ़ालत चाही है तेरे अलावा मेरे लिए कोई किफ़ालत

اَللّٰهُمَّ فَاَعْطِنَا فِيْ هٰذِهِ الْعَشِيَّةِ مَا سَئَلْنَاكَ وَاكْفِنَا مَا

करने वाला नही है और तेरे अलावा मेरा कोई परवरदिगार नही है तेरा हुकुम हम पर नाफ़ज है।

اسْتَكْفَيْنَا فَلَا كَافِيَ لَنَا سِوَاكَ وَلَا رَبَّ لَنَا غَيْرُكَ نَافِذٌ

तेरा इलम हमपर मोहीत है और तेरा फ़ैसला हमारे बारे मे अद्ल है तू हमारे लिए ख़ैर को मुक़र्रर

فِيْنَا حُكْمُكَ مُحِيْطٌ بِنَا عِلْمُكَ عَدْلٌ فِيْنَا قَضَاۤؤُكَ اِقْضِ

कर और हमको ख़ैरवालों मे क़रार दे। ख़ुदाया हमारे लिए अपने जूद से अज़ीम अज्र और करीम

لَنَا الْخَيْرَ وَاجْعَلْنَا مِنْ اَهْلِ الْخَيْرِ اَللّٰهُمَّ اَوْجِبْ لَنَا بِجُوْدِكَ

ज़ख़ीरा और दाएमी आसानी को लाज़म क़रार दे और हमारे कुल गुनाहों को बख़्श दे और हमको

عَظِيْمَ الْاَجْرِ وَكَرِيْمَ الذُّخْرِ وَدَوَامَ الْيُسْرِ وَاغْفِرْ لَنَا

हलाक होनेवालों के साथ हलाक न कर और हमसे अपनी महेरबानी और रहमत को दूर न कर।

ذُنُوْبَنَا اَجْمَعِيْنَ وَلَا تُهْلِكْنَا مَعَ الْهَالِكِيْنَ وَلَا تَصْرِفْ عَنَّا

ऐ सबसे अज़ीम रहम करनेवाले ख़ुदाया हमको इस वक़्त मे क़रार दे उनमे से जिसने तुझ से सवाल

رَاْفَتَكَ وَرَحْمَتَكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا فِيْ هٰذَا

किया तो तूने उस को अता किया और तेरा शूक्र अदा किया तो तूने ज़्यादा किया और तुझसे तौबा

الْوَقْتِ مِمَّنْ سَاَلَكَ فَاَعْطَيْتَهٗ وَشَكَرَكَ فَزِدْتَهٗ وَتَابَ اِلَيْكَ

की तो तूने उसकी तौबा को क़ुबूल किया और अपने तमाम गुनाहों से अलग हो गया तो तूने उसको

فَقَبِلْتَهٗ وَتَنَصَّلَ اِلَيْكَ مِنْ ذُنُوْبِهٖ كُلِّهَا فَغَفَرْتَهَا لَهٗ يَا ذَا

बख़्श दिया ऐ साहेबे जलालत व करम ख़ुदाया हम को तौफ़ीक़ दे और हमको इताअत के लिए

الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ اَللّٰهُمَّ وَنَقِّنَا وَسَدِّدْنَا وَاقْبَلْ تَضَرُّعَنَا

क़वी बना और हमारे तज़र्रो को क़ुबूल कर। ऐ वो बेहतरीन ज़ात जिससे सवाल किया जाए और

يَا خَيْرَ مَنْ سُئِلَ وَيَا اَرْحَمَ مَنِ اسْتُرْحِمَ يَا مَنْ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ

ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले जिससे रहम तलब किया जाए। ऐ वो ख़ुदा जिससे पल्कों की

اِغْمَاضُ الْجُفُوْنِ وَ لَا لَحْظُ الْعُيُوْنِ وَ لَا مَا اسْتَقَرَّ فِيْ

हरकत और गोशह चश्म का इशारा भी मख़फ़ी नही है जो ज़मीर मे छुपा है और न वो जिस पर

الْمَكْنُوْنِ وَلَا مَا انْطَوَتْ عَلَيْهِ مُضْمَرَاتُ الْقُلُوْبِ اَلَا كُلُّ

दिलों के राज़ मुश्तमिल हैं यक़ीनन तेरे इल्म ने उन सबका एहसा कर लिया है और तेरा हिल्म

ذٰلِكَ قَدْ اَحْصَاهُ عِلْمُكَ وَوَسِعَهٗ حِلْمُكَ سُبْحَانَكَ وَتَعَالَيْتَ

उसको घेरे हुए है। तू पाक है और बहुत बुलंद है उस बात से जो ज़ालिम लोग कहते हैं तेरी तसबीह

عَمَّا يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا تُسَبِّحُ لَكَ السَّمٰوٰتُ

सातों आसमानो ज़मीन और जो कुछ उनमे है सब करते रहते हैं और कोई चीज़ ऐसी नही है जो तेरे

السَّبْعُ وَالْاَرَضُوْنَ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ

हम्द की तसबीह न करती हो। हम्द, बुज़ुर्गी और इज्ज़त सब तेरे लिए है ऐ जलालतो इक्रामवाले

بِحَمْدِكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَالْمَجْدُ وَعُلُوُّ الْجَدِّ يَا ذَا الْجَلَالِ

और फ़ज़्लो एहसान और बुलंदतरीन नेमतों वाले और तू तो सख़ी और करमवाला और महेरबान

وَالْاِكْرَامِ وَالْفَضْلِ وَالْاِنْعَامِ وَالْاَيَادِى الْجِسَامِ وَاَنْتَ

और रहमकरनेवाला है। ख़ुदाया मुझपर अपने हलाल रिज़्क को वसी करदे और मेरे जिस्मो दीन

الْجَوَادُ الْكَرِيْمُ الرَّؤُفُ الرَّحِيْمُ اَللّٰهُمَّ اَوْسِعْ عَلَيَّ مِنْ

को आफ़ियत दे और मेरे ख़ौफ को अमन मे बदल दे और जहन्नम से मेरी गुलू ख़लासी कर दे।

رِزْقِكَ الْحَلَالِ وَعَافِنِىْ فِىْ بَدَنِىْ وَدِيْنِىْ وَاٰمِنْ خَوْفِىْ وَاَعْتِقْ

ख़ुदाया अपनी तदबीर मे मुझको (गुनाह की सज़ा मे) मुबतेला न कर और ना गहानी अज़ाब मे

رَقَبَتِىْ مِنَ النَّارِ اَللّٰهُمَّ لَا تَمْكُرْ بِىْ وَلَا تَسْتَدْرِجْنِىْ وَلَا

मुबतेला न कर और मुझको धोके मे न रहने दे और मुझको जिनो इन्सान के फ़ासिक़ों के शर से

تَخْدَعْنِىْ وَادْرَأْ عَنِّىْ شَرَّ فَسَقَةِ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ.

महफ़ूज़ रख।

फिर अपने सर और आंखों को आसमान की तरफ़ उठाया और आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे और बुलंद आवाज़ में कह रहे थे:

يَا اَسْمَعَ السَّامِعِيْنَ يَا اَبْصَرَ النَّاظِرِيْنَ وَيَا اَسْرَعَ الْحَاسِبِيْنَ

ऐ सब से ज़्यादा सुननेवाले ऐ देखनेवालों मे सबसे ज़्यादा देखनेवाले, ऐ बहुत जल्दी हिसाब करनेवाले,

وَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ السَّادَةِ

ऐ सबसे ज़्यादा रहम करनेवाले दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जो सरदार और

الْمَيَامِيْنَ وَ اَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ حَاجَتِيَ الَّتِيْ اِنْ اَعْطَيْتَنِيْهَا

आलम मे बा बरकत हैं और मै तुझसे सवाल करता हूँ ऐ ख़ुदा इस हाजत का के अगर तूने उसको

لَمْ يَضُرَّنِيْ مَا مَنَعْتَنِيْ وَاِنْ مَنَعْتَنِيْهَا لَمْ يَنْفَعْنِيْ مَا

मुझे अता कर दिया तो फिर जिससे भी महरूम कर दे कोई नुक़सान न होगा और अगर तूने उस को

اَعْطَيْتَنِيْ اَسْئَلُكَ فَكَاكَ رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

रोक दिया तो फिर जो भी अदा कर देगा उससे फ़ाएदा न होगा मै तुझसे जहन्नम के छुटकारे का सवाल

وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَكَ الْمُلْكُ وَلَكَ الْحَمْدُ وَ اَنْتَ عَلٰى

करता हूँ तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है तू अकेला है तेरा कोई शरीक नही है तेरे लिए बादशाहत है

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ...

तेरे लिए हम्द है और तू हर चीज़ पर क़ादिर है, ऐ मेरे परवरदिगार मेरे परवरदिगार।

फिर मुकर्रर या रब कहते थे और जो लोग आपके पास मौजूद थे कान लगाए हुए थे हज़रत की दुअ पर और सिर्फ़ आमीन कहने पर इक्तेफ़ा कर रहे थे। और उन लोगों के रोने की आवाज़ें भी हज़रत के साथ उठीं यहाँ तक के सूर्यअस्त हो गया सामाने सफ़र तय्यार किया और मशरूल हराम की ओर रवाना हो गए।

लेखक के अनुसार कफ़अमी नें दुआ अरफ़ा इमामे हुसैन (अ.स.) को बलदुल अमीन में यहाँ तक नक़्ल किया है और अल्लामा मजलिसी ने ज़ादुल माद

में इस दुआ को कफ़अमी की रिवायत के मुताबिक लिखा है लेकिन सय्यद बिन ताऊस ने इक़्बाल में या रब या रब या रब के बाद इतना और लिखा है:

إِلٰهِيْ أَنَا الْفَقِيْرُ فِيْ غِنَايَ فَكَيْفَ لَا أَكُوْنُ فَقِيْرًا فِيْ فَقْرِيْ؟

मेरे ख़ुदा मै अपनी मालदारी मे भी फ़क़ीर हूँ तो अपने फ़कर मे क्यों कर फ़क़ीर न हूँगा। ख़ुदाया मै

إِلٰهِيْ أَنَا الْجَاهِلُ فِيْ عِلْمِيْ فَكَيْفَ لَا أَكُوْنُ جَهُوْلًا فِيْ جَهْلِيْ؟

अपने इल्म मे भी जाहिल हूँ तो क्यों कर जाहिल न हूँगा अपनी जहालत में। मेरे माबूद बेशक तेरी

إِلٰهِيْ إِنَّ اخْتِلَافَ تَدْبِيْرِكَ وَسُرْعَةَ طَوَاءِ مَقَادِيْرِكَ مَنَعَا

तदबीर की तबदीली और तेरे मुक़द्देरात के सरीह तग़ैयूरात ने तेरे आरिफ़ बन्दों को रोक दिया है अता

عِبَادَكَ الْعَارِفِيْنَ بِكَ عَنِ السُّكُوْنِ إِلٰى عَطَاءٍ وَالْيَاْسِ

पर सुकून से और मुसीबत मे न उम्मीद होने से मेरे माबूद मेरी तरफ़ से वो अमल सरजद होता है जो

مِنْكَ فِيْ بَلَاءٍ إِلٰهِيْ مِنِّيْ مَا يَلِيْقُ بِلُؤْمِيْ وَمِنْكَ مَا يَلِيْقُ

मेरी ज़िल्लत के लाएक़ है और तेरी तरफ़ से वो अम्र होना चाहिए जो तेरे करम का सज़ावार है। मेरे

بِكَرَمِكَ إِلٰهِيْ وَصَفْتَ نَفْسَكَ بِاللُّطْفِ وَالرَّافَةِ لِيْ قَبْلَ

माबूद तू ने अपने को महेरबानी व लुत्फ़ से मौसूफ़ किया है मेरी न तवानी के वजूद से क़ब्ल क्या तू

وُجُوْدِ ضَعْفِيْ أَفَتَمْنَعُنِيْ مِنْهُمَا بَعْدَ وُجُوْدِ ضَعْفِيْ؟ إِلٰهِيْ

मुझको महरूम करेगा उन दोनो से मेरी ना तवानी के बा वजूद मेरे माबूद अगर मुझ से अच्छाईया@

إِنْ ظَهَرَتِ ٱلْمَحَاسِنُ مِنِّى فَبِفَضْلِكَ وَلَكَ ٱلْمِنَّةُ عَلَيَّ وَإِنْ

ज़ाहीर हों तो ये तेरे फ़ज़्ल की वजह से है और तेरा एहसान है मेरे ऊपर और अगर बुराईया@ मूझ

ظَهَرَتِ ٱلْمَسَاوِءُ مِنِّى فَبِعَدْلِكَ وَلَكَ ٱلْحُجَّةُ عَلَيَّ إِلٰهِى كَيْفَ

से ज़ाहीर हों तो ये तेरे अद्‌ल से है और तेरी हुज्जत मुझ पर क़ाएम है मेरे ख़ुदा कैसे तू मुझको छोड

تَكِلُنِى وَقَدْ تَكَفَّلْتَ لِى؟ وَكَيْفَ اُضَامُ وَاَنْتَ ٱلنَّاصِرُ

देगा जब के तू मेरा कफ़ील है और कैसे कोई मुझ पर ज़ुल्म कर सकता है जब के तू मेरा नासिर है

لِى؟ اَمْ كَيْفَ اَخِيبُ وَاَنْتَ ٱلْحَفِيُّ بِى؟ هَا اَنَا اَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ

या कैसे मै नुक़सान उठा सकता हूँ जब के तू मुझ पर महेरबान है। मै तेरी बारगाह से मुतवस्सिल हूँ

بِفَقْرِى إِلَيْكَ وَكَيْفَ اَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِمَا هُوَ مُحَالٌ اَنْ يَصِلَ

अपने फ़क्र व फ़ाक़े के ज़रिए और कैसे मैं तवस्सुल कर सकता हूँ उस के ज़रिए जिस का तुझ तक

إِلَيْكَ؟ اَمْ كَيْفَ اَشْكُو إِلَيْكَ حَالِى وَهُوَ لَا يَخْفَى عَلَيْكَ؟

पहुँचना मोहाल है? या कैसे मै तेरी बारगाह मे शिकायत कर सकता हूँ अपनी हाजत की जब के वो

اَمْ كَيْفَ اُتَرْجِمُ بِمَقَالِى وَهُوَ مِنْكَ بَرَزٌ إِلَيْكَ؟ اَمْ كَيْفَ

तेरे उुपर मख़फ़ी नही है और कैसे मै अपनी बात की तरजूमानी कर सकता हूँ जब के वो तेरे सामने

تُخَيِّبُ آمَالِى وَهِىَ قَدْ وَفَدَتْ إِلَيْكَ؟ اَمْ كَيْفَ لَا تُحْسِنُ

ज़ाहिर है या क्यों कर उम्मीदों को न उम्मीदी मे बदल सकता है जब के वो तेरी करीम बारगाह मे

اَحْوَالِیْ وَبِكَ قَامَتْ اِلٰهِیْ مَا اَلْطَفَكَ بِیْ مَعَ عَظِیْمِ جَهْلِیْ

पहूँची हैं या कैसे तू मेरे हालात को बेहतर न बनाएगा जब के मेरे हालात का क़याम तेरे ही ज़ारिए है

وَمَا اَرْحَمَكَ بِیْ مَعَ قَبِیْحِ فِعْلِیْ اِلٰهِیْ مَا اَقْرَبَكَ مِنِّیْ وَاَبْعَدَنِیْ

। मेरे माबूद तू ने कितना मेरे ऊपर लुत्फ़ किया है। मेरी जेहालत की शिद्दत के बा वजूद और कितना

عَنْكَ وَمَا اَرْاَفَكَ بِیْ فَمَا الَّذِیْ یَحْجُبُنِیْ عَنْكَ؟ اِلٰهِیْ عَلِمْتُ

तू ने मूझ पर रहम किया है मेरे आमाल के क़बीह होने के बावजूद मेरे माबूद तू कितना मुझ से क़रीब

بِاخْتِلَافِ الْاٰثَارِ وَتَنَقُّلَاتِ الْاَطْوَارِ اَنَّ مُرَادَكَ مِنِّیْ اَنْ

हुआ जब के मै तुझ से दूर हूआ और कितनी तू ने मुझ पर महेरबानी की तो वो कौन सी चीज़ है जो

تَتَعَرَّفَ اِلَیَّ فِیْ كُلِّ شَیْءٍ حَتّٰی لَا اَجْهَلَكَ فِیْ شَیْءٍ اِلٰهِیْ كُلَّمَا

मुझको तुझ से छुपाएगी? मेरे माबूद आसार की तबदीलियों और अत्वार के गुनागूँ होने से ये समझा

اَخْرَسَنِیْ لُؤْمِیْ اَنْطَقَنِیْ كَرَمُكَ وَكُلَّمَا اٰیَسَتْنِیْ اَوْصَافِیْ

हूँ के तेरी मुराद यही है के तू मेरी निगाह मे हर चीज़ मे पहचाना जाए और मै तेरे किसी अम्र से जाहिल

اَطْمَعَتْنِیْ مِنَنُكَ اِلٰهِیْ مَنْ كَانَتْ مَحَاسِنُهٗ مَسَاوِءَ فَكَیْفَ

व ग़ाफ़ल न रहूँ। मेरे माबूद जब भी मेरी ज़िल्लत ने मुझको गूंगा बनाया तो तेरे करम ने मुझको गोया

لَا تَكُوْنُ مَسَاوِئُهٗ مَسَاوِءَ؟ وَمَنْ كَانَتْ حَقَائِقُهٗ دَعَاوِیْ

कर दिया और जब भी मेरे ख़राब औसाफ़ ने मुझको मायूस किया तो तेरे एहसान ने मुझको उम्मीद

فَكَيْفَ لَا تَكُونُ دَعَاوَاهُ دَعَاوِيَ؟ إِلٰهِي حُكْمُكَ النَّافِذُ

वार बना दिया। मेरे माबूद जिसकी नेकीयॉ बुराइयाँ हों तो उसकी बुराइयाँ क्यों कर बुराई न होगीं और

وَمَشِيئَتُكَ الْقَاهِرَةُ لَمْ يَتْرُكَا لِذِي مَقَالٍ مَقَالًا وَلَا لِذِي

जिस के हक़ाएक़ बातिल दावा हों तो बातिल दावा क्यों कर बातिल न होंगे? मेरे माबूद तेरे हुक्म

حَالٍ حَالًا إِلٰهِي كَمْ مِنْ طَاعَةٍ بَنَيْتُهَا وَحَالَةٍ شَيَّدْتُهَا

नाफ़ीज़ और तेरी मशियत ग़ालीब यने किसी बोलने वाले के लिए बोलने की जगह और हाजत वाले

هَدَمَ اعْتِمَادِي عَلَيْهَا عَدْلُكَ بَلْ أَقَالَنِي مِنْهَا فَضْلُكَ إِلٰهِي

के लिए हाजत का मक़ाम नही छोडा। मेरे माबूद मै ने कितनी ही इताअत को बनाया और हालत को

إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنِّي وَإِنْ لَمْ تَدُمِ الطَّاعَةُ مِنِّي فِعْلًا جَزْمًا فَقَدْ

मूसतहकम किया गर तेरे अद्ल ने उस पर मेरे एतेमाद को गिरा दिया मगर तेरे फ़ज़्ल ने मुझको उस

دَامَتْ مَحَبَّةً وَعَزْمًا إِلٰهِي كَيْفَ أَعْزِمُ وَأَنْتَ الْقَاهِرُ؟

में संभाल दिया। मेरे माबूद तू जानता है के अगरचे मै इताअत मे दाएमी तौर पर क़ाएम नही हूँ मगर

وَكَيْفَ لَا أَعْزِمُ وَأَنْتَ الْآمِرُ؟ إِلٰهِي تَرَدُّدِي فِي الْآثَارِ يُوجِبُ

दिल मे मोहब्बत और अज़्मे दाएम रखता हूँ। मेरे माबूद मै कैसे अज़्म कर सकता हूँ जब के तू ग़ालिब

بُعْدَ الْمَزَارِ فَاجْمَعْنِي عَلَيْكَ بِخِدْمَةٍ تُوصِلُنِي إِلَيْكَ كَيْفَ

है और कैसे अज़्म नही करूगाँ जब के तू हाकीम है? मेरे माबूद तेरे आसार क़ुदरत मे मेरा मुसलसल

يُسْتَدَلُّ عَلَيْكَ بِمَا هُوَ فِيْ وُجُوْدِهٖ مُفْتَقِرٌ إِلَيْكَ؟ اَيَكُوْنُ

फ़िक्र करना तेरी मुलाक़ात की दूरी का सबब बनता जा रहा है तू मुझ को अपनी बारगाह मे ऐसी

لِغَيْرِكَ مِنَ الظُّهُوْرِ مَا لَيْسَ لَكَ حَتّٰى يَكُوْنَ هُوَ الْمُظْهِرَ

ख़िदमत की तौफीक दे जो मुझको तुझसे मिला दे। कैसे तेरे ऊपर इस्तेदलाल किया जा सकता है

لَكَ؟ مَتٰى غِبْتَ حَتّٰى تَحْتَاجَ إِلٰى دَلِيْلٍ يَدُلُّ عَلَيْكَ؟ وَمَتٰى

उस चीज़ से जो अपने वजूद मे मोहताज है तेरी तरफ़? क्या तेरे अलावा किसी के लिए ज़हूर है जो

بَعُدْتَ حَتّٰى تَكُوْنَ الْاٰثَارُ هِيَ الَّتِيْ تُوْصِلُ إِلَيْكَ؟ عَمِيَتْ

तेरे लिए नही है के वो तेरा ज़ाहिर करने वाला बने तू कहाँ ग़ाएब हुआ है के मोहताज हो जाए दलील

عَيْنٌ لَا تَرَاكَ عَلَيْهَا رَقِيْبًا وَخَسِرَتْ صَفْقَةُ عَبْدٍ لَمْ

का जो तुझ पर दलालत करे और तू कब दूर हुआ है के आसार तुझसे मिलाने का सबब बने? वो

تَجْعَلْ لَهٗ مِنْ حُبِّكَ نَصِيْبًا إِلٰهِيْ اَمَرْتَ بِالرُّجُوْعِ إِلَى الْاٰثَارِ

आँख अंधी है जो तुझको उस पर निगरा न समझे और वो मामला नुक़सान मे है जिस के लिए तू

فَارْجِعْنِيْ إِلَيْكَ بِكِسْوَةِ الْاَنْوَارِ وَهِدَايَةِ الْاِسْتِبْصَارِ حَتّٰى

अपनी मोहब्बत का हिस्सा न क़रार दे। मेरे ख़ुदा तू ने हुक़्म दिया है आसार की तरफ़ रूजूह करने

اَرْجِعَ إِلَيْكَ مِنْهَا كَمَا دَخَلْتُ إِلَيْكَ مِنْهَا مَصُوْنَ السِّرِّ

का तो तू मुझ को लौटा दे अपनी तरफ़ नूर की तजल्लीयों और इस्तबसार की हिदायत के साथ यहाँ

عَنِ النَّظَرِ اِلَيْهَا وَمَرْفُوعَ الْهِمَّةِ عَنِ الْاِعْتِمَادِ عَلَيْهَا اِنَّكَ

तक के मै तेरी तरफ़ पलट आऊँ जिस तरह मै मक़ामे मारेफत मे दाख़ल हुआ हूँ आसार की तरफ़

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اِلٰهِيْ هٰذَا ذُلِّيْ ظَاهِرٌ بَيْنَ يَدَيْكَ وَهٰذَا

तव्वजो न करते हुए और मेरी हिम्मत उन पर निगाह से बुलंद है। ऐ ख़ुदा तू हम पर लुत्फ़ कर बेश

حَالِيْ لَا يَخْفٰى عَلَيْكَ مِنْكَ اَطْلُبُ الْوُصُوْلَ اِلَيْكَ وَبِكَ

तू हर चीज़ पर क़ादीर है। मेरे माबूद मै वो बनदा हूँ के मेरी रूसवाई तेरे सामने ज़ाहिर है और ये मेरी

اَسْتَدِلُّ عَلَيْكَ فَاهْدِنِيْ بِنُوْرِكَ اِلَيْكَ وَاَقِمْنِيْ بِصِدْقِ

हालत तुझ पर पोशीदा नही है मै तेरी तरफ़ पहुँचने का मुतालेबा करता हूँ और तेरे ही ज़रिए तुझ पर

الْعُبُوْدِيَّةِ بَيْنَ يَدَيْكَ اِلٰهِيْ عَلِّمْنِيْ مِنْ عِلْمِكَ الْمَخْزُوْنِ

इस्तेदलाल करता हूँ तू मेरी हिदायत कर अपनी तरफ़ अपने नूर से और मुझको ख़ुलूसे बन्दगी के

وَصُنِّيْ بِسِتْرِكَ الْمَصُوْنِ اِلٰهِيْ حَقِّقْنِيْ بِحَقَائِقِ اَهْلِ الْقُرْبِ

साथ क़ाएम रख हुज़ूर मे। खुदाया मुझको अपने मख़जून इल्म से इल्म अता कर और अपने महफ़ूज़

وَاسْلُكْ بِيْ مَسْلَكَ اَهْلِ الْجَذْبِ اِلٰهِيْ اَغْنِنِيْ بِتَدْبِيْرِكَ لِيْ

परदे से मुझको महफ़ूज़ कर। मेरे माबूद मुझको मुक़र्रब लोगों के हक़ाएक़ से आगाह कर और

عَنْ تَدْبِيْرِيْ وَبِاخْتِيَارِكَ عَنِ اخْتِيَارِيْ وَاَوْقِفْنِيْ عَلٰى

मुश्ताक़ लोगों के रासते पर चला, मेरे ख़ुदा मुझको अपनी तदबीर के ज़रिए मेरी तदबीर से बेनियाज़

مَرَا كِزِ اَضْطِرَارِيْ إِلٰهِيْ اَخْرِجْنِيْ مِنْ ذُلِّ نَفْسِيْ وَطَهِّرْنِيْ

कर और अपने इख़्तियार के मुक़ाबले मे मेरे इख़्तियार से बेनियाज़ कर और मुझको मेरे इज़्तेरार के

مِنْ شَكِّيْ وَشِرْكِيْ قَبْلَ حُلُوْلِ رَمْسِيْ بِكَ اَنْتَصِرُ فَانْصُرْنِيْ

मक़ामात से रोक दे। मेरे ख़ुदा मुझको मेरे नफ़स की ज़िल्लत से निकाल ले और मुझको पाक कर

وَعَلَيْكَ اَتَوَكَّلُ فَلَا تَكِلْنِيْ وَإِيَّاكَ اَسْاَلُ فَلَا تُخَيِّبْنِيْ

मेरे शक और शिर्क से मेरी मौत के आने और क़बर मे जाने से क़ब्ल। तुझसे मदद तलब करता हूँ तू

وَفِيْ فَضْلِكَ اَرْغَبُ فَلَا تَحْرِمْنِيْ وَبِجَنَابِكَ اَنْتَسِبُ فَلَا

मेरी मदद कर और तुझ पर तवक्कुल करता हूँ तू मुझको तो न छोड़ और मै तुझसे सवाल करता हूँ

تُبْعِدْنِيْ وَبِبَابِكَ اَقِفُ فَلَا تَطْرُدْنِيْ إِلٰهِيْ تَقَدَّسَ رِضَاكَ

तू मुझको तो मायूस न कर और तेरे फ़ज़्ल की जानिब राग़िब हूँ तू मुझको महरूम न कर और तेरी

اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ عِلَّةٌ مِنْكَ فَكَيْفَ يَكُوْنُ لَهٗ عِلَّةٌ مِنِّيْ؟ إِلٰهِيْ

बारगाह की तरफ़ मनसूब हूँ तू मुझको दूर न कर और तेरे दरवाज़े पर खड़ा हूँ तू मुझको न हटा।

اَنْتَ الْغَنِيُّ بِذَاتِكَ اَنْ يَّصِلَ إِلَيْكَ النَّفْعُ مِنْكَ فَكَيْفَ لَا

मेरे माबूद तेरी रज़ामंदी इससे पाक है के इस मे तेरी तरफ़ से कोई ऐब हो तो इस के लिए मेरी तरफ़

تَكُوْنُ غَنِيًّا عَنِّيْ؟ إِلٰهِيْ إِنَّ الْقَضَاءَ وَالْقَدَرَ يُمَنِّيْنِيْ وَإِنَّ

से क्यों कर ऐब होगा। मेरे ख़ुदा तू अपनी ज़ात के लेहाज़ से उस से ग़नी है के तेरी तरफ़ से तुझको

اَلْهَوٰى بِوَثَآئِقِ الشَّهْوَةِ اَسَرَنِىْ فَكُنْ اَنْتَ النَّصِيْرَ لِىْ حَتّٰى

नफ़ा पहूँचे तो क्योंकर हम से मूसतग़ना न होगा? मेरे माबूद कज़ा व क़दर मुझको उम्मीदवार बनाते

تَنْصُرَنِىْ وَتُبَصِّرَنِىْ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ حَتّٰى اَسْتَغْنِىَ بِكَ عَنْ

हैं और ख़्वाहिशे नफ़्स शहवत की ज़नजीर मे मुझके असीर करती है तू मेरी लिए मददगार हो जा के

طَلَبِىْ اَنْتَ الَّذِىْ اَشْرَقْتَ الْاَنْوَارَ فِىْ قُلُوْبِ اَوْلِيَائِكَ حَتّٰى

मेरी मदद करे और मुझको बसीरत दे और अपने फ़ज़्ल से मुझको मुसतग़ना कर दे यहाँ तक के मै

عَرَفُوْكَ وَوَحَّدُوْكَ وَاَنْتَ الَّذِىْ اَزَلْتَ الْاَغْيَارَ عَنْ قُلُوْبِ

मुसतग़ना हो जाऊँ तेरी वजह से अपनी तलब मे। तूने ही नूर को अपने दोस्ता के दिला मे चमकाया

اَحِبَّائِكَ حَتّٰى لَمْ يُحِبُّوْا سِوَاكَ وَلَمْ يَلْجَأُوْا اِلٰى غَيْرِكَ اَنْتَ

है यहाँ तक के उन्होने तुझको पहचाना और तेरी वहदानियत का इक़रार किया और तू वो है जिस ने

الْمُؤْنِسُ لَهُمْ حَيْثُ اَوْحَشَتْهُمُ الْعَوَالِمُ وَاَنْتَ الَّذِىْ

महव किया है अपने दोस्तों के दिलों से ग़ैरों को उन्होने सिवाए तेरे किसी और से मोहब्बत न की और

هَدَيْتَهُمْ حَيْثُ اسْتَبَانَتْ لَهُمُ الْمَعَالِمُ مَاذَا وَجَدَ مَنْ

तेरे अलावा की जानिब पनाह न ली। तू उनका मोनिस है जब सारे आलम को वहशत मे मुबतेला

فَقَدَكَ؟ وَمَا الَّذِىْ فَقَدَ مَنْ وَجَدَكَ؟ لَقَدْ خَابَ مَنْ رَضِىَ

कर दे और तू ने ही उन की हिदायत की जब उन के लिए निशानिया@ वाज़ेह हो जाएं। उसने क्या

دُوْنَكَ بَدَلًا وَلَقَدْ خَسِرَ مَنْ بَغٰى عَنْكَ مُتَحَوِّلًا كَيْفَ

पाया जिस ने तुझको खो दिया और उसने क्या खोया जिसने तुझ को पा लिया? वो मायूस हुआ जो

يُرْجٰى سِوَاكَ وَاَنْتَ مَا قَطَعْتَ الْاِحْسَانَ؟ وَكَيْفَ يُطْلَبُ

तेरे अलावा बदल पर राज़ी हुआ और वो घाटे मे रहा जिसने तुझ से एहतेराज़ किया कैसे तेरे अलावा

مِنْ غَيْرِكَ وَاَنْتَ مَا بَدَّلْتَ عَادَةَ الْاِمْتِنَانِ؟ يَا مَنْ اَذَاقَ

किसी से उम्मीद की जा सकती है जब के तूने एहसान को ख़त्म नही किया और कैसे तेरे अलावा

اَحِبَّائَهُ حَلَاوَةَ الْمُؤَانَسَةِ فَقَامُوْا بَيْنَ يَدَيْهِ مُتَمَلِّقِيْنَ

से तलब किया जा सकता है जब के तूने एहसान की आदत को नही बदला ऐ वो ज़ात जिसने अपने

وَيَا مَنْ اَلْبَسَ اَوْلِيَاءَهُ مَلَابِسَ هَيْبَتِهٖ فَقَامُوْا بَيْنَ يَدَيْهِ

दोस्तों को अपनी सोहबत का मज़ा चखा दिया तो वो उसके सामने खुशामद के साथ खड़े हुए और

مُسْتَغْفِرِيْنَ اَنْتَ الذَّاكِرُ قَبْلَ الذَّاكِرِيْنَ وَاَنْتَ الْبَادِئُ

ऐ वो ज़ात जिस ने अपने दोस्तों को अपनी हैबत का लिबास पिन्हा दिया तो वो उस के सामने खड़े हैं

بِالْاِحْسَانِ قَبْلَ تَوَجُّهِ الْعَابِدِيْنَ وَاَنْتَ الْجَوَادُ بِالْعَطَاءِ

इस्तेग़फ़ार करते हुए। तू बन्दों को याद करने वाला है। क़ब्ल इस के के बन्दे तुझको याद करें और तू

قَبْلَ طَلَبِ الطَّالِبِيْنَ وَاَنْتَ الْوَهَّابُ ثُمَّ لِمَا وَهَبْتَ لَنَا

एहसान की इब्तेदा करने वाला है। आबिदों की तवज्जो से क़ब्ल तू सख़ावत करने वाला है तलबगारों

مِنَ ٱلْمُسْتَقْرِضِيْنَ إِلٰهِيْ أُطْلُبْنِيْ بِرَحْمَتِكَ حَتّٰى أَصِلَ إِلَيْكَ

से पहले तू अता करने वाला है फिर जो तूने मुझको अता किया है उसमे क़र्ज़ चाहने वालों मे है। मेरे

وَٱجْذِبْنِيْ بِمَنِّكَ حَتّٰى أُقْبِلَ عَلَيْكَ إِلٰهِيْ إِنَّ رَجَائِيْ لَا يَنْقَطِعُ

माबूद मुझको अपने दरे रहमत पर तलब करता के मै तुझ से मिल जाऊँ और मुझको अपने एहसान

عَنْكَ وَإِنْ عَصَيْتُكَ كَمَا أَنَّ خَوْفِيْ لَا يُزَايِلُنِيْ وَإِنْ أَطَعْتُكَ

से खांच ले ता के तेरी तरफ़ तवज्ञो करूँ मेरे ख़ुदा मेरी उम्मीद तुझ से मुनक़ता नही होती है चाहे मै

فَقَدْ دَفَعَتْنِيْ ٱلْعَوَالِمُ إِلَيْكَ وَقَدْ أَوْقَعَنِيْ عِلْمِيْ بِكَرَمِكَ

तेरा इसयान करूँ जिस तरह के मेरा ख़ाफ़ नही ख़त्म होता है चाहे मै तेरी इताअत करूँ। मुझको हर

عَلَيْكَ إِلٰهِيْ كَيْفَ أَخِيْبُ وَأَنْتَ أَمَلِيْ؟ أَمْ كَيْفَ أُهَانُ

आलम ने तेरी तरफ़ ढ़केल दिया है जब के मुझको तेरे करम के इलम ने तेरे पास डाल दिया है। मेरे

وَعَلَيْكَ مُتَّكَلِيْ؟ إِلٰهِيْ كَيْفَ أَسْتَعِزُّ وَفِيْ ٱلذِّلَّةِ أَرْكَزْتَنِيْ؟

माबूद मै कैसे नाकाम हो सकता हूँ जब के तू मेरी उम्मीद है? या कैसे मै रूस्वा हो सकता हूँ जबके

أَمْ كَيْفَ لَا أَسْتَعِزُّ وَإِلَيْكَ نَسَبْتَنِيْ؟ إِلٰهِيْ كَيْفَ لَا أَفْتَقِرُ

तुझ पर मेरा तवक्कुल है। मेरे ख़ुदा किस तरह मै दावाए इज़्ज़त कर सकता हूँ जब के ज़िल्लत मे तूने

وَأَنْتَ ٱلَّذِيْ فِيْ ٱلْفُقَرَاءِ أَقَمْتَنِيْ؟ أَمْ كَيْفَ أَفْتَقِرُ وَأَنْتَ

मुझको मरकूज़ कर दिया है या कैसे मै इज़्ज़त न महसूस करूँ जब के तेरी तरफ़ मेरी निसबत है

ٱلَّذِىْ بِجُوْدِكَ اَغْنَيْتَنِىْ ؟ وَاَنْتَ ٱلَّذِىْ لَآ إِلٰهَ غَيْرُكَ تَعَرَّفْتَ

मेरे ख़ुदा मै कैसे फ़क़ीर न हूँ जब के तूने मुझको फ़ुक़रा मे रखा है या कैसे मै फ़क़ीर हूँ जब के तूने

لِكُلِّ شَىْءٍ فَمَا جَهِلَكَ شَىْءٌ وَاَنْتَ ٱلَّذِىْ تَعَرَّفْتَ إِلَىَّ فِىْ كُلِّ

अपने वजूद व अता से मुझको ग़नी बना दिया है और तू खुदा है तेरे अलावा कोई नही है तू हर एक

شَىْءٍ فَرَاَيْتُكَ ظَاهِرًا فِىْ كُلِّ شَىْءٍ وَاَنْتَ ٱلظَّاهِرُ لِكُلِّ شَىْءٍ

के लिए मारूफ़ है कोई चीज़ तुझ से जाहिल नही है और तूही वो है जिस ने अपने को पहचनवाया है

يَا مَنِ اسْتَوٰى بِرَحْمَانِيَّتِهٖ فَصَارَ الْعَرْشُ غَيْبًا فِىْ ذَاتِهٖ

मुझे हर चीज़ मे तो मै तुझको हर चीज़ मे ज़ाहिर देखता हूँ और तू ज़ाहिर है हर चीज़ के लिए ऐ ख़ुदा

مَحَقْتَ ٱلْاٰثَارَ بِٱلْاٰثَارِ وَمَحَوْتَ ٱلْاَغْيَارَ بِمُحِيْطَاتِ اَفْلَاكِ

जो अपनी रहमानियत के साथ क़ाएम है यहाँ तक के अर्श उस की ज़ात मे ग़ाएब है तू ने आसार

ٱلْاَنْوَارِ يَا مَنِ احْتَجَبَ فِىْ سُرَادِقَاتِ عَرْشِهٖ عَنْ اَنْ تُدْرِكَهُ

को आसार के ज़रिए नाबूद किया है और अग़यार को महव किया है नूर के फ़लक के आहाता से ऐ

ٱلْاَبْصَارُ يَا مَنْ تَجَلّٰى بِكَمَالِ بَهَائِهٖ فَتَحَقَّقَتْ عَظَمَتُهُ مِنَ

वो ख़ुदा जो अपने अर्श के पर्दा मे छुपा है के निगाह उसको देख सके। ऐ ख़ुदा जो अपने कमाले नूर

ٱلْاِسْتِوَاءِ كَيْفَ تَخْفٰى وَاَنْتَ ٱلظَّاهِرُ ؟ اَمْ كَيْفَ تَغِيْبُ

के साथ रौशन हुआ तो उसकी अज़मत का ग़लबा मुतहकीक हुआ तो क्यो कर मख़फी हो सकता

وَأَنْتَ الرَّقِيبُ الْحَاضِرُ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ

है जब के तू ज़ाहिर है या तू क्योंकर ग़ाएब हो सकता है जब के तू निगेहबान और हाज़र है और तू

وَحْدَهُ

बेशक हर चीज़ पर क़ादिर है और उस ख़ुदा की हम्द है जो अकेला है।

मुख़तसर यह के जिसको तौफ़ीक़ हो इस दिन अरफ़ात में रहे। उसके लिए बहुत सी दुआएँ हैं। और इस दिन के बेहतरीन आमाल में यही दुआ है के साल के तमाम दिनों में यह दिन दुआ के लिए ख़ास उत्कर्षता रखता है। लेहाज़ा ज़िंदा और मुर्दा मोमिनीन के लिए दुआ ज़्यादा करनी चाहिए। और अब्दुल्लाह बिन जुनदब के बारे में रिवायत और बिरादराने मोमिनीन के लिए उनकी दुआ मश्हूर है। और ज़ैदे नरसी की रिवायते सेका जलीलुल क़द्र माविया बिन वहब के मौक़फ के बारे में। और उनके आफ़ाक के एक एक व्यक्ति की दुआ के बारे में।

और फिर उनकी इमामे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत इस अज़ीम काम की फ़ज़ीलत के बारे में क़ाबिले दीद है। और बिरादरे ईमान से उम्मीद है के इन बुज़ुर्गवार की इक्तेदा करेंगे। और मोमिनीन के लिए अपनी दुआ में ईसार करेंगे और इस गुनहगार को भी उन लोगों में से एक क़रार देंगे और ज़िन्दगी और मौत हर हाल में दुआ से फ़रामोश न करेंगे। उस दिन तीसरी ज़ियारते जामेआ को भी अरफ़ा के दिन के अंत में पढ़ना चाहिए।

लेखक के अनुसार सय्यद इब्ने ताऊस ने अरफ़ा के दिन की दुआओं के बारे में फ़रमाया है के जब सूरज के डूबने का समय हो तो कहे:

يَا رَبِّ إِنَّ ذُنُوبِي لَا تَضُرُّكَ وَإِنَّ مَغْفِرَتَكَ لِي لَا تَنْقُصُكَ فَأَعْطِنِي مَا

ऐ परवरदिगार मेरा गुन्हा तुझको नुक़सान न पहूँचा सकेगा और मेरी मग़िफ़रत तुझ मे कुछ कमी न पैदा कर सकेगी

فिर ये पढ़ना मुस्तहब है: لَا يَنْقُصُكَ وَاغْفِرْ لِي مَا لَا يَضُرُّكَ

तू मुझको अता कर वो जिस से तेरे यहाँ कमी न होती हो और बख़्श दे वो जो तुझको नुक़सान न करता हो।

اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنِي خَيْرَ مَا عِنْدَكَ لِشَرِّ مَا عِنْدِي فَإِنْ أَنْتَ

ख़ुदाया मुझको महरूम न करना उस नेकी से जो तेरे नज़दीक है उस बुराई की बिना पर जो मेरे

لَمْ تَرْحَمْنِي بِتَعَبِي وَنَصَبِي فَلَا تَحْرِمْنِي أَجْرَ الْمُصَابِ عَلٰى

पास है अगर तू मुझ पर रहम न करे मेरी तक्लीफ़ व ज़हमत मे तू मुझको महरूम न करना मुसीबत

مُصِيبَتِهِ

के उठाने के अजर से।

यह वही दुआ-ए-अशरात है जो पहले गुज़र चुकी है। लेहाज़ा दुआ-ए-अशरात का अरफ़ा के दिन के अंत में पढ़ना भी मुस्तहब है। अशरात के यह अज़कार जिनको कफ़अमी ने नक़्ल किया है यह वही हैं जिनको सय्यद ने नक़्ल किया है।

दसवीं रात

निहायत बरकत वाली रात है और उन चार रातों में से है जिन में बेदारी मुस्तहब है और उसमें आसमान के दरवाज़े खुले रहते हैं। और सुन्नत है के उसमें ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) और दुआ يَا دَائِمَ الْفَضْلِ عَلَى الْبَرِيَّةِ पढ़े जो शबे जुमा के ज़ेल में गुज़र चुकी है।

दसवां दिन

ईदे अज़हा का दिन है और बड़ी फ़ज़ीलत वाला दिन है। इस दिन के चंद आमाल हैं:

(१) इस दिन ग़ुस्ल करना सुन्नते मुवक्केदा है और बाज़ ओलमा ने वाजिब

भी कहा है।
(२) नमाज़े ईद पढ़ना उस तरह जैसे ईदे फ़ित्र के सिलसिले में गुज़र चुका है। लेकिन इस रोज़ मुस्तहब यह है के इफ़्तार नमाज़ के बाद क़ुरबानी के गोश्त से करे।
(३) नमाज़े ईद से क़ब्ल और बाद उन दुआओं को पढ़े जो इक़्बाल में ज़िक्र हुई हैं और शायद बेहतरीन दुआ सहीफ़े कामेला की अडतालीसवीं दुआ है जिस का शुरू:
अल्लाहुम्म हाज़ा यवमुन मोबारकुन...
है और फिर छियालिसवीं दुआ
या मन ला यरहमोहुल इबाद
को भी पढ़े।
(४) दुआ नुदबा पढ़े जो आगे आ रही है।
(५) क़ुबरानी करना सुन्नते मुवक्केदा है।
(६) तकबीर का पढ़ना उस व्यक्ति के लिए जो मिना में हो पंद्रह नमाज़ों के बाद जिसकी शुरूआत ईद के दिन की ज़ोहर नमाज़ से होगी। और अंत तेरहवीं तारीख़ की सुबह की नमाज़ पर होगी। और जो लोग दूसरे शहरों में हों वह दस नमाज़ों के बाद पढ़ें जिसकी शुरूआत ईद के दिन के ज़ोहर से होगी और अंत बारह ज़िलहज की सुबह की नमाज़ को होगी। काफ़ी की रिवायत के एतबार से वह तकबीरात यह हैं:
वह तकबीरात यह हैं:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ

وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ اللّٰهُ اَكْبَرُ عَلٰى مَا هَدَانَا اللّٰهُ اَكْبَرُ عَلٰى مَا رَزَقَنَا مِنْ

بَهِيمَةِ الْاَنْعَامِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا اَبْلَانَا

इन तकबीरों की तक़रार नमाज़ों के बाद बक़द्रे इमकान मुस्तहब है और नमाज़े नाफ़ला के बाद भी मुस्तहब है।

पंद्रहवां दिन

सन २१२ हिजरी में विलादते इमामे अली नक़ी (अ.स.) है।

अठ्ठारहवीं रात

शबे ईदे ग़दीर है। इसकी फ़ज़ीलत बहुत है। सय्यद (र.अ.) ने इक़्बाल में बारह रकअत नमाज़ एक सलाम के साथ मख़सूस कैफ़ियत के साथ और इस रात के लिए एक दुआ भी नक़्ल की है।

अठ्ठारहवां दिन

ईदे ग़दीर

ईदे ग़दीर का दिन है। यह अल्लाह की अज़ीम तरीन ईद है और आले मोहम्मद (अ.स.) के लिए अज़ीम तरीन ईदों में है। परवरदिगारे आलम ने हर पैग़म्बर के लिए इस दिन को ईद क़रार दिया है और मोहतरम बनाया है और उसका नाम आसमान में रोज़े ईदे मवउद और ज़मीन में प्रतिज्ञा का दिन और जमे मशहूद करार दिया है। रिवायत में है के हज़रत इमामे सादिक़ (अ.स.) से लोगों ने पूछा के मुसलमान के लिए जुमा, ईदुज़ ज़ोहा और ईदुल फित्र के अलावा भी कोई ईद है? तो आप (अ.स.) ने कहा के हाँ ईद है और वह सबसे ज़्यादा अज़ीम है। रावी ने पूछा के वह कौन सी ईद है? जवाब दिया के वह दिन है जिस दिन रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) को अपनी ख़िलाफ़त के लिए मनसूब किया और फ़रमाया के जिसका मैं मौला हूँ उसके अली भी मौला हैं। और वह अठ्ठारह ज़िलहज है। रावी ने पूछा के इस दिन कौन से काम करने चाहिए? फ़रमाया के रोज़ा रखना चाहिए, इबादत करना चाहिए। मोहम्मदो आले मोहम्मद को याद करना चाहिए। उन पर दुरूद

भेजना चाहिए और ख़ुद रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने इमाम अली (अ.स.) से वसीयत की है के इस दिन को ईद समझे। और हर पैग़म्बर ने अपने वसी को वसियत की है के इस दिन को ईद क़रार दें, और हदीसे इब्ने अबी नस्र बज़ंती में है के इमामे रज़ा (अ.स.) ने फ़रमाया: ए इब्ने अबी नस्र जहाँ कहीं भी रहो कोशिश करो के ईदे ग़दीर के दिन इमाम अली (अ.स.) की क़ब्र के पास रहो। ब तहक़ीक़ के ख़ुदावंदे आलम इस रोज़ हर मोमिन और मोमिना के साठ साल के गुनाहों को माफ़ करता है। और इस दिन जहन्नम की आग से उसके दो गुना लोगों को आज़ाद करता है जितने रमज़ान और शबे क़द्र और शबे ईदे फित्र में आज़ाद करता है। इस दिन बिरादरे मोमिन को एक दिरहम देना हज़ार दिरहम देने के बराबर है और इस रोज़ बिरादरे ईमानी के साथ एहसान करो और मोमिनीनो मोमिनात को ख़ुश करो। बख़ुदा अगर लोगों को इस दिन की फ़ज़ीलत बाक़ायदा मालूम हो जाए तो इस रोज़ दस दफ़ा मलाएका उनसे मुसाफ़ेहा करेंगे। मुख़्तसर यह के इस दिन की ताज़ीम लाज़म है और उसके चंद आमाल हैं: (१) रोज़ा रखना जो साठ साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और हदीस में है के यह रोज़ा दुनिया की आयु के बराबर है और सौ हज और सौ उमरा के बराबर है। (२) ग़ुस्ल करना। (३) ज़ियारते अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) पढ़ना और बेहतर यह है के इंसान जहाँ भी हो कोशिश करे के ख़ुद को क़ब्रे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) तक पहुँचा दे। और इमाम अली (अ.स.) की उस रोज़ तीन ज़ियारतें मनक़ूल हैं। एक उनमें से ज़ियारते अमीनुल्लाह है। जो नज़दीक और दूर से पढ़ी जाती है और वह ज़ियारते जामेआ मुतलक़ा में से है और ज़ियारत के वर्ग में इन्शाअल्लाह ज़िक्र होगी। (४) इस तावीज़ को पढ़े जिसे सय्यद (र.अ.) ने इक़्बाल में हज़रत रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) से नक़्ल किया है। (५) दो रकत नमाज़ पढ़े और सजदे में जाकर सौ बार शुक्रे ख़ुदा अदा करे और फिर सजदे से सर उठाए और फिर यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّكَ

ऐ ख़ुदा मै तुझ से सवाल करता हूँ के हम्द तेरे लिए है तू एक है तेरा कोई शरीक नही है, तू अकेला बेनियाज़ है

وَاحِدٌ اَحَدٌ صَمَدٌ لَمْ تَلِدْ وَلَمْ تُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَكَ كُفُوًا اَحَدٌ

न किसी का फ़रज़न्द है और न तेरा कोई फ़रज़न्द है और न तेरा कोई कफ़ू है और बेशक मोहम्मद तेरा बन्दा

وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ يَامَنْ هُوَ

और रसूल है। तेरा दुरूद हो उन पर और उन की आल पर। ऐ वो ख़ुदा जिस की हर राज़ एक शान है जैसा के

كُلَّ يَوْمٍ فِي شَاْنٍ كَمَا كَانَ مِنْ شَاْنِكَ اَنْ تَفَضَّلْتَ عَلَيَّ بِاَنْ

तेरी शान से था के तू मुझ पर फ़ज़्ल करे इस तरह के तूने मुझको क़रार दिया। अपने मक़बूलुद दुआ लोगां मे

جَعَلْتَنِي مِنْ اَهْلِ اِجَابَتِكَ وَ اَهْلِ دِينِكَ وَ اَهْلِ دَعْوَتِكَ وَ

और अपने दीन दार बन्दों मे और अपने बुलाने वाला मे और मुझको इस की तौफ़ीक़ अता कर मेरी ख़िलक़त

وَفَّقْتَنِي لِذٰلِكَ فِي مُبْتَدَءِ خَلْقِي تَفَضُّلاً مِنْكَ وَ كَرَمًا وَ جُودًا

की इब्तेदा मे अपने फ़ज़्ल व करम और जूदो अता से फिर फ़ज़्ल के बाद दूसरा फ़ज़्ल भी दिया और जूद के बाद

ثُمَّ اَرْدَفْتَ الْفَضْلَ فَضْلاً وَ الْجُودَ جُودًا وَ الْكَرَمَ كَرَمًا

दूसरा जूद और करम के बाद दूसरा करम भी अता किया अपनी महेरबानी और रहमत से यहाँ तक के इस अहेद

رَاْفَةً مِنْكَ وَرَحْمَةً اِلٰى اَنْ جَدَّدْتَ ذٰلِكَ الْعَهْدَ لِي تَجْدِيدًا بَعْدَ

को मेरे लिए तजदीद किया मेरी ख़िलक़त के बाद और मै तो बिल्कुल भुलाया हूआ था या सहू व निसयान मे

تَجْدِيدِكَ خَلْقِي وَ كُنْتُ نَسْيًا مَنْسِيًّا نَاسِيًا سَاهِيًا غَافِلاً

तेरी नेमत से ग़ाफिल था मगर तूने अपनी नेमत को मुकम्मल किया के मुझको उसे याद दिलाया और उसके

فَاَتْمَمْتَ نِعْمَتَكَ بِاَنْ ذَكَّرْتَنِىْ ذٰلِكَ وَ مَنَنْتَ بِهٖ عَلَىَّ وَ هَدَيْتَنِىْ

ज़रिए मुझ पर एहसान किया और उस के लिए मेरी हिदायत की तो अब तेरी शान से होना चाहिए। ऐ मेरे माबूद

لَهٗ فَلْيَكُنْ مِنْ شَاْنِكَ يَا اِلٰهِىْ وَ سَيِّدِىْ وَ مَوْلاَىَ اَنْ تُتِمَّ لِىْ

और सरदार मौला के तू उस नेमत को मेरे लिए मुकम्मल कर दे और मौत के वक़्त तक मुझ से उस का हिसाब

ذٰلِكَ وَ لاَ تَسْلُبْنِيْهِ حَتّٰى تَتَوَفَّنِىْ عَلٰى ذٰلِكَ وَ اَنْتَ عَنِّىْ رَاضٍ

न करना ताके मेरी मौत उस हाल मे हो के तू मुझ से राज़ी हो क्योंके तू नेमत अता करने वालों मे सब से ज़्यादा

فَاِنَّكَ اَحَقُّ الْمُنْعِمِيْنَ اَنْ تُتِمَّ نِعْمَتَكَ عَلَىَّ اَللّٰهُمَّ سَمِعْنَا وَ

हक़दार है के अपनी नेमत को मुझपर मुकम्मल करे। ख़ुदाया हमने सुना और इताअत की और तेरे बुलाने वाले

اَطَعْنَا وَ اَجَبْنَا دَاعِيَكَ بِمَنِّكَ فَلَكَ الْحَمْدُ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ

की आवाज़ पर लब्बैक कही तेरे लुत्फ़ की वजह से पस तेरे लिए हम्द है तेरे बख़्शने पर मेरे परवरदिगार और

اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ لاَ شَرِيْكَ لَهٗ وَ بِرَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ

तेरी जानिब बाज़गश्त है हम उस ख़ुदा पर ईमान लाए जो एक है जिसका कोई शरीक नही है और उस के रसूल

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ صَدَّقْنَا وَ اَجَبْنَا دَاعِىَ اللّٰهِ وَ اتَّبَعْنَا

मोहम्मद पर और हमने तसदीक़ की और अल्लाह की जानिब बुलाने वाले की दावत पर लब्बैक कही और हम

الرَّسُوْلَ فِىْ مُوَالاَةِ مَوْلٰينَا وَ مَوْلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

ने रसूल का इत्तेबा किया अपने मौला की दोसती और मोमिनीन के मौला अमीरूल मोमिनीन के मौला अली

عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ عَبْدِ اللّٰهِ وَ اَخِيْ رَسُوْلِهٖ وَ الصِّدِّيْقِ الْاَكْبَرِ وَ

इब्ने अबी तालिब की दोसती मे जो अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल के भाई हैं और सादिक़े अकबर हैं और

الْحُجَّةِ عَلٰى بَرِيَّتِهِ الْمُؤَيِّدِ بِهٖ نَبِيَّهٗ وَ دِيْنَهُ الْحَقَّ الْمُبِيْنَ عَلَمًا

ख़ुदा की हुज्जत है उसकी मख़लूक़ पर और उनके ज़रिए ख़ुदा ने अपने नबी और दीन की ताईद की है और वो

لِدِيْنِ اللّٰهِ وَ خَازِنًا لِعِلْمِهٖ وَ عَيْبَةَ غَيْبِ اللّٰهِ وَ مَوْضِعَ سِرِّ اللّٰهِ

दीन ख़ुदा की निशानी और उस के इल्म के ख़जिनादार है और ग़ैबे ख़ुदा का मरकज़ है और अल्लाह के राज़ का

وَ اَمِيْنِ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ وَ شَاهِدَهٗ فِيْ بَرِيَّتِهٖ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اِنَّنَا

मक़ाम है और अल्लाह के अमीन हैं उस की मख़लूक़ पर, और शाहिद हैं उसकी मख़लूक़ पर। ऐ ख़ुदा हमारे

سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا

परवरदिगार हम ने ईमान के लिए आवाज़ देने वाले की आवाज़ को सुना के ईमान लाओ अपने रब पर तो हम

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ

ईमान ले आए हमारे परवरदिगार हमारे गुन्हाओं को बख़्श दे और हमारी बुराईयां को माफ़ कर दे और नेकूकारों

رَبَّنَا وَ اٰتِنَا مَا وَعَدْتَنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَ لَا تُخْزِنَا يَوْمَ

के साथ हम को मौत दे। हमारे परवरदिगार हम को जिस का तूने वादा किया है अपने पैग़म्बरो से दे दे और

الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ فَاِنَّا يَا رَبَّنَا بِمَنِّكَ وَ لُطْفِكَ

हम को राज़े क़यामत रूस्वा न करना, बेशक तू वादा ख़िलाफ़ी नही करता है। बेशक ऐ हमारे परवरदिगार हम

أَجَبْنَا دَاعِيَكَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ وَصَدَّقْنَاهُ وَصَدَّقْنَا مَوْلَى

ने तेरे लुत्फ़ व एहसान की वजह से तेरे बुलाने वाले की दावत पर लब्बैक काही और रसूल का इत्तेबा किया

الْمُؤْمِنِيْنَ وَ كَفَرْنَا بِالْجِبْتِ وَ الطَّاغُوْتِ فَوَلِّنَا مَا تَوَلَّيْنَا

और उसकी तसदीक़ की और मोमिनीन के मौला की हमने तसदीक़ की और जिब्त व ताग़ूत का इन्कार किया

وَ احْشُرْنَا مَعَ أَئِمَّتِنَا فَإِنَّا بِهِمْ مُؤْمِنُوْنَ مُوْقِنُوْنَ وَ لَهُمْ

लेहाज़ा तू हमारी विलायत और ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा और हम को हमारे आइम्मा के साथ महसूर कर। हम

مُسَلِّمُوْنَ آمَنَّا بِسِرِّهِمْ وَ عَلَانِيَتِهِمْ وَ شَاهِدِهِمْ وَ غَائِبِهِمْ

उन पर ईमान व ईक़ान रखे हूए हैं और उन के सामने सर तसलीम ख़म किए हैं हम उन के पोशीदा और ज़ाहिर

وَ حَيِّهِمْ وَ مَيِّتِهِمْ وَ رَضِيْنَا بِهِمْ أَئِمَّةً وَ قَادَةً وَ حَسْبُنَا بِهِمْ

उमूर पर ईमान लाए। हाज़र व ग़ाएब पर ईमान लाए, ज़िन्दा व मुर्दा पर ईमान लाए और हम उन की इमामत,

بَيْنَنَا وَ بَيْنَ اللهِ دُوْنَ خَلْقِهِ لَا نَبْتَغِيْ بِهِمْ بَدَلًا وَ لَا نَتَّخِذُ مِنْ

क़यादत और सरदारी पर राज़ी रहे और हमारे लिए वो काफ़ी हैं हमारे और ख़ुदा के दरमियान और उनका कोई

دُوْنِهِمْ وَلِيْجَةً وَ بَرِئْنَا إِلَى اللهِ مِنْ كُلِّ مَنْ نَصَبَ لَهُمْ حَرْبًا

बदल नही चाहता हूँ और उन के अलावा किसी से तक़र्रूब नही तलाश करता हूँ और हम अल्लाह की तरफ़

مِنَ الْجِنِّ وَ الْإِنْسِ مِنَ الْأَوَّلِيْنَ وَ الْآخِرِيْنَ وَ كَفَرْنَا بِالْجِبْتِ

बराअत चाहते हर उस शख़्स से जो उन से जंग करे चाहे वो अव्वलीन व आख़िरीन के जिनो मे हो या इनसानो

وَ الطَّاغُوْتِ وَ الْاَوْثَانِ الْاَرْبَعَةِ وَ اَشْيَاعِهِمْ وَ اَتْبَاعِهِمْ وَ

मे और हम ने इन्कार किया जिब्त और तागूत और चारां बूतो और उन के मानने वालो और इत्तेबा करने वालां

كُلِّ مَنْ وَالاَهُمْ مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ مِنْ اَوَّلِ الدَّهْرِ اِلٰى اٰخِرِهٖ

से और हर उस शख़्स से जिस ने जिन व इन्स मे से उन से मोहब्बत की है ज़माने के आग़ाज़ से ईन्तेहा तक।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نُشْهِدُكَ اَنَّا نَدِيْنُ بِمَا دَانَ بِهٖ مُحَمَّدٌ وَّ اٰلُ مُحَمَّدٍ صَلَّى

ख़ुदाया मै तुझ को गवाह बनाता हूँ के मै उस दीन पर हूँ जिस को मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) ने दीन

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمْ وَ قَوْلُنَا مَا قَالُوْا وَ دِيْنُنَا مَا دَانُوْا بِهٖ مَا

कहा है और हमारा क़ौल वही है जो उनका क़ौल है और हमारा दीन वही है जो उनका दीन हे जो उन्होने कहा

قَالُوْا بِهٖ قُلْنَا وَ مَا دَانُوْا بِهٖ دِنَّا وَ مَا اَنْكَرُوْا اَنْكَرْنَا وَ مَنْ وَالَوْا

वो हमने कहा और जो दीन उनका है वही हमारी है और जिससे उन्होने इन्कार किया हम ने भी इनकार किया

وَالَيْنَا وَ مَنْ عَادَوْا عَادَيْنَا وَ مَنْ لَعَنُوْا لَعَنَّا وَ مَنْ تَبَرَّؤُا مِنْهُ

और जिस को उन्होंने दोस्त रखा हमने भी दोस्त रखा और जिसको उन्होंने दुश्मन रखा हमने भी उसे दुश्मन रखा

تَبَرَّاْنَا مِنْهُ وَ مَنْ تَرَحَّمُوْا عَلَيْهِ تَرَحَّمْنَا عَلَيْهِ اٰمَنَّا وَ سَلَّمْنَا وَ

और जिस पर उन्होंने लानत की हमने भी की और जिससे वो बरी हैं हम भी बरी हैं जिस पर उन्होंने रहम किया

رَضِيْنَا وَ اتَّبَعْنَا مَوَالِيْنَا صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَللّٰهُمَّ فَتَمِّمْ

हमने भी रहम किया, ईमान लाए, तसलीम किया राज़ी हुए और अपने मौला का ईत्तेबा किया अल्लाह का दुरूद

لَنَا ذٰلِكَ وَ لَا تَسْلُبْنَاهُ وَاجْعَلْهُ مُسْتَقِرًّا ثَابِتًا عِنْدَنَا وَ لَا

हो उनपर ख़ुदाया हमारे लिए उसको मुकम्मल करदे और उसको हमसे न छीन लेना और उसको हमारे नज़दीक

تَجْعَلْهُ مُسْتَعَارًا وَ اَحْيِنَا مَا اَحْيَيْتَنَا عَلَيْهِ وَ اَمِتْنَا اِذَا اَمَتَّنَا

मुस्तक़र और साबीत कर और उस को रेयायत न क़रार दे और हम को ज़िन्दा रख उसी पर और मौत दे उसी

عَلَيْهِ اٰلُ مُحَمَّدٍ اَئِمَّتُنَا فَبِهِمْ نَأْتَمُّ وَ اِيَّاهُمْ نُوَالِيْ وَ عَدُوَّهُمْ

पर जिस पर हमारे अइम्ममा आले मोहम्मद को ज़िन्दा रखा और मौत दी है हम उन्हीं को इमाम कहते हैं उन्ही

عَدُوَّ اللّٰهِ نُعَادِيْ فَاجْعَلْنَا مَعَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ

से मोहब्बत करते हैं और उन का दुश्मन जो ख़ुदा का दुश्मन है हम उसको दुश्मन रखते हैं तू हम को दुनिया व

الْمُقَرَّبِيْنَ فَاِنَّا بِذٰلِكَ رَاضُوْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

आख़िरत मे उन से साथ क़रार दे मुक़र्रबीन मे। हम इस पर राज़ी हैं। ऐ सबसे बड़े रहम करने वाले।

फिर सजदे में जाएँ और सौ बार اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और सौ बार شُكْرًا لِلّٰهِ कहें।
और रिवायत में है के जो व्यक्ति इस अमल को बजा लाए वह उस व्यक्ति का सवाब रखता है जो ईद के दिन रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) के पास रहा हो और उनसे बैअत की हो विलायत पर। और बेहतर यह है के इस नमाज़ को ज़वाल के क़रीब अदा करे के रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने उसी समय अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) को ग़दीरे ख़ुम में लोगों का इमाम और अपना ख़लीफ़ा मनसूब किया था। और पहली रकत में सूरह हम्द और दूसरी रकत में सूरह तौहीद पढ़े।
(६) गुस्ल करे और दो रकत नमाज़ अदा करे ज़वाल से आधा घंटा पहले। और हर रकत में एक बार हम्द और दस बार सूरह तौहीद दस बार आयतल

कुर्सा और दस बार सूरह क़द्र पढ़े जो एक लाख हज और एक लाख उमरा के बराबर है। और दुनिया और आिख़रत की हाजतों के पूरा होने का ज़रिया है। वाज़ेह रहे के इक़बाल में इस नमाज़ के तज़केरे में सूरह क़द्र आयतल कुर्सा पर मुक़द्दम है और अल्लामा मजलिसी ने ज़ादुल माद में इक़्बाल का इत्तेबा किया है और सूरह क़द्र को मुक़द्दम रखा है और हकीर ने भी दूसरी किताबों में ऐसा ही किया है। लेकिन अब जब मज़ीद जुसतुजू की तो आयतल कुर्सा को सूरह क़द्र पर मुक़द्दम पाया और एहतेमाल है के इक़्बाल में भूल हुई है। ख़ुद सय्यद से या उनसे नक़्ल करने वालों से सूरह हम्द के अदद के बारे में। और सूरह क़द्र के आयतल कुर्सा पर मुक़द्दम रखने के बारे में भी। और यह शायद कोई मुसताक़िल अमल हो इस नमाज़ के अलावा तो ये बहुत बईद है वल्लाहो आलम। बेहतर है के इस नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े: رَبَّنَا اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا

(७) दुआ नुदबा पढ़े।

(८) इस दुआ को पढ़े जिसे सय्यद इब्ने ताऊस ने शेख़ मुफ़ीद से नक़्ल किया है। अगर चाहे तो दुआए मबसूत को पढ़े जिसे सय्यद ने इक़्बाल में लिखा है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ نَبِيِّكَ وَعَلِيٍّ وَلِيِّكَ وَالشَّانِ

ऐ ख़ुदा मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे नबी मोहम्मद के हक़ के वासते से और तेरे वली अली के

وَالْقَدْرِ الَّذِىْ خَصَصْتَهُمَا بِهِ دُونَ خَلْقِكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى

हक़ के वासते से और शान व मक़ाम के वासते से जिससे तूने उन दोनो हज़रात को मख़सूस किया

مُحَمَّدٍ وَعَلِيٍّ وَاَنْ تَبْدَاَ بِهِمَا فِىْ كُلِّ خَيْرٍ عَاجِلٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

है मख़लूक़ के अलावा के तू दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व अले मोहम्मद पर और हर नेकी व ख़ूबी

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ الْاَئِمَّةِ الْقَادَةِ وَالدُّعَاةِ السَّادَةِ

उन दोनो को सबसे पहले अता कर। ख़ुदाया दूरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जो

وَالنُّجُومِ الزَّاهِرَةِ وَالاَعْلاَمِ الْبَاهِرَةِ وَسَاسَةِ الْعِبَادِ

इमाम है क़ाएद है और ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाले, सरदार, दरख़शन्दा सितारे, रोशन निशानी

وَاَرْكَانِ الْبِلاَدِ وَالنَّاقَةِ الْمُرْسَلَةِ وَالسَّفِيْنَةِ النَّاجِيَةِ

और बन्दों के पेशवा हैं। और शहर तौहिद के सुतून हैं और भेजे हूए ऊटनी और नजात देने वाले

الْجَارِيَةِ فِى اللُّجَجِ الْغَامِرَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

सफ़ीना हैं जो चलते हैं दरया की गहराई मे, ख़ुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद

خُزَّانِ عِلْمِكَ وَاَرْكَانِ تَوْحِيدِكَ وَدَعَائِمِ دِينِكَ وَمَعَادِنِ

पर जो तेरे इल्म के खज़ीनावार और तेरी तौहीद के रूक्न और तेरे दीन के सुतून और तेरे करम के

كَرَامَتِكَ وَصِفْوَتِكَ مِنْ بَرِيَّتِكَ وَخِيَرَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ

मादन और तेरी मख़लूक़ मे मूंताख़िब और तेरी मख़लूक़ मे बहतरीन हैं मुत्तक़ी, पाक व पाकीज़ा,

الاَتْقِيَاءِ الاَنْقِيَاءِ النُّجَبَاءِ الاَبْرَارِ وَالْبَابِ الْمُبْتَلٰى بِهِ

नेक किरदार बहतरीन हैं और दरवाज़ा हैं जिन पर लोगों का आना लाज़म है जो उस पे आया

النَّاسُ مَنْ اَتَاهُ نَجٰى وَمَنْ اَبَاهُ هَوٰى اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

उसने नजात पाई और जिसने इनकार किया वो हलाक़ हुआ। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद

وَآلِ مُحَمَّدٍ اَهْلِ الذِّكْرِ الَّذِيْنَ اَمَرْتَ بِمَسْاَلَتِهِمْ وَذَوِى

व आले मोहम्मद पर जो वो साहेबाने ज़िक्र हैं जिनसे मसाएल मालूम करने का हुकुम दिया है

الْقُرْبٰى الَّذِينَ اَمَرْتَ بِمَوَدَّتِهِمْ وَفَرَضْتَ حَقَّهُمْ وَجَعَلْتَ

और वो ज़िल कुर्बा हैं जिन की मोहब्बत का तूने हुकुम दिया है और जिन के हक़ को फ़र्ज़ किया है

الْجَنَّةَ مَعَادَ مَنِ اقْتَصَّ آثَارَهُمْ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

और जन्नत को उसका घर क़रार दिया हे जो उनकी पैरवी करे। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद

مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرُوا بِطَاعَتِكَ وَنَهَوْا عَنْ مَعْصِيَتِكَ وَدَلُّوا

व आले मोहम्मद पर जैसे के उन्होने तेरी इताअत का हुकुम दिया और तेरी मासियत से रोका है

عِبَادَكَ عَلٰى وَحْدَانِيَّتِكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ

और उसके हक़ के वासते से जो तेरे नबी, नजीब, मूंताख़िब और अमीन व रसूल हैं तेरी मख़लूक़

نَبِيِّكَ وَنَجِيبِكَ وَصَفْوَتِكَ وَاَمِينِكَ وَرَسُولِكَ اِلٰى خَلْقِكَ

की तरफ़ और अमीरूल मोमिनीन के हक़ के वास्ते से और यासूबुद्दीन और नेक लोगा के क़ाएद

وَبِحَقِّ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ وَيَعْسُوبِ الدِّينِ وَقَائِدِ الْغُرِّ

के हक़ के वासते से जो वसी है, वफ़ादार है, सिददीक़े अकबर और हक़ व बातिल के दरमियान

الْمُحَجَّلِينَ الْوَصِيِّ الْوَفِيِّ وَالصِّدِّيقِ الْاَكْبَرِ وَالْفَارُوقِ بَيْنَ

फ़र्क़ करने वाले हैं और तेरे लिए गवाह हैं और तेरी तरफ़ रहनुमाई करने वाले हैं और तेरे अम्र के

الْحَقِّ وَالْبَاطِلِ وَالشَّاهِدِ لَكَ وَالدَّالِّ عَلَيْكَ وَالصَّادِعِ

पहूँचाने वाले हैं। और तेरी राह मे जिहाद करने वाले हैं और तेरे बारे मे मलामत करने वालों की

بِاَمْرِكَ وَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِكَ لَمْ تَاخُذْهُ فِيكَ لَوْمَةُ

मलामत की परवा नही करते है के दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको

لَائِمٍ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَجْعَلَنِي فِي هٰذَا

इस रोज़ क़रार देदे जिसमे तू ने अपने वली के लिए अपनी मख़लूक़ की गर्दन मे अहेद डाला है

الْيَوْمِ الَّذِي عَقَدْتَ فِيهِ لِوَلِيِّكَ الْعَهْدَ فِي اَعْنَاقِ خَلْقِكَ

और जिन की विलायत की वजह से दीन को मुकम्मल किया है। उसकी ईज़्ज़त के पहचानने वालों

وَاَكْمَلْتَ لَهُمُ الدِّينَ مِنَ الْعَارِفِينَ بِحُرْمَتِهِ وَالْمُقِرِّينَ

मे और उस की फ़िज़लत का इक़रार करने वालो मे अपने जहन्नम से आज़ादी और छुटकारा पाने

بِفَضْلِهِ مِنْ عُتَقَائِكَ وَطُلَقَائِكَ مِنَ النَّارِ وَلَا تُشْمِتْ

वालों मे और अपनी नेमत से हसद करने वालों से मुझको आसूदा रख, ऐ ख़ुदा जिस तरह तूने

بِي حَاسِدِي النِّعَمِ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا جَعَلْتَهُ عِيدَكَ الْاَكْبَرَ

उस को ईदे अकबर करार दिया है उसका नाम आसमान मे रोज़ अहेद मअहेद और ज़मीन मे रोज़

وَسَمَّيْتَهُ فِي السَّمَاءِ يَوْمَ الْعَهْدِ الْمَعْهُودِ وَفِي الْاَرْضِ يَوْمَ

मीसाक माखूज़ और जमे मसूल क़रार दिया है दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

الْمِيثَاقِ الْمَاخُوذِ وَالْجَمْعِ الْمَسْؤُولِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

और उससे हमारी आँखों को उनके जमाल से रोशन कर और हमारी परागन्दगी को जमा कर और

مُحَمَّدٍ وَاَقْرِرْ بِهِ عُيُونَنَا وَاجْمَعْ بِهِ شَمْلَنَا وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَ اِذْ

हमारी हिदायत के बाद हमको गुमराह न करना और हम को अपनी नेमत का शुक्र करने वालों मे

هَدَيْتَنَا وَاجْعَلْنَا لِاَنْعُمِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

क़रार दे। ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले। ख़ुदा की हमद है जिसने हम को इस राज़ की फ़जीलत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ عَرَّفَنَا فَضْلَ هٰذَا الْيَوْمِ وَبَصَّرَنَا حُرْمَتَهُ

पहुँचवाई और उसकी इज़्ज़त दिखाई और हम को उससे मुकर्रम और उस की मारेफ़त से मुशरर्फ़

وَ كَرَّمَنَا بِهِ وَشَرَّفَنَا بِمَعْرِفَتِهِ وَهَدَانَا بِنُوْرِهِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

किया और हमारी हिदायत की अपने नूर से। ऐ अल्लाह के रसूल ऐ अमीरल मोमिनीन आप दोनो

يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَيْكُمَا وَعَلٰى عِتْرَتِكُمَا وَعَلٰى مُحِبِّيْكُمَا

पर और आप की इज़्ज़त और आप से मोहब्बत करने वाला पर बहतरीन सलाम है जब तक दिन

مِنِّيْ اَفْضَلُ السَّلَامِ مَا بَقِيَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَبِكُمَا اَتَوَجَّهُ

रात बाक़ी रहें और आप दोनो के वसीले से अपने रब और आप के रब की जानिब मुतवज्ज़ह होता

اِلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمَا فِيْ نَجَاحِ طَلِبَتِيْ وَقَضَاءِ حَوَائِجِيْ

हूँ अपने तलब की कामयाबी मे और अपनी हाजत के पूरा होने मे और अपने उमूर के आसान होने

وَتَيْسِيْرِ اُمُوْرِيْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

मे। ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ मोहम्मद व आले मोहम्मद के हक़ के वासते से दुरूद फ़रमा

اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَلْعَنَ مَنْ جَحَدَ حَقَّ هٰذَا

मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उस पर लानत कर जो इस रोज़ के हक़ का इन्कार करे और

الْيَوْمِ وَاَنْكَرَ حُرْمَتَهُ فَصَدَّ عَنْ سَبِيلِكَ لِاِطْفَاءِ نُورِكَ

उसकी हुरमत का मुन्किर हो के उसने बन्द कर दिया है तेरे दीन की राह तेरे नूर को बिछाने के लिए

فَاَبَى اللهُ اِلَّا اَنْ يُتِمَّ نُورَهُ اَللّٰهُمَّ فَرِّجْ عَنْ اَهْلِ بَيْتِ مُحَمَّدٍ

तो ख़ुदा ने भी तय कर दिया के वो अपने नूर को मुकम्मल करेगा। ख़ुदाया अपने नबी मोहम्मद के

نَبِيِّكَ وَاكْشِفْ عَنْهُمْ وَبِهِمْ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ الْكُرُبَاتِ

अहलेबैत को गशईश अता कर और उनसे और उन के ज़रिए मोमिनीन से तकलीफ़ों को दूर कर

اَللّٰهُمَّ امْلَاِ الْاَرْضَ بِهِمْ عَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وَجُوْرًا وَ

दे ख़ुदाया उन के जारिए ज़मीन को अद्ल व इन्साफ़ से भर दे जैसा के वो ज़ुल्म व जौर से भरी हुई

اَنْجِزْ لَهُمْ مَا وَعَدْتَهُمْ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ

है और जिसका तूने उन से वादा किया है वो पूरा कर दे के तू वादा ख़िलाफ़ नही है।

सयद इब्ने ताऊस ने इक़बालुल आमाल मे जो दुआ नक़ल की है उसे पढ़ना मुसतहब है।

(९) जब मोमिन से मुलाक़ात करे तो इस प्रकार तहनियत अदा करे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي جَعَلَنَا مِنَ الْمُتَمَسِّكِينَ بِوِلَايَةِ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ

हम्द उस अल्लाह के लिए जिसने हमे उनमे से क़रार दिया जो अली (अ.स.) और इमामों की

وَالاَئِمَّةِ عَلَيْهِمُ السَّلاَمُ

और ये भी पढ़ना मुसतहब है:

विलायत से जुड़े हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَكْرَمَنَا بِهٰذَا الْيَوْمِ وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُوفِيْنَ

हम्द ख़ुदा की के उसने मुझको अमीरूल मोमिनीन व अईम्मा की विलायत के मुतामस्सेकीन मे क़रार दिया

بِعَهْدِهِ اِلَيْنَا وَمِيثَاقِهِ الَّذِىْ وَاثَقَنَا بِهِ مِنْ وِلاَيَةِ وُلاَةِ اَمْرِهِ

हम्द ख़ुदा की जिसने हमको इस दिन के ज़रिए मुकर्रम किया व उस के अहेद के पूरा करने वाला मे क़रार

وَالْقَوَّامِ بِقِسْطِهِ وَلَمْ يَجْعَلْنَا مِنَ الْجَاحِدِينَ وَالْمُكَذِّبِينَ بِيَوْمِ

दिया व उस मिसाक का पूरा करनेवाला बनाया जिस का हमसे अहेद लिया यानी अपने औलियाए अम्र की

الدِّيْنَ

(१०) सौ बार पढ़े:

व ज़िम्मादारान अदालत को मोहब्बत व हमको रोज़े क़यामत का इन्कार करने वालों मे नही क़रार दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ جَعَلَ كَمَالَ دِينِهِ وَتَمَامَ نِعْمَتِهِ بِوِلاَيَةِ اَمِيرِ

हम्द है उस ख़ुदा के लिए जिस ने अपने दीन को मुकम्मल और अपनी नेमत को तमाम किया अमीरल

الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيِّ بْنِ اَبِى طَالِبٍ عَلَيْهِ السَّلاَمُ

मोमिनीन अली इब्ने अबी तालीब (अ.स.) की विलायत के ज़रिए।

और वाज़ेह रहे के इस बाफ़ज़ीलत दिन में अच्छे लिबास पहेन्ना, ज़ीनत करना, ख़ुशबू इस्तेमाल करना, ख़ुश होना, अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के शिओं को ख़ुश करना उनकी तक़सीरों को माफ़ करना, हाजतों को पूरा करना,

सिले रहम करना, अयाल के लिए वुसअत पैदा करना, मोमिनीन को खाना खिलाना रोज़ेदारों को इफ़्तार कराना, मोमिनीन से मुसाफ़ेहा करना, उनसे मुलाक़ात के लिए जाना, उन्हें देख कर मुस्कुराना, उनके लिए तोहफ़ा भेजना और विलायत की अज़ीम नेमत के लिए शुक्र बजा लाना, ज़्यादा सलवात पढ़ना और कसरत से इबादतो इताअत करना हर एक अमल अज़ीम तरीन फ़ज़ीलत का हामिल है और उस दिन जो एक दिरहम बिरादरे मोमिन को देता है वह उस एक लाख दिरहम के बराबर होता है जो उसके अलावा किसी और दिन दिया हो। और इस दिन मोमिन को खाना खिलाना तमाम पैग़ंबरों और सिद्दीक़ीन को खाना खिलाने के बराबर है और अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के ख़ुतबे में है के रोज़े ग़दीर जो व्यक्ति मोमिन रोज़ेदार को इफ़्तार कराए, इफ़्तार के समय, तो गोया उसने दस फ़ियाम को इफ़्तार कराया। किसी ने उठकर पूछा: ऐ अमीरल मोमिनीन! यह फ़याम क्या हैं? फ़रमाया एक लाख पैग़ंबर, सिद्दीक़ और शहीद। तो अब सोचो उस व्यक्ति का क्या हाल होगा जो तमाम मोमिनीन व मोमिनात की कफ़ालत करे? मैं उसके लिए ख़ुदा की बारगाह में ज़ामिन हूँ कुफ़्र से महफ़ूज़ रहनेका। मुख़्तसर यह के इस दिन की फज़ीलत ज़िक्र से बालातर है। यह दिन शिओं के आमाल के क़ुबूल होने का दिन है। और उनके ग़मों के दूर होने का दिन है। यही वह दिन है जिस दिन हज़रत मूसा (अ.स.) ने जादूगरों पर ग़लबा हासिल किया था। और ख़ुदा ने नमरूद की आग को जनाबे इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अ.स.) के लिए गुलज़ार बनाया था और वह सर्दो सलामती बन गई थी और हज़रते मूसा ने यूशा बिन नून को वसी बनाया था। और हज़रत ईसा (अ.स.) ने शमून सफ़ा को वसी बनाया था। और सुलैमान (अ.स.) ने अपनी रिआया को आसिफ़ बिन बराख़िया के ख़लीफ़ा होने पर गवाह बनाया था। और रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने असहाब के दरमियान रिश्तए उख़ूवत जोड़ा था। इस लिए इस रोज़ अक़्दे उख़ुव्वत मोमिनीन के साथ मुनासिब है। और उसका तरीक़ा जो शैख़ै ने मुस्तदरकुल वसाएल में ज़ादुल फ़िरदौस से नक़्ल किया है यह है के अपना दाहिना हाथ दूसरे बिरादरे मोमिन के हाथ पर रखे और कहे:

آخَيْتُكَ فِي اللهِ وَصَافَيْتُكَ فِي اللهِ وَصَافَحْتُكَ فِي اللهِ

मै तेरा भाई हुआ राहे ख़ुदा मे और मैने सफ़ाई की तुझसे राहे ख़ुदा मे और मैने तुझसे मुसाफेहा

وَعَاهَدْتُ اللّهَ وَمَلَائِكَتَهُ وَكُتُبَهُ وَرُسُلَهُ وَاَنْبِيَاءَهُ

किया राहे ख़ुदा मे और मैने ख़ुदा से और उस के मलाएका, किताबो, रसूलों, अंबिया और

وَالاَئِمَّةَ الْمَعْصُومِيْنَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ عَلٰى اَنِّي اِنْ كُنْتُ

अइम्माए मासूमीन (अ.स.) से अहेद किया है के मै अगर जन्नत वालों मे और शिफाअत वालों मे

مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ وَالشَّفَاعَةِ وَاُذِنَ لِي بِاَنْ اَدْخُلَ الْجَنَّةَ لَا

हूँ और मुझको इजाज़त दी गई के मै जन्नत मे दाख़ल हूँ तो मै जन्नत मे न दाख़ल हूँगा मगर ये के

اَدْخُلُهَا اِلَّا وَاَنْتَ مَعِي

तू मेरे साथ होगा।

फिर बिरादरे मोमिन कहे:

قَبِلْتُ

मै ने क़ुबूल किया।

फिर कहे:

اَسْقَطْتُ عَنْكَ جَمِيعَ حُقُوقِ الْاُخُوَّةِ مَا خَلَا الشَّفَاعَةَ وَالدُّعَاءَ

मैने साकित कर दिया तूझसे तमाम ह§क़ूक़ बरादरी को सिवाए शिफ़ाअत, दुआ और मुलाक़ात

وَالزِّيَارَةَ

के।

और मोहद्दिसे फ़ैज़ ने भी ख़ुलासतुल अज़कार में तक़रीबन ऐसा ही सीगए उखुव्वत ज़िक्र किया है।
फिर फ़रमाया के दूसरी तरफ़ वाला उसको क़ुबूल करे अपने लिए या अपने मुवक्किल के लिए उन शब्दों के साथ जो क़ुबूल करने पर दलालत करते हों। फिर साक़त कर दें एक दूसरे से तमाम हुक़ूके उख़ूव्वत को सिवा दुआ और मुलाक़ात के:

चौबीसवां दिन

मशहूर की बिना पर यह वह दिन है जिस दिन रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने नसारा नजरान से मुबाहेला किया और मुबाहेला करने से पहले अबा को दोश पर रखा और हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.), फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.व.व.) और इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ.स.) को अबा के अंदर लिया और कहा परवरदिगार हर पैग़ंबर के अहलेबैत थे जो मख़लूक़ में मख़सूस तरीन अफ़राद होते थे।
अब यह मेरे अहलेबैत हैं इनसे शक व गुनाह को दूर रखना और इन्हें इस तरह पाक रखना जो पाक रखने का हक़ है। फिर जिब्रईल (अ.स.) नाज़ल हुए और आयते तत्हीर उनकी शान में लेकर आए तो रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) उन्हीं चार अज़ीम हस्तियों को मुबाहेला के लिए ले गए।
जब नसारा की निगाह उन पर पड़ी और आंहज़रत की हक़्क़ानियत और नुज़ूले अज़ाब के आसार को देखा तो मुबाहेला की जुर्रत न की और मसलेहत करके क़ुबूले जिज़या की दरख़्वास की।
इसी रोज़ इमाम अली (अ.स.) ने हालते रूकू में साएल को अंगूठी दी थी। और आयत إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللهُ नाज़ल हुई थी।
मुख़्तसर यह के यह दिन इन्तेहाई शरफ़ और फ़ज़ीलत वाला है और उसमें चंद आमाल हैं:
उसमें चंद आमाल हैं:
(१) ग़ुस्ल।
(२) रोज़ा।
(३) दो रकत नमाज़े रोज़े ईदे ग़दीर की तरह। समय, कैफ़ियत और सवाब के

एतेबार से सिर्फ़ नमाज़े मुबाहेला में आयतल कुर्सा हुम फ़ीहा ख़ालेदून तक है। ये जहन्नम के लिग हैं और ये उसमे हमेशाँ रहेंगे।
यानि ये आयत और इसके बाद की दो आयनतें पढ़ें।

दुआ मुबाहेला

(४) दुआ मुबाहेला का पढ़ना जो माहे रमज़ान की दुआ सहेर की जैसी है और उसे शेख़ और सय्यद दोनों ने नक़्ल किया है लेकिन दोनों की रिवायतों में काफ़ी इख़्तेलाफ है और मैंने शेख़ की रिवायत को इख़्तेयार किया है जो मिसबाह के अनुसार है। दुआ मुबाहेला के बारे में इमामे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के इस तरह पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْـئَلُكَ مِنْ بَهَآئِكَ بِاَبْهَاهُ وَ كُلُّ بَهَآئِكَ بَهِیٌّ

ख़ुदाया मै तूझसे दुआ करता हूँ तेरे नूरानी तरीन मरातीबे अनवार के वास्ते से दर हालांकि तमाम

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْـئَلُكَ بِبَهَآئِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْـئَلُكَ مِنْ

मरातीब नूरानी हैं। ख़ुदाया मै सवाल करता हूँ तेरे कुल मरातीबे नूरानियत के वास्ते से ख़ुदाया मै

جَلاَلِكَ بِاَجَلِّهٖ وَ كُلُّ جَلاَلِكَ جَلِیْلٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْـئَلُكَ

सवाल करता हूँ तेरे आली तरीन जलाल के वासते से और तेरा हर जलाल आली है ख़ुदाया मै

بِجَلاَلِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْـئَلُكَ مِنْ جَمَالِكَ بِاَجْمَلِهٖ وَ كُلُّ

तुझ से सवाल करता हूँ तेरे कुल के कुल जलाल के वास्ते से, ख़ुदाया मै सवाल करता हूँ तुझ से

جَمَالِكَ جَمِیْلٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْـئَلُكَ بِجَمَالِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ

तेरे नेक तरीन जमाल के वास्ते से और तेरा हर जमाल नेक है, ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ

اَدْعُوْكَ كَمَا اَمَرْتَنِیْ فَاسْتَجِبْ لِیْ كَمَا وَعَدْتَنِیْ اَللّٰهُمَّ

तेरे कुल जमाल के वास्ते से, ख़ुदाया मै तुझको अपनी तरह दुआ करता हूँ जिस तरह तू ने हुकुम

اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ عَظَمَتِكَ بِاَعْظَمِهَا وَ كُلُّ عَظَمَتِكَ عَظِیْمَةٌ

दिया है तू क़ुबूल कर ले जैसे के तूने वादा किया है। ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ के तेरी

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِعَظَمَتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ

बुज़ुर्गतरीन अज़मत के हक़ के वास्ते से और तेरी कुल अज़मत बुज़ुर्ग है ख़ुदाया मै तुझ से सवाल

نُوْرِكَ بِاَنْوَرِهٖ وَ كُلُّ نُوْرِكَ نَیِّرٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِنُوْرِكَ

करता हूँ तेरी कुल की कुल अज़मत से वास्ते से, ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे रौशन

كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ رَّحْمَتِكَ بِاَوْسَعِهَا وَ كُلُّ رَحْمَتِكَ

तरीन नूर के वास्ते से दर हालाके तेरा हर नूर रौशन तरीन है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ

وَاسِعَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِرَحْمَتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَدْعُوْكَ

तेरे कुल नूर के वास्ते से ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरी वसी तरीन रहमत के वास्ते से

كَمَا اَمَرْتَنِیْ فَاسْتَجِبْ لِیْ كَمَا وَعَدْتَنِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ

और तेरी हर रहमत वसी है। ख़ुदाया मै तेरी कुल रहमत के वास्ते से सवाल करता हूँ ख़ुदाया मै

مِنْ كَمَالِكَ بِاَكْمَلِهٖ وَ كُلُّ كَمَالِكَ كَامِلٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ

तुझ से इसी तरह दुआ करता हूँ जिस तरह तूने मुझको हुकुम दिया है तो तू क़ुबूल कर ले जैसा

بِكَمَالِكَ كُلِّهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ كَلِمَاتِكَ بِاَتَمِّهَا وَ كُلُّ

के तून्ो वादा किया है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे बुलंदतरीन कमाल के वास्ते से दर

كَلِمَاتِكَ تَآمَّةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِكَلِمَاتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ

हालांके तेरा हर कमाल कामिल है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे कुल कमाल के वास्ते

اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ اَسْمَآئِكَ بِاَكْبَرِهَا وَ كُلُّ اَسْمَآئِكَ كَبِيْرَةٌ

से। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे मुकम्मल तरीन कलेमात के वास्ते से दर हालांके तेरे

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاَسْمَآئِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَدْعُوْكَ كَمَا

कुल कलेमात मुकम्मल हैं। ख़ुदाया मै तुझ से दरख़्वास्त करता हूँ के तेरे कुल कुल कलेमात के

اَمَرْتَنِيْ فَاسْتَجِبْ لِيْ كَمَا وَعَدْتَنِيْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

वास्ते से ख़ुदाया मै दरख़्वास्त करता हूँ तेरे बड़े नामो के ज़रिए दर हालांके तेरे सब नाम बड़े हैं।

مِنْ عِزَّتِكَ بِاَعَزِّهَا وَ كُلُّ عِزَّتِكَ عَزِيْزَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

ख़ुदाया मै सवाल करता हूँ तेरे कुल नामो से वास्ते से ख़ुदाया मै तुझको उसी तरह पुकार रहा हूँ

بِعِزَّتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ مَشِيَّتِكَ بِاَمْضَاهَا وَ

जैसे के तूने मुझको हुकुम दिया है तो तू क़ुबूल कर ले जैसा के तूने मुझसे वादा किया है। ख़ुदाया

كُلُّ مَشِيَّتِكَ مَاضِيَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِمَشِيَّتِكَ كُلِّهَا

मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरी बुलंद तरीन इज़्ज़त के वास्ते से दर हालांके तेरी हर इज़्ज़त बुलंद

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِقُدْرَتِكَ الَّتِی اسْتَطَلْتَ بِهَا عَلٰی كُلِّ

है मै तुझ से तेरी इज़्ज़त के वास्ते से सवाल करता हूँ मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरी नाफ़ज़ तरीन

شَیْءٍ وَ كُلُّ قُدْرَتِكَ مُسْتَطِیْلَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِقُدْرَتِكَ

मशीयत के वास्ते से जब के तेरी हर मशीयत नाफ़ज है। ख़ुदाया मै सवाल करता हूँ तेरी क़ुदरत

كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَدْعُوْكَ كَمَا اَمَرْتَنِیْ فَاسْتَجِبْ لِیْ كَمَا وَ

के वास्ते से जो तमाम चीज़ों पर मोहीत है जब के तेरी हर कुदरत मोहीत है। ख़ुदाया मै तुझ से

عَدْتَنِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ عِلْمِكَ بِاَنْفَذِهٖ وَ كُلُّ عِلْمِكَ

सवाल करता हूँ तेरी कुल क़ुदरत के वास्ते से। ख़ुदाया मै तुझ से उसी तरह दुआ करता हूँ जैसा तू

نَافِذٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِعِلْمِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ

ने हुकुम दिया है तो तू क़ुबूल कर ले जैसे के तू ने वादा किया है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ

مِنْ قَوْلِكَ بِاَرْضَاهُ وَ كُلُّ قَوْلِكَ رَضِیٌّ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ

तेरे नाफ़ज़ इल्म के वास्ते से दर हालाके तेरा हर इल्म नाफ़ज है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ

بِقَوْلِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ مَسَآئِلِكَ بِاَحَبِّهَا كُلُّهَا

तेरे कुल इलम के वास्ते से ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे पसंदीदा तरीन क़ौल के वास्ते से

اِلَیْكَ حَبِیْبٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِمَسَآئِلِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ

जब के तेरा हर क़ौल पसंदीदा है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे कुल क़ौल के वास्ते से।

اِنِّیۤ اَدْعُوْكَ كَمَا اَمَرْتَنِیْ فَاسْتَجِبْ لِیْ كَمَا وَعَدْتَنِیْ اَللّٰهُمَّ

ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे महबूब तरीन मसाएल के वास्ते से जब के तेरी हर पूरी की

اِنِّیۤ اَسْئَلُكَ مِنْ شَرَفِكَ بِاَشْرَفِهٖ وَ كُلُّ شَرَفِكَ شَرِيْفٌ

हुई हाजत पसंदीदा है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरी कुल की कुल पूरी की हुई हाजत के

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۤ اَسْئَلُكَ بِشَرَفِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۤ اَسْئَلُكَ مِنْ

वास्ते से, ख़ुदाया मै तुझ को वैसे पुकारता रहा हूँ जैसा के तू ने हुकुम दिया है तो तू क़ुबूल कर ले

سُلْطَانِكَ بِاَدْوَمِهٖ وَ كُلُّ سُلْطَانِكَ دَآئِمٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۤ اَسْئَلُكَ

जैसा के तू ने वादा किया है ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे शरीफ़ तरीन शर्फ़ के वास्ते से

بِسُلْطَانِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۤ اَسْئَلُكَ مِنْ مُلْكِكَ بِاَفْخَرِهٖ وَ كُلُّ

जब के तेरा हर शर्फ़ शरीफ़ है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे हर शर्फ के वास्ते से, ख़ुदाया

مُلْكِكَ فَاخِرٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۤ اَسْئَلُكَ بِمُلْكِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۤ

मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरी दाएमी बादशाहत के वास्ते से जब के तेरी हर हुकूमत दाएमी है।

اَدْعُوْكَ كَمَا اَمَرْتَنِیْ فَاسْتَجِبْ لِیْ كَمَا وَعَدْتَنِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۤ

खुदाया मै तेरी कुल बादशाहत के ज़रिए तुझ से सवाल करता हूँ ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता

اَسْئَلُكَ مِنْ عَلَآئِكَ بِاَعْلَاهُ وَ كُلُّ عَلَآئِكَ عَالٍ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۤ

हूँ तेरी बहतरीन मालीकियत के वास्ते से जब के तेरी हर मिलकियत बेहतरीन है। ख़ुदाया मै तुझ

اَسْئَلُكَ بِعَلاٰئِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ مِنْ اٰيَاتِكَ بِاَعْجَبِهَا

से सवाल करता हूँ तेरी कुल की कुल मिलकियत के वास्ते से। ख़ुदाया मै तुझ से वैसे ही दुआ

وَ كُلُّ اٰيَاتِكَ عَجِيْبَةٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ بِاٰيَاتِكَ كُلِّهَا اَللّٰهُمَّ

करता हूँ जैसे तूने हुकुम दिया है तो तू क़ुबूल कर ले जैसा के तूने वादा किया है। खुदाया मै तुझ से

اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ مِنْ مَنِّكَ بِاَقْدَمِهٖ وَ كُلُّ مَنِّكَ قَدِيْمٌ اَللّٰهُمَّ

सवाल करता हूँ तेरे बुलंद व आली मरतबे के वास्ते से जब के तेरी हर बुलंदी बुलंद है। ख़ुदाया मै

اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ بِمَنِّكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَدْعُوْكَ كَمَا اَمَرْتَنِیْ

तुझ से तेरी कुल बुलंदी के ज़ारिए सवाल करता हूँ, ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरी अजब

فَاسْتَجِبْ لِیْ كَمَا وَعَدْتَنِیْ اَللّٰهُمَّ وَ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ بِمَا اَنْتَ

तरीन आयतों के वास्ते से। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे क़दीम एहसान के वास्ते से जब

فِيْهِ مِنَ الشُّئُوْنِ وَالْجَبَرُوْتِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ شَاْنٍ

के तेरा कुल एहसान क़दीम है। ख़ुदाया मै तेरे कुल एहसान के वास्ते से सवाल करता हूँ। ख़ुदाया

وَ كُلِّ جَبَرُوْتٍ اَللّٰهُمَّ وَ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ بِمَا تُجِيْبُنِیْ بِهٖ حِيْنَ

मै तुझ से दुआ करता हूँ जैसा के तू ने हुकुम दिया है तो तू क़ुबूल कर ले जैसा के तू ने वादा किया

اَسْئَلُكَ فَاَجِبْنِیْ يَا اَللّٰهُ يَا لاۤ اِلٰهَ اِلاَّۤ اَنْتَ اَسْئَلُكَ بِبَهَآءِ لاۤ

है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ उस के ज़रिए जो शान और जबरूतियत तेरी है। ख़ुदाया

اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْئَلُكَ بِجَلَالِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

मै तुझ से सवाल करता हूँ हर शान और जबरूत के वास्ते से। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ

يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْئَلُكَ بِلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَدْعُوْكَ

उस चीज़ के वास्ते से के तू क़ुबूल करता है जब मै तुझ से सवाल करता हूँ। ऐ ख़ुदा। ऐ वो माबूद

كَمَا اَمَرْتَنِيْ فَاسْتَجِبْ لِيْ كَمَا وَعَدْتَنِيْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

के तेरे अलावा कोई माबूद नही है मै तुझ से सवाल करता हूँ ला इलाहा इल्लल्लाह अनता के नूर के

مِنْ رِزْقِكَ بِاَعَمِّهٖ وَ كُلُّ رِزْقِكَ عَامٌّ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

वास्ते से मै तुझ से सवाल करता हूँ ला इलाहा इल्लल्लाह अनता के जलाल के वास्ते से, ऐ वो के

بِرِزْقِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ عَطَآئِكَ بِاَهْنَاهٖ وَ كُلُّ

तेरे अलावा कोई माबूद नही है मै तुझ से सवाल करता हूँ ला इलाहा इल्लल्लाह अनता के वास्ते से

عَطَآئِكَ هَنِيْءٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِعَطَآئِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ

ख़ुदाया मै तुझ से इसी तरह दुआ करता हूँ जैसा के तू ने हुकुम दिया है तो तू क़ुबूल कर ले जैसा

اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِكَ بِاَعْجَلِهٖ وَ كُلُّ خَيْرِكَ عَاجِلٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ

के तू ने वादा किया है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे आम तरीन रिज़्क के वासते से

اَسْئَلُكَ بِخَيْرِكَ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ بِاَفْضَلِهٖ

जब के तेरा हर रिज़्क आम है। ख़ुदाया मै तेरे कुल रिज़्क के वास्ते से सवाल करतो हूँ। खुदाया

وَ كُلُّ فَضْلِكَ فَاضِلٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِفَضْلِكَ كُلِّهٖ

मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे गवारा तरीन अतीया के वास्ते से जब के तेरी हर अता गवारा है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَدْعُوْكَ كَمَا اَمَرْتَنِيْ فَاسْتَجِبْ لِيْ كَمَا وَعَدْتَنِيْ

ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरी कुल अता के वास्ते से ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَّابْعَثْنِيْ عَلَى الْاِيْمَانِ بِكَ

हूँ तेरी सूरअत वाली नेकी के वास्ते से जब के तेरी हर नेकी जल्दी वाली है। ख़ुदाया मै तुझ से

وَالتَّصْدِيْقِ بِرَسُوْلِكَ عَلَيْهِ وَاٰلِهِ السَّلَامُ وَالْوِلَايَةِ لِعَلِيِّ

सवाल करता हूँ तेरे कुल ख़ैर की ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरे फ़ाजिल तरीन फ़ज़्ल व

بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ وَ الْبَرَآئَةِ مِنْ عَدُوِّهٖ وَ الْاِئْتِمَامِ بِالْاَئِمَّةِ مِنْ

करम के वास्ते से जब के तेरा हर फ़ज़्ल ज़्यादा है। ख़ुदाया मै तुझ से सवाल करता हूँ तेरी कुल

اٰلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ فَاِنِّيْ قَدْ رَضِيْتُ بِذٰلِكَ يَا رَبِّ

इनायत के वास्ते से। ख़ुदाया मै तुझ से दुआ करता हूँ जैसा के तू ने हुकुम दिया है तो तू क़ुबूल

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ فِي الْاَوَّلِيْنَ وَ صَلِّ

कर ले जैसा के तू ने वादा किया है। ख़ुदाया दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझ

عَلٰى مُحَمَّدٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ وَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِي الْمَلَاۗءِ الْاَعْلٰى وَ

को महशूर कर अपने ऊपर इमान लाने और अपने रसूल की तसदीक़ पर उन पर और उन आले

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِى الْمُرْسَلِيْنَ اَللّٰهُمَّ اَعْطِ مُحَمَّدًا الْوَسِيْلَةَ

पाक पर सलाम हो और अली इब्ने अबी तलिब की विलायत पर और उन के दुश्मन से बराअत

وَ الشَّرَفَ وَ الْفَضِيْلَةَ وَ الدَّرَجَةَ الْكَبِيْرَةَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

पर और आले मोहम्मद (अ.स.) मे अईम्मा की पैरवी करने के ऊपर मे उस पर राज़ी हूँ ऐ मेरे

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ قَنِّعْنِىْ بِمَا رَزَقْتَنِىْ وَ بَارِكْ لِىْ فِيْمَا اٰتَيْتَنِىْ

परवरदिगार ख़ुदाया दुरूद भेज मोहम्मद पर जो तेरे बन्दे और रसूल हैं अव्वलीन मे और दुरूद

وَ احْفَظْنِىْ فِىْ غَيْبَتِىْ وَ فِىْ كُلِّ غَائِبٍ هُوَ لِىْ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

भेज मोहम्मद पर आख़रीन मे और दूरूद भेज मोहम्मद पर मल्लए आला मे और दुरूद नाज़ल

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ ابْعَثْنِىْ عَلَى الْاِيْمَانِ بِكَ وَ التَّصْدِيْقِ

फ़र्मा मोहम्मद पर मुरसलीन मे। ख़ुदाया मोहम्मद को अता कर वसीला और शरफ़ और फ़ज़ीलत

بِرَسُوْلِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَسْئَلُكَ خَيْرَ

और बुलंद दरजा ख़ुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझ को उस का

الْخَيْرِ رِضْوَانَكَ وَ الْجَنَّةَ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ الشَّرِّ سَخَطِكَ وَ

काने बना दे जो तूने रिज़्क़ मुझको दिया है और मुझको बरकत दे जो तू ने मुझको दिया है और

النَّارِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ احْفَظْنِىْ مِنْ كُلِّ

मुझको महफ़ूज़ कर मेरी ग़ैबत मे और हर ग़ाएब मे। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले

مُصِيْبَةٍ وَ مِنْ كُلِّ بَلِيَّةٍ وَ مِنْ كُلِّ عُقُوْبَةٍ وَمِنْ كُلِّ فِتْنَةٍ

मोहम्मद पर और मुझको महशूर करना अपने इमान और अपने रसूल की तसदीक़ पर। ख़ुदाया

وَ مِنْ كُلِّ بَلآَءٍ وَ مِنْ كُلِّ شَرٍّ وَّ مِنْ كُلِّ مَكْرُوْهٍ وَ مِنْ كُلِّ

दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मै तुझ से सवाल करता हूँ बेहतरीन नेकी

مُصِيْبَةٍ وَمِنْ كُلِّ اٰفَةٍ نَزَلَتْ اَوْ تَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ

यानी तेरी रज़ामंदी और जन्नत का और तेरी पन्हा चाहता हूँ बदतरीन बुराई यानी तेरी नाराज़गी

فِيْ هٰذِهِ السَّاعَةِ وَ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ وَ فِيْ هٰذَا

और जहन्नम से। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और ज़हमत से और

الشَّهْرِ وَ فِيْ هٰذِهِ السَّنَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَ

हर बुराई और ना पसंदीदा अम्र से और हर मुसीबत और हर आफ़त से जो नाज़ल हुई या नाज़ल

اقْسِمْ لِيْ مِنْ كُلِّ سُرُوْرٍ وَ مِنْ كُلِّ بَهْجَةٍ وَمِنْ كُلِّ اسْتِقَامَةٍ

होती है आसमान से ज़मीन पर इस वक़्त और इस रात, और इस दिन और इस महिना और इस

وَمِنْ كُلِّ فَرَجٍ وَمِنْ كُلِّ عَافِيَةٍ وَمِنْ كُلِّ سَلاَمَةٍ وَمِنْ كُلِّ

साल मे दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझको हर ख़ुशी से बहरामंद कर

كَرَامَةٍ وَمِنْ كُلِّ رِزْقٍ وَاسِعٍ حَلاَلٍ طَيِّبٍ وَمِنْ كُلِّ نِعْمَةٍ وَ

और हर सुरूर से और हर इस्तेक़ामत और हर कशाइश से और हर सलामती और हर करामत

مِنْ كُلِّ سَاعَةٍ نَزَلَتْ اَوْ تَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ فِيْ هٰذِهِ

और हर पाक व पाक़ीजा, हलाल वसी रिज़क से और हर नेमत और हर वुसअत से जो नाज़ल हुई

السَّاعَةِ وَفِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَفِيْ هٰذَا الْيَوْمِ وَفِيْ هٰذَا الشَّهْرِ وَ

या नाज़ल होती है आसमान से ज़मीन पर इस वक़्त और इस रात और इस दिन और इस महीने

فِيْ هٰذِهِ السَّنَةِ اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَتْ ذُنُوْبِيْ قَدْ اَخْلَقَتْ وَجْهِيْ

और इस साल मे ख़ुदाया अगर मेरे गुन्हों ने मेरे चेहरा को तेरे नज़्दीक बदनूमा कर दिया है और

عِنْدَكَ وَحَالَتْ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ وَغَيَّرَتْ حَالِيْ عِنْدَكَ فَاِنِّيْ

मेरे और तेरे दरमीयान हाएल हो गए हैं और मेरी हालत मुतग़ैयर हो गई है तेरे नज़्दीक तो मै तुझ

اَسْئَلُكَ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِيْ يُطْفَاُ وَبِوَجْهِ مُحَمَّدٍ حَبِيْبِكَ

से सवाल करता हूँ तेरी ज़ात के नूर के वास्ते से जो ख़ामोश नही होता है और मोहम्मद के वास्ते

الْمُصْطَفٰى وَبِوَجْهِ وَلِيِّكَ عَلِيٍّ الْمُرْتَضٰى وَبِحَقِّ اَوْلِيَآئِكَ

से जो तेरे मुन्ताख़िब हबीब हैं और तेरे वली अली मुर्तेजा के वास्ते से और तेरे मुन्ताख़िब वलियों

الَّذِيْنَ انْتَجَبْتَهُمْ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَغْفِرَ

के वास्ते से के तू दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरे गुज़श्ता गुन्हाओं

لِيْ مَا مَضٰى مِنْ ذُنُوْبِيْ وَاَنْ تَعْصِمَنِيْ فِيْمَا بَقِيَ مِنْ عُمْرِيْ وَ

को बख़्श दे और मेरी बाक़ी उमर मे मुझको महफ़ूज़ रख और मै तेरी पन्हा चाहता हूँ ख़ुदाया उस

اَعُوْذُبِكَ اللّٰهُمَّ اَنْ اَعُوْدَ فِيْ شَيْءٍ مِنْ مَعَاصِيْكَ اَبَدًا مَا

से के मै तेरी मासियत का एआदा करूँ जब तक तू मुझको बाक़ी रखे यहाँ तक के मौत आ जाए

اَبْقَيْتَنِيْ حَتّٰى تَتَوَفَّانِيْ وَاَنَا لَكَ مُطِيْعٌ وَاَنْتَ عَنِّيْ رَاضٍ وَاَنْ

और मै तेरा मुती रहूँ और तू मुझ से राज़ी रहे और तू मेरे अमल का ख़ात्मा अच्छाई पर कर और

تَخْتِمَ لِيْ عَمَلِيْ بِاَحْسَنِهٖ وَتَجْعَلَ لِيْ ثَوَابَهُ الْجَنَّةَ وَاَنْ تَفْعَلَ

उस का सवाब जन्नत को क़रार दे और तू मेरे साथ वो सुलूक कर जिस का तू अहेल है , ऐ तक़वा

بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ يَا اَهْلَ التَّقْوٰى وَيَا اَهْلَ الْمَغْفِرَةِ صَلِّ عَلٰى

वाले और ऐ मग़फिरत वाले दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मुझ पर रहम

مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَّارْحَمْنِيْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

कर अपनी रहमत से, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले

(५) वह दुआ पढ़े जो शेख़ और सय्यद ने रिवायत की है। दो रकत नमाज़ और सत्तर बार इस्तेगफ़ार के बाद और उसकी इब्तेदा ये है: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ और बेहतर है के इस रोज़ हर मोमिन और मोमिना के मौला की तास्सी में फ़ुक़्रा को सदक़ा दे। और उनकी ज़ियारत करे और ज़ियारते जामेआ पढ़ना है।

पच्चीसवां दिन

शरफ का दिन है। जिस दिन सूरह हल अता अहलेबैत (अ.स.) के बारे में नाज़ल हुआ है। जबके उन्होंने तीन दिन रोज़ा रखा और सामाने इफ़्तार को मिसकीन, यतीम व असीर को दे दिया और पानी से इफ़्तार कर लिया। मुनासिब यह है के शिआने अहलेबैत इन दिनों में बिल ख़ुसूस पच्चीसवीं

रात में अपने मौला की तास्सी करें मिस्कीनों और यतीमों को खाना खिलाने की सई करें और इस दिन रोज़ा रखें और क्योंके बाज़ ओलमा इसी दिन को मुबाहेला का दिन कहते हैं इस लिए ज़ियारते जामेआ और दुआए मुबाहेला पढ़ना भी मुनासिब है।

आख़री तारीख़े ज़िलहज

जो अरब के साल का अंतिम दिन है। सय्यद ने इक़्बाल में रिवायत की है के दो रकत नमाज़ पढ़े। हर रकत में हम्द एक बार और सूरह तौहीद दस बार और आयतल कुर्सी दस बार और नमाज़ के बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ مَا عَمِلْتُ فِي هٰذِهِ السَّنَةِ مِنْ عَمَلٍ نَهَيْتَنِي عَنْهُ وَلَمْ

ख़ुदाया इस साल मैने जो ऐसे आमाल किए हैं जिन से तूने रोका है और जिन से तू राज़ी नही

تَرْضَهُ وَنَسِيْتُهُ وَلَمْ تَنْسَهُ وَدَعَوْتَنِي إِلَى التَّوْبَةِ بَعْدَ اجْتِرَائِي

है और मै उन को भूल गया और तू नही भूला है और तूने मुझको तौबा की तरफ़ बुलाया मेरी

عَلَيْكَ، اَللّٰهُمَّ فَإِنِّي أَسْتَغْفِرُكَ مِنْهُ فَاغْفِرْ لِي، وَمَا عَمِلْتُ مِنْ

जूरअत के बा वजूद ख़ुदाया मै तुझ से मग़फिरत चाहता हूँ लेहाज़ा तू मुझको बख़्श दे और जो मै

عَمَلٍ يُقَرِّبُنِي إِلَيْكَ فَاقْبَلْهُ مِنِّي، وَلَا تَقْطَعْ رَجَائِي مِنْكَ يَا

ने अमल किया जो तुझ से क़रीब करता है तो तू उस को क़ुबूल कर ले और अपने से उम्मीद को

كَرِيْمُ.

मुनक़ता न कर ऐ करीम।

तो जब यह कहेगा तो शैतान कहेगा: मुझ पर वाय हो के मैंने बहुत कोशिश की और ज़हमत उठाई उसके हक में साल भर लेकिन उसने सब ख़राब कर दिया इन शब्दों द्वारा। और फिर गवाही देता है के उसने अपने साल को अच्छाई के साथ ख़त्म किया है।

वर्ग - ७

मुहर्रम

वाज़ेह रहे यह महीना अहलेबैत और उनके शिओं के लिए ग़म-ओ-अलम का महीना है। हज़रत इमामे रज़ा (अ.स.) का इर्शाद है के जब मुहर्रम का महीना आ जाता था तो मेरे आदरणीय पिता को कोई हंसता हुआ नहीं देख सकता था और आप पर मुसलसल ग़म-ओ-अलम तारी रहता था यहाँ तक के जब आशूरे का दिन आ जाता था तो वह केवल मुसीबत, ग़म और रोने का दिन होता था। और आप कहते थे के आज के दिन इमाम हुसैन (अ.स.) शहीद हुए हैं।

पहली रात

सय्यद ने इक़्बाल में इस रात की चंद नमाज़ें नक़्ल की हैं: (१) दो रकत नमाज़: हर रकत में सूरह हम्द और सूरह तौहीद। (२) दो रकत नमाज़। पहली रकत में सूरह हम्द और सूरह अनआम और दूसरी रकत में सूरह हम्द और सूरह यासीन। (३) दो रकत नमाज़: हर रकत में सूरह हम्द और ग्यारह बार सूरह तौहीद। रिवायत में है के रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया के जो व्यक्ति इस रात में दो रकत नमाज़ पढ़े और सुबह को जो साल का पहला दिन है रोज़ा रखे वह उस शख़्स की तरह है जिसने साल भर नेकी की पाबंदी की हो और वह तमाम साल महफ़ूज़ रहेगा और अगर मौत आ गई तो जन्नत में जाएगा। और सय्यद ने इस महीने के चाँद के लिए एक लंबी दुआ ज़िक्र की है और अगर संभव हो तो इस रात में दुआ, नमाज़ और क़ुरआन के साथ जागता रहे।

पहला दिन

वाज़ेह हो के मुहर्रम, हिजरी साल का प्रारंभ है। इस में दो अमाल हैं:
(१) रोज़ा: के रिवायते रय्यान बिन शबीब में हज़रत इमाम रज़ा (अ.स.) से मरवी है के जो इस दिन रोज़ा रखे और ख़ुदा को पुकारे ख़ुदा उसकी दुआ को क़ुबूल कर लेगा जैसा के जनाबे ज़करिया की दुआ क़ुबूल हुई है।
(२) ज़ियारते इमामे रज़ा (अ.स.) और मनक़ूल है के हज़रते रसूल (स.अ.व.व.) पहली मुहर्रम को दो रकत नमाज़ पढ़ते थे और नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हाथों को बुलंद करके यह दुआ तीन बार पढ़ते थे:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْاِلٰهُ الْقَدِيْمُ وَ هٰذِهِ سَنَةٌ جَدِيْدَةٌ فَاَسْئَلُكَ

ख़ुदाया तू क़दीमी माबूद है और ये नया साल है तो मै तुझ से सवाल करता हूँ इस मे शैतान से हिफ़ाज़त

فِيْهَا الْعِصْمَةَ مِنَ الشَّيْطَانِ وَالْقُوَّةَ عَلٰى هٰذِهِ النَّفْسِ الْاَمَّارَةِ

का और उस नफ़्स पर क़ूवत का जो बुराई का हुकुम देने वाला है और उस काम मे मशग़ूल रहने का

بِالسُّوْٓءِ وَالْاِشْتِغَالِ بِمَا يُقَرِّبُنِيْٓ اِلَيْكَ يَا كَرِيْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ

जो मुझको तुझ से क़रीब कर दे। ऐ करीम ऐ जलालत और कराम वाले ऐ निगहेबान उसके जिस का

وَالْاِكْرَامِ يَا عِمَادَ مَنْ لَّا عِمَادَ لَهٗ يَا ذَخِيْرَةَ مَنْ لَا ذَخِيْرَةَ لَهٗ

कोई निगहे-बान नही है। ऐ उसका ज़ख़ीरा जिस का कोई ज़ख़ीरा नही है ऐ पन्हा उस की जिस की कोई

يَا حِرْزَ مَنْ لَا حِرْزَ لَهٗ يَا غِيَاثَ مَنْ لَّا غِيَاثَ لَهٗ يَا سَنَدَ مَنْ لَا

पन्हा नही है। ऐ फ़रयाद रस उस के जिस के लिए कोई फ़रयाद रस नही है। ऐ सहारा उसका के जिस

سَنَدَ لَهُ يَا كَنْزَ مَنْ لاَ كَنْزَ لَهُ يَا حَسَنَ الْبَلاَءِ يَا عَظِيمَ الرَّجَآءِ

का कोई सहारा नही है। ऐ ख़ज़ाना उसका के जिस का कोई ख़ज़ाना नही है। ऐ बहतरीन आज़माइश

يَا عِزَّ الضُّعَفَآءِ يَا مُنْقِذَ الْغَرْقَىٰ يَا مُنْجِيَ الْهَلْكَىٰ يَا مُنْعِمُ يَا مُجْمِلُ

वाले, ऐ अज़ीम उम्मदी, ऐ कमज़ोरों की ताक़त ऐ डूबनेवालों को बचानेवाले ऐ हलाकत से बचानेवाले

يَا مُفْضِلُ يَا مُحْسِنُ اَنْتَ الَّذِىْ سَجَدَ لَكَ سَوَادُ اللَّيْلِ وَ نُوْرُ

ऐ जमाल वाले ऐ फ़ज़ल वाले ऐ एहसान वाले तू ही वो है जिस को रात की तारीकियों, दिन की रोशनी,

النَّهَارِ وَضَوْءُ الْقَمَرِ وَشُعَاعُ الشَّمْسِ وَدَوِيُّ الْمَآءِ وَحَفِيْفُ

चाँद की चमक, सूरज की शोआ और पानी की हरकत और दरख़्त की सरसराहट ने सजदा किया है।

الشَّجَرِ يَا اَللّٰهُ لاَ شَرِيْكَ لَكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا خَيْرًا مِّمَّا يَظُنُّوْنَ

ऐ ख़ुदा तेरा कोई शरीक नही है। ख़ुदाया हम को उस से जो लोग गुमान करते है बेहतर करार दे और

وَاغْفِرْ لَنَا مَا لاَ يَعْلَمُوْنَ وَلاَ تُؤَاخِذْنَا بِمَا يَقُوْلُوْنَ حَسْبِيَ اللّٰهُ

हमारे लिए बख़्श दे जो वो नही जानते हैं और हम से मवाख़ेज़ा न कर उस का जो वो कहते हैं अल्लाह

لاَ اِلٰهَ اِلاَّ هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اٰمَنَّا بِهٖ

मेरे लिए काफ़ी है कोई ख़ुदा नही है उस के अलावा उसी पर मै ने तवक्कुल किया है और वो अर्शे अज़ीम

كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ اِلاَّ اُولُوا الْاَلْبَابِ رَبَّنَا لاَ تُزِغْ

का परवरदिगार है। हम ईमान लाए हर उस चीज़ पर जो हमारे परवरदिगार के पास से है और सिवाए

قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ

अकलवालें के कोई समझ नही सकता है। ख़ुदाया हमारे दिलों को टेहड़ा न बना देना हिदायत के बाद

الْوَهَّابُ۔

और अपनी बारगाह से रहमत अता कर के तू ही रहमत अता करने वाला है।

शेख़ तूसी ने फ़रमाया है के मुहर्रम के पहले दस दिनों का रोज़ा मुस्तहब है लेकिन आशूरे के दिन रोज़े के बजाए अस्र तक खाने पीने से इम्साक करना चाहिए और उस समय बहुत थोड़ी सी ख़ाके शिफ़ा इस्तेमाल करे और सय्यद ने पूरे महीने के रोज़े की ताकीद की है के रोज़ा रोज़ेदार को हर गुनाह से महफूæज रखता है।

तीसरा दिन

यह वह दिन है जिस दिन जनाबे यूसुफ़ (अ.स.) क़ैदख़ाने से बाहर आए। जो व्यक्ति इस दिन रोज़ा रखेगा ख़ुदावंदे आलम उसकी मुश्किल को आसान कर देगा और उसके ग़म को दूर कर देगा और पैंगबर की रिवायत में है के दुआ भी क़ुबूल होगी।

नवाँ दिन

राज़े तासूआ। जिसके बारे में इमामे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के तासूआ वह दिन था जब फ़ौजे यज़ीद ने इमाम हुसैन (अ.स.) और उनके असहाब का महासेरा कर लिया। और आप से जंग करने पर आमादा हो गई। और इब्ने मरजाना और उमरे साद अपनी कसरते सिपाह की बिना पर ख़ुश हुए जो उनके लिए जमा हुई थी। और इमाम हुसैन (अ.स.) और उनके असहाब को कमज़ोर समझा गया। और यक़ीन कर लिया गया के अब कोई मददगारे इमाम आने वाला नहीं है और इराक़ वाले उनकी मदद नहीं करेंगे। उसके बाद फ़रमाया मेरे माँ बाप क़ुरबान हो जाए इस कमज़ोर मुसाफ़िर पर।

दसवीं रात

शबे आशूर है। और सय्यद ने इक़्बाल में इस शब के लिए दुआ और नमाज़ को बड़ी फ़ज़ीलत के साथ नक़्ल किया है और उनही नमाज़ों में से सौ रकत नमाज़ है जिस में हर रकत में सूरह हम्द और तीन बार सूरह तौहीद है। और सब से फ़ारिग़ होने के बाद सत्तर बार:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا

अल्लाह तआला पाक है सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है और कोई माबूद नही सिवाय अल्लाह के और

قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

अल्लाह सब से बड़ा है और कोई ताक़त व क़ुव्वत नही सिवाए अल्लाह के जो बुज़ुर्ग व बाला है।

और दूसरी रिवायत में है के अल-अलीइल अज़ीम के बाद इस्तेग़फ़ार भी करे और दूसरी नमाज़ चार रकत आख़िरे शब में जिसमे हर रकत में सूरह हम्द और आयतल कुर्सा, सूरह तौहीद, सूरह फ़लक़ और नास, दस दस बार है और फिर सलाम के बाद सौ बार सूरह तौहीद पढ़े। तीसरी नमाज़: चार रकत नमाज़ और भी है जिसमें हर रकत में हम्द और पचास बार सूरह तौहीद पढ़े। और यह नमाज़ नमाज़े अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) और सय्यद इब्ने ताऊस के अनुसार उसकी बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत है। फिर नमाज़ के बाद बहुत ज़्यादा ज़िक्रे ख़ुदा करे और सलवात भेजे रसूल और आले रसूल पर और लानत करे उनके दुश्मनों पर जितना हो सके।

इस रात को जागते रहने की फ़ज़ीलत में यह रिवायत नक़्ल की गई है के इसमें जागते रहना ऐसा ही है जैसे तमाम मलाएका की इबादत के साथ इबादत की हो और उसकी इबादत सत्तर साल की इबादत के बराबर है बल्के किसी के लिए तौफ़ीक़ शामिले हाल हो तो उसको इस रात में करबला में रहना चाहिए और इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत करना चाहिए और उनके रौज़े

के पास शब गुज़ारनी चाहिए के ख़ुदा इस तरह उसको इमाम हुसैन (अ.स.) के ख़ून में आग़ुश्ता शोहदा के साथ उठाएगा।

दसवां दिन - आशूरा

शहादते इमामे हुसैन (अ.स.) का दिन है और अइम्मए अतहार (अ.स.) और उनके शिओं के लिए हुज़्न और मुसीबत का दिन है। मुनासिब यह है के शिआ हज़रात इस रोज़ दुनिया के कामों में मशग़ूल न हों और अपने घर के लिए कुछ ज़ख़ीरा न करें और गिरयाओ ज़ारी और नौहा और अलम में मश्ग़ूल रहें। इमाम हुसैन (अ.स.) की मजलिसे ताज़यत क़ायम करें। मातम में इस प्रकार मश्ग़ूल रहें जिस प्रकार अज़ीज़ तरीन औलाद और आइज़्ज़ा के मातम में रहते हैं। इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारते आशूरा पढ़ें (जो बाद में आएगी) और उनके क़ातिलों पर लानत करें। और एक दूसरे को ताज़यत पेश करते हुए यह शब्द कहें:

أَعْظَمَ اللهُ أُجُورَنَا بِمُصَابِنَا بِالْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَجَعَلَنَا

ख़ुदावन्दे आलम अज़ीम करे हमारे अज्र को हमारी सोगवारी और मुसीबत मे इमाम हूसैन

وَإِيَّاكُمْ مِنَ الطَّالِبِيْنَ بِثَارِهِ مَعَ وَلِيِّهِ الإِمَامِ الْمَهْدِيِّ مِنَ آلِ

(अ.स.) पर और हम को और तुम को उन के ख़ून के तलब गारां मे क़रार दे अपने वली इमामे

مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ

मेहदी (अ.स.) से साथ जो आले मोहम्मद (अ.स.) मे से हैं।

मुनासिब है के इस रोज़ वाक़ेआते शहादत पढ़े और दूसरों को रूलाएँ।
रिवायत में है के जब जनाबे मूसा (अ.स.) को जनाबे ख़िज़्र (अ.स.) से मुलाक़ात करने और उनसे सीखने का हुक्म दिया गया तो मुलाक़ात में पहली

चीज़ जो मुज़ाकेरे में आई वह यह थी के उस आलिम ने हज़रत मूसा (अ.स.) से आले मोहम्मद (अ.स.) पर आने वाले मसाएब का तज़केरा किया और दोनों पर बहुत ज़्यादा गिरया तारी हुआ। इब्ने अब्बास से रिवायत है के मैं मक़ामे ज़िक़ार पर अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ख़िदमत में पहुँचा तो उन्होंने एक सहीफ़ा अपनी तहरीर और पैग़म्बर के इमला की सूरत में निकाला और मुझ को पढ़कर सुनाया जिसमे मक़तले इमाम हुसैन (अ.स.) के बारे में लिखा था। के वह किस तरह शहीद किये जाएँगे और कब और कौन कौन उनकी मदद करेगा और कौन उनके साथ शहीद होगा।

जिसके बाद हज़रत पर सख़्त गिरया तारी हुआ और मुझ पर भी गिरया तारी हो गया। लेखक: इस मकाम पर अगर गुंजाइश होती तो मक़तल का तज़केरा ज़रूर करता लेकिन गुंजाइश नहीं है। लेहाज़ा जो व्यक्ति चाहता है वह मक़ातिल की तरफ़ रूजू करे। बहर हाल अगर कोई व्यक्ति इस रोज़ कब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) के पास रहे और लोगों को पानी पिलाए तो उस व्यक्ति की तरह होगा जिसने आं हज़रत (अ.स.) के लशकर को पानी पिलाया हो और आं जनाब के साथ हाज़रे करबला रहा हो। इसके अलावा हज़ार बार सूरह तौहीद का पढ़ना भी बहुत फ़ज़ीलत रखता है।

और रिवायत में है के ख़ुदावंदे आलम उस पर निगाहे रहमता डालाता है और सय्यद ने इस दिन के लिए एक दुआ अशरात नक़्ल की है।

और ज़ाहिर यह है के यह ख़ुद दुआ अशरात ही है। उसकी बाज़ रिवायतों के अनुसार और शेख़ ने अब्दुल्लाह बिन सिनान से और उन्होंने इमाम सादिक़ (अ.स.) से नक़्ल किया है के इस रोज़ चाश्त के समय चार रकत नमाज़ अदा करे और दुआ पढ़े। हमने इख़्तेसार के ख़याल से इस नमाज़ का ज़िक्र नहीं किया है।

जो शख़्स चाहे ज़ादुल माद की ओर रूजू कर सकता है। और यह भी मुनासिब है के शिआ उस रोज़े के क़स्द के खाने पीने से इम्साक करें बादे अस्र तक। फिर इफ़तार करें मुसीबत ज़दा अफ़राद के खाने से।

जैसे मठ्ठा, दूध और उसके मिस्ल न के लज़ीज़ खाने। और मुनासिब है के पाकीज़ा कपड़े पहनें लेकिन बंद को खोल दें और आसतीनों को मुसीबत ज़दा

लोगों की तरह उपर चढ़ा लें। और अल्लामा मजलिसी ने ज़ादुल माद में फ़रमाया है के बेहतर है के नवीं या दसवीं को रोज़ा न रखें के बनी उमय्या इन दिनों में क़त्ले इमाम हुसैन (अ.स.) पे शमातत के लिए रोज़ा रखते थे। और बहुत सी हदीसें भी इन दो दिनों की फ़ज़ीलत और रोज़े के बारे में रसूल की तरफ़ से गढ़ी गई हैं।

जब के अहले बैत (अ.स.) के तरीक़े से बहुत सी हदीसें इन दोनों दिनों के रोज़े की मज़म्मत में और ख़ास तौर पर रोज़े आशूरा के बारे में वारिद हुई हैं। बनी उमय्या (ल.अ.) साल के आज़ूके की बरकत के लिए रोज़े आशूरा अपने घर में ज़खीरा किया वरते थे।

इस लिए हज़रत रज़ा (अ.स.) ने फ़रमाया के जो व्यक्ति अपनी हाजतों में कोशिश को तर्क कर दे आशूरे के दिन और किसी काम में न लगे तो ख़ुदा उसकी दुनिया और आिख़रत की हाजतों को पूरा करेगा।

और जो व्यक्ति आशूरे के दिन मुसीबत और गिरया व ग़म में रहेगा ख़ुदावंदे आलम उसके लिए रोज़े क़यामत को रोज़े सुरूर व ख़ुशी क़रार देगा और उसकी निगाह को बेहिश्त में रौशन कर देगा।

और जो व्यक्ति आशूरे के दिन को बरकत का दिन कहेगा और अपने घर के लिए उस दिन ज़ख़ीरा करेगा ख़ुदा उसके ज़ख़ीरे को बरकत वाला न क़रार देगा और यज़ीद, उबैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद और उमरे साद के साथ महशूर होगा। लेहाज़ा इंसान को आशूरे के दिन दुनिया के कामों में मशग़ूल न होना चाहिए। बल्के मुनासिब यह है के ख़ुद भी गिरया व नौहा व मुसीबत में रहे और घर वालों को भी अज़ा का हुक्म दे जैसा के औलाद व अक़रबा के मातम में होता है।

और बग़ैर रोज़े के खाने पीने से इम्साक करे और दिन के आख़री हिस्से में अस्र के बाद फ़ाक़ा शिकनी करे चाहे पानी ही से हो और रोज़ा मुकम्मल न करे मगर यह के ख़ास तौर पर उस दिन नज़र वग़ैरा का वाजिब रोज़ा हो तो उस दिन रोज़ा रखना होगा।

और इस दिन घर में खाना जमा न करे, हंसे नहीं, ल»ो लअेब में मशग़ूल न हो और हज़ार बार इमाम हुसैन (अ.स.) के क़ातिलों पर लानत करे और

कहे اَللّٰهُمَّ الْعَنْ قَتَلَةَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ (खुदावंदा लानत कर इमाम हुसैन (अ.स.) के क़ातिलों पर)

लेखक: उन बुज़ुर्गवार के कलाम से मालूम होता है के आशूरे के दिन की फ़ज़ीलत की हदीसें गढ़ी हुई हैं। और रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) की जानिब मनसूब कर दी गई हैं और शिफ़ाउस सुदूर के लेखक ने ज़्यारते आशूरा के इस फ़िक्रे:

अल्लाहुम्म इन्न हाज़ा यौमुन तबर्रकत बेही बनू उमय्या की शर्ह में कलाम को इस मक़ाम पर तूल दिया है। जिसका ख़ुलासा यह है के बनी उमय्या का उस दिन को बरकत क़रार देना चंद वुजूह से था।

एक यह के उस रोज़ ग़िज़ा और आज़ूका के ज़ख़ीरे को सुन्नत समझते थे और उस आज़ूके को दूसरे साल तक सरमाया सादत वसीले वुसअते रिज़्क समझते थे।

इस लिए अहादीसे अहलेबैत (अ.स.) में उनसे एराज़ करने के लिए मुक़र्रर नहीं वारिद हुई है।

दूसरे ईद की रसमों का क़ायम करना था।

अपने अयाल पर रिज़्क की वुसअत से नए कपड़े लाना, मूछें कतरवाने, नाख़ून कटवाना और मुसाफ़ेहा करना।

तीसरे उस दिन के रोज़े के बारे में बहुत सी हदीसें फ़ज़ीलत में गढ़ी गईं और ख़ुद उस दिन रोज़ा रखना ज़रूरी जाना गया।

चौथे आशूर के दिन को दुआ करना और अपनी हाजत के तलब करने को बिल ख़ुसूस मुस्तहब जाना गया।

और इस ओमूर के लिए हदीसें गढ़ी गईं और दूआएं बनाकर गुनेहगारों को तालीम दी गईं। ताकि हक़ीक़त मुश्तबा हो जाए।

चुनांचे लोग जो ख़ुतबा अपने शहरों में आज के रोज़ पढ़ते हैं उसमे आज के दिन के लिए हर नबी के लिए ज़्यादा शरफ़ की बातें बयान की जाती हैं जैसे नमरूद की आग का बुझना, कश्तिए नूह का ठहरना, फ़िरऔन के लश्कर का डूबना जनाबे ईसा (अ.स.) का सूली से नजात पाना और जैसा के शेख़ सदूक़ ने जबला मक्कीया से नक़्ल किया है कि मैने मीसमे तम्मर से सुना के

वल्लाह यह उम्मत दसवें दिन पैगंबर के पुत्र को क़त्ल करेगी और अल्लाह के दुश्मन उस दिन को बरकत का दिन जानेंगे और यह होकर रहेगा। यह ख़ुदा के इल्म में पहले से है। और मैं भी उसको उस अहद की वजेह से जानता हूँ जो अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की तरफ़ से मुझको पहुँचा है।
जबला कहता है कि मैंने कहा के लोग क़त्ले इमाम हुसैन (अ.स.) को किस तरह बरकत का दिन क़रार देंगे?
तो मीसम रोने लगे और कहा के लोग ऐसी हदीस गढ़ेगें के यह वह दिन है जिसमें ख़ुदा ने आदम की तौबा क़ुबूल की हालांके वाक्या यह है के आदम की तौबा को ज़िलहज्ज में क़ुबूल किया है।
फिर गुमान करेंगे के यह वह दिन है जब ख़ुदा ने जनाबे यूनुस (अ.स.) को मछली के पेट से बाहर निकाला।
हालांके ख़ुदा ने यूनुस (अ.स.) को मछली के पेट से ज़िलकाद में निकाला है। फिर गुमान करेंगे के आज ही के दिन जनाबे नूह (अ.स.) की कश्ती ने कोहे जूदी पर क़रार लिया है। हालांके यह वाकेआ १८ ज़िलहज का है। फिर गुमान करेंगे के इस रोज़ ख़ुदा ने मूसा (अ.स.) के लिए दरया में रास्ता बनाया था हालांके यह काम रबीउल अव्वल में हुआ था। मुख़्तसर यह है के इस मीसम की ख़बर ओ हदीस के बावजूद दर हक़ीक़त नबुव्वत ओ इमामत के अलाएम और मज़हबे शिआ के बरहक़ होने की वाज़ेह दलील है के उसमें उन चीज़ों का तज़केरा पाया जाता है जो यक़ीनन हो चुकी हैं और हो रही हैं। मगर लोगों ने ऐसी दुआएं बनाईं और बाज़ बेख़बर लोगों की किताबों में जो हक़ीक़त से ग़ाफ़िल थे ज़िक्र हो गईं और अवाम के हाथ में दे दी गईं जबके उन दुआओं का पढ़ना बिदअद और हराम है और वह दुआ यह है:
बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम सुब्हानल्लाहे मिलअल मीज़ान व मुनतहल इल्मे व मब्लगर रेज़ा वज़ेनलत अर्श। दो तीन सतरों के बाद है के दस बार सलवात पढ़े और कहे: या क़ाबेलत तौबते आदम यौम आशूरा, या राफेअ इद्रीस एलस समाए यौम आशूरा, या मोसक्केन सफ़ीनते नूह अलल ज़्दी यौमल आशूरा। या ग़यास इब्राहीम मेनन नारे... अंत तक।
इसमें कोई शक नहीं है के इस दुआ को मदीने के किसी नासबी या मसक़त के

किसी ख़ारजी ने गढ़ कर बनी उमय्या के मज़ालिम को मुकम्मल कर दिया है।
आशूरे के दिन के आमाल
बहर हाल आशूरा के दिन के अंतिम समय में इमाम हुसैन (अ.स.) के हरम और उनकी बेटियों और बच्चों के वाक़ेआत को नज़र में लाना चाहिए के उसी समय वह असीर हुईं और हुज़्न और गिरया में मसरूफ़ हुईं और उनपर वह मुसीबत गुज़र गई जिसे कोई दिल सोच भी नहीं सकता है और कलम को लिखने की ताब भी नहीं है। किसी शाएर ने ख़ूब लिखा है:

فَاجِعَةٌ اِنْ اَرَدْتُ اَكْتُبُهَا * مُجْمَلَةً ذِكْرَةً لِمُدَّكِرِ * جَرَتْ دُمُوعِی

वो बेशके बहुत बड़ा हादसा है अगर मै उसको लिखना चाहूँ। * पूरे तौर पर ताके एक मिसाल

فَحَالَ حَامِلُهَا * مَا بَيْنَ لَحْظِ الْجُفُونِ وَالزُّبُرِ * وَقَالَ قَلْبِی بُقْيَا عَلَیَّ

बाक़ी रहे। * मेरे आँसू बहेंगे और रासता रोकेंगे। * मेरी आँखों और काग़ज़ के दरमियान। * और

فَلَا * وَاللّٰهِ مَا قَدْ طُبِعْتُ مِنْ حَجَرِ * بَكَتْ لَهَا الْاَرْضُ وَالسَّمَاءُ

मेरा दिल विनती करेगा के उसकी जान बचा लूँ। * क्योंके वो पत्थर से नही बना। * उस मुसीबत

وَمَا * بَيْنَهُمَا فِی مَدَامِعٍ حُمُرِ

मे ज़मीन व आसमाँ रोए। * और जो उनके दरमियान है सब ख़ून के आँसू रोए।

इसके बाद उठकर रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.), अलीए मुर्तुज़ा (अ.स.), फ़ातेमा ज़हरा (अ.स.), हसने मुज्तबा (अ.स.) और इमाम हुसैन (अ.स.) की तमाम ज़ुर्रायत पर सलाम करे और उनको ताज़यत पेश करे इस अज़ीम मुसीबत पर जलते दिल और रोती आँखो के साथ। और फिर यह ज़ियारत पढ़े:

اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا وارِثَ آدَمَ صِفْوَةِ اللهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا

सलाम हो तुम पर ऐ आदम (अ.स.) के वारिस जो अल्लाह के बरगजीदा हैं, सलाम हो तुम पर

وارِثَ نُوحٍ نَبِيِّ اللهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا وارِثَ اِبْراهيمَ خَليلِ

ऐ नूह के वारिस जो अल्लाह के नबी हैं, सलाम हो तुम पर ऐ इबराहिम के वारिस जो ख़लील

اللهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا وارِثَ مُوسى كَليمِ اللهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا

अल्लाह हैं। सलाम हो तुम पर ऐ मूसा के वारिस जो कलीम अल्लाह हैं सलाम हो तुम पर ऐ

وارِثَ عيسى رُوحِ اللهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا وارِثَ مُحَمَّدٍ حَبيبِ

ईसा के वारिस जो रूहुल्लाह हैं। सलाम हो तुम पर ऐ मोहम्मद के वारिस जो अल्लाह के हबीब

اللهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا وارِثَ عَلِيٍّ اَميرِ الْمُؤْمِنينَ وَلِيِّ اللهِ اَلسَّلامُ

हैं। सलाम हो तुम पर ऐ अमीरल मोमिनीन अली (अ.स.) के वारिस जो वली अल्लाह हैं।

عَلَيْكَ يا وارِثَ الْحَسَنِ الشَّهيدِ سِبْطِ رَسُولِ اللهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ

सलाम जो तुम पर ऐ हसन शहीद के वारिस जो रसूले ख़ुदा के नवासे हैं। सलाम हो तुम पर

يَابْنَ رَسُولِ اللهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَابْنَ الْبَشيرِ النَّذيرِ وَابْنَ سَيِّدِ

ऐ फ़रजंदे रसूल अल्लाह। सलाम हो तुम पर ऐ बशारत देने वाले डराने वाले के फ़रज़ंद और

الْوَصِيّينَ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَابْنَ فاطِمَةَ سَيِّدَةِ نِساۤءِ الْعالَمينَ

वसीयों के सरदार के फ़रज़ंद। सलाम हो तुम पर ऐ फ़ातेमा अलमीन की औरतों की सरदार

اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا اَبا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا خِيَرَةَ اللهِ وَابْنَ

के फ़रज़ंदे मुख़तारे ख़ुदा। सलाम हो तुम पर ऐ ख़ुद ख़ुदा और फ़रज़ंद खूने खुदा। सलाम हो

خِيَرَتِهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا ثارَ اللهِ وَابْنَ ثارِهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا

तुम पर ऐ कूश्ता के जिस का ख़ून ख़वाह भी क़त्ल किया गया। सलाम हा तुम पर ऐ यक्ता

الْوِتْرُ الْمَوْتُورُ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاِمامُ الْهادِى الزَّكِيُّ وَعَلى

मज़लूम सलाम हा तुम पर ऐ इमाम ऐ पाक हिदायत करने वाले और उन रूहा ंपर जो तुम्हारी

اَرْواحٍ حَلَّتْ بِفِنائِكَ وَاَقامَتْ فى جِوارِكَ وَوَفَدَتْ مَعَ زُوّارِكَ

बारगाह मे वारिद हुए और तुम्हारे ज़वार मे मुक़ीम हुए और वारिद हुए तुमहारे ज़ाएरा ंके

اَلسَّلامُ عَلَيْكَ مِنّى ما بَقيتُ وَبَقِىَ اللَّيْلُ وَالنَّهارُ فَلَقَدْ عَظُمَتِ

साथ। सलाम हो तुम पर मेरी तरफ़ से जब तक मै बाक़ी रहूँ और शब व राज़ बाक़ी रहें।

بِكَ الرَّزِيَّةُ وَجَلَّ الْمُصابُ فِى الْمُؤْمِنينَ وَالْمُسْلِمينَ وَفى اَهْلِ

बेशक तुम्हारी मुसीबत अज़ीम हुई और मुसीबत जलील हुई मोमिनीन, मुसलेमीन और तमाम

السَّمواتِ اَجْمَعينَ وَفى سُكّانِ الاَرَضينَ فَاِنّا لِلّٰهِ وَاِنّا اِلَيْهِ راجِعُونَ

आसमान वाला ंमे और ज़मीनो के रहने वालो मे हम ख़ुदा के लिए हैं और ख़ुदा की तरफ़

وَصَلَواتُ اللهِ وَبَرَكاتُهُ وَتَحِيّاتُهُ عَلَيْكَ وَعَلى آبائِكَ الطّاهِرينَ

लौटने वाले है और अल्लाह का दुरूद और बरकत और सलाम हो तुम पर और तुम्हारे पाक

الطَّيِّبِينَ الْمُنْتَجَبِينَ وَعَلى ذَرارِيهِمُ الْهُداةِ الْمَهْدِيِّينَ اَلسَّلامُ

व पाक़ीजा मुनताख़िब आबा के ऊपर और उनकी उन ज़ुर्रीयतों पर जो हिदायत करने वाले

عَلَيْكَ يا مَوْلايَ وَعَلَيْهِمْ وَعَلى رُوحِكَ وَعَلى اَرْواحِهِمْ وَعَلى

और हिदायत पाए और उनकी रूहां पर और तुम्हारी पाक तूर्बत पर और उनकी तुर्बत पर

تُرْبَتِكَ وَعَلى تُرْبَتِهِمْ اَللّهُمَّ لَقِّهِمْ رَحْمَةً وَرِضْواناً وَرَوْحاً وَرَيْحاناً

ख़ुदाया उनको अता कर रहमत व रिज़वान और रूह व रेहान। सलाम हो तुम पर ऐ मेरे मौला

اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا مَوْلايَ يا اَبا عَبْدِاللهِ يَا بْنَ خاتَمِ النَّبِيِّينَ وَيَا

ऐ अबू अब्दूल्लाह, ऐ ख़ाते मिल नबीईन के फ़रज़ंद और ऐ सय्यादुल वसीईन के फ़रज़ंद और ऐ

بْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّينَ وَيَا بْنَ سَيِّدَةِ نِساءِ الْعالَمِينَ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ

आलमीन की औरतों की सरदार के फ़रज़ंद। सलाम हो तुम पर ऐ शहीद, ऐ फ़रज़ंदे शहीद, ऐ

يا شَهِيدُ يَا بْنَ الشَّهِيدِ يا اَخَ الشَّهِيدِ يا اَبَا الشُّهَداءِ اَللّهُمَّ بَلِّغْهُ

बरादरे शहीद, ऐ पिदरे शोहादा। ख़ुदाया उन को पहुँचा दे मेरी तरफ़ से इसी घडी इसी दिन और

عَنّى فى هذِهِ السّاعَةِ وَفى هذَا الْيَوْمِ وَفى هذَا الْوَقْتِ وَفى كُلِّ وَقْت

इसी वक़्त और हर वक़्त बहुत ज़्यादा तहैय्यत व सलाम, अल्लाह का सलाम हो तुम पर और

تَحِيَّةً كَثِيرَةً وَسَلاماً سَلامُ اللهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكاتُهُ يا

अल्लाह की रहमत और बरकत हो ऐ सरदार आलमीन के फ़रज़ंद और तुम्हारे साथ तमाम

بْنَ سَيِّدِ الْعالَمينَ وَعَلَى الْمُسْتَشْهَدينَ مَعَكَ سَلاماً مُتَّصِلاً

शहीद होने वालों पर मुसलसल सलाम हो शब व राज़ सलाम हो हुसैन इब्ने अली पर जो शहीद

مَا اتَّصَلَ اللَّيْلُ وَالنَّهارُ السَّلامُ عَلَى الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ الشَّهيدِ

है, सलाम हो अली इब्नूल हुसैन पर जो शहीद है। सलाम हो अब्बास इब्ने अमीरल मोमिनीन

السَّلامُ عَلى عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ الشَّهيدِ اَلسَّلامُ عَلَى الْعَبّاسِ بْنِ

(अ.स.) पर जो शहीद है। सलाम हो अमीरल मोमिनीन (अ.स.) की औलाद के शहीदों पर।

اَميرِ الْمُؤْمِنينَ الشَّهيدِ السَّلامُ عَلَى الشُّهَداءِ مِنْ وُلْدِ اَميرِ

सलाम हो औलादे इमामे हसन (अ.स.) के शहीदा ं पर। सलाम हो औलादे हुसैन (अ.स.) के

الْمُؤْمِنينَ اَلسَّلامُ عَلَى الشُّهَداءِ مِنْ وُلْدِ الْحَسَنِ اَلسَّلامُ عَلَى

शहीदा ं पर सलाम हो औलादे जाफ़र व अक़ील के शहीदा ं पर। सलाम हो उन के साथ तमाम

الشُّهَداءِ مِنْ وُلْدِ الْحُسَيْنِ السَّلامُ عَلَى الشُّهَداءِ مِنْ وُلْدِ جَعْفَر

मोमिनीन शहीदों पर। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और मेरी

وَعَقيلٍ اَلسَّلامُ عَلى كُلِّ مُسْتَشْهَدٍ مَعَهُمْ مِنَ الْمُؤْمِنينَ اَللّهُمَّ

तरफ़ से उन को ज़्यादा तहय्यत व सलाम पहुँचा दे। सलाम हो तुम पर ऐ रूसले ख़ुदा, ख़ुदा

صَلِّ عَلى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَبَلِّغْهُمْ عَنّي تَحِيَّةً كَثيرَةً وَسَلاماً

वन्दे आलम आप को सब्र दे आप के फ़रज़ंद हुसैन (अ.स.) के सिलसिले मे। सलाम हो तुम

اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا رَسُولَ اللهِ اَحْسَنَ اللهُ لَكَ الْعَزآءَ فى وَلَدِكَ

पर ऐ फ़ातेमा (स.अ.व.व.) अल्लाह आप के फ़रज़ंद हुसैन के ग़म मे सब्र को बेहतर बनाए।

الْحُسَيْنِ اَلسَّلامُ عَلَيْكِ يا فاطِمَةُ اَحْسَنَ اللهُ لَكِ الْعَزآءَ فى وَلَدِكِ

सलाम हो आप पर ऐ अमीरल मोमिनीन (अ.स.) ख़ुदा आप के फ़रज़ंद हुसैन (अ.स.) के

الْحُسَيْنِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا اَميرَ الْمُؤْمِنينَ اَحْسَنَ اللهُ لَكَ الْعَزآءَ

ग़म मे सब्र को बेहतर बनाए। सलाम हो आप पर ऐ अबू मोहमद (अ.स.) ख़ुदा आप के भाई

فِى وَلَدِكَ الْحُسَيْنِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يا اَبا مُحَمَّدٍ الْحَسَنَ اَحْسَنَ اللهُ

हुसैन के ग़म मे आप के सब्र को बेहतर बनाए ऐ मेरे मौला, ऐ अबु अब्दुल्लाह मै अल्लाह का

لَكَ الْعَزآءِ فى اَخيكَ الْحُسَيْنِ يا مَوْلاىَ يا اَبا عَبْدِ اللهِ اَنَا ضَيْفُ اللهِ

और आपका महमान हूँ और अल्लाह का और आप की पन्हा दिए हुआ हूँ और हर महमान

وَضَيْفُكَ وَجارُ اللهِ وَجارُكَ وَلِكُلِّ ضَيْفٍ وَجارٍ قِرىً وَقِراىَ فى

और पन्हा दिए हुए के लिए पाज़िराई होती है और मेरी पाज़िराई इस वक़्त ये के आप अल्लाह

هذَا الْوَقْتِ اَنْ تَسْئَلَ اللهَ سُبْحانَهُ وَتَعالى اَنْ يَرْزُقَنى فَكاكَ رَقَبَتى

तबारक व तआला से सवाल करें के वो मेरी गुलू ख़लासी करदे जहन्नम से के वो दुआ का

مِنَ النّارِ اِنَّهُ سَميعُ الدُّعآءِ قَريبٌ مُجيبٌ.

सुनने वाला क़रीब और क़ुबूल करने वाला है।

पच्चीस्**वाँ** दिन

ओलमा के एक गरोह के अनुसार सन ९४ हिजरी या मोहर्रम ९५ हिजरी में जिसको साले फ़ुक़्हा कहते हैं इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) ने रहेलत फ़रमाई है।

वर्ग-८

सफ़र

यह महीना नहूसत के साथ मशहूर है और उसको दूर करने के लिए सदक़ा व दुआ और इस्तेआज़ा से बेहतर कुछ नहीं है लेहाज़ा अगर कोई व्यक्ति चाहता है के नाज़ल होने वाली बला से इस महीने में महफ़ूज़ रहे तो बकौले मोहद्दिसे फ़ैज़ दस बार पढ़े:

يَا شَدِيدَ الْقِوٰى وَيَا شَدِيدَ الْمِحَالِ يَا عَزِيزُ يَا عَزِيزُ يَا عَزِيزُ

ऐ क़ूवत वाले, ऐ ताक़त वाले, ऐ इज़्ज़त वाले, ऐ अज़ीज़ , ऐ तेरी अज़मत के सामने तमाम

ذَلَّتْ بِعَظَمَتِكَ جَمِيعُ خَلْقِكَ فَاكْفِنِي شَرَّ خَلْقِكَ يَا مُحْسِنُ

मख़लूक़ ज़लील है, तू काफ़ी हो जा मेरे लिए अपनी मख़लूक़ के शर से ऐ एहसान करने वाले

يَا مُجْمِلُ يَا مُنْعِمُ يَا مُفْضِلُ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّي

ऐ नेकूकार, ऐ नेमत देने वाले, ऐ फ़ज़्ल वाले, ऐ वो के तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है तू पाक

كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ

है, मै ज़ुल्म करने वालों मे हूँ, तो हम ने क़ुबूल कर लिया और इसे ग़म से निजात दे दी और

وَ كَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّيِّبِيْنَ

इस तरह हम मोमिनीन को बचाते हैं। और अल्लाह का दुरूद हो मोहम्मद और उन की पाक

الطَّاهِرِيْنَ

व पाकीज़ा आल पर।

सय्यद ने इस महीने के चाँद के लिए भी एक दुआ रिवायत की है।

पहला दिन

३७ हिजरी में जंगे सिफ़्फ़ीन शुरू हुई। और उसी रोज़ सन ६१ हिजरी में एक क़ौल के अनुसार सरे मुबारक इमाम हुसैन (अ.स.) दमिश्क में पहुँचा और बनी उमय्या ने उसको ईद करार दिया।

كَانَتْ مَآتِمُ بِالْعِرَاقِ، تَعُدُّهَا أَمَوِيَّةٌ بِالشَّامِ مِنْ أَعْيَادِهَا

जबके ईराक मे ये मातम के दिन थे। शामियों ने इसे ईद का दिन समझा।

इसी दिन बक़ौल सन १२१ हिजरी में ज़ैद बिन अली बिन अल-हुसैन शहीद हुए हैं।

तीसरा दिन

सय्यद बिन ताऊस ने इमामिया किताबों से नक़्ल किया है के इस दिन दो रकत नमाज़ मुस्तहब है। पहली रकत में हम्द और इन्ना फ़तहना और दूसरी रकत में सूरह हम्द और सूरह तौहदी पढ़े। सलाम के बाद सौ बार सलवात पढ़े और सौ बार कहे:

اَللّٰهُمَّ الْعَنْ آلَ اَبِي سُفْيَانَ

ऐ ०खुदा अबू सु०फयान की आल पर लानत कर।

और सौ बार इस्तेग़फ़ार करे फिर हाजत तलब करें।

सातवां दिन

शहीद और कफ़मी और दूसरे हज़रात के बक़ौल और शेख़ैन (र.अ.) २८ सफ़र सन पचास हिजरी में शहादते इमाम हसन मुजतबा (अ.स.) वाके हुई है। दोनो शेख़ के अनुसार इमाम हसन की शहादत २८ सफ़र को हुई।

७ सफर. १२८ हिजरी मे इमाम मूसा काज़म (अ.स.) की विलादत मक्के और मदीने के बीच अबवा मे हुई।

बीसवां दिन

चेहलुम का दिन है। और शेख़ैन के अनुसार हरमे इमाम हुसैन (अ.स.) शाम से मदीना पलट कर आए और यह जाबिर बिन अब्दुल्लाह की ज़्यारते इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए करबला पहुँचने का दिन है के वह इमाम हुसैन (अ.स.) के पहले ज़ाएर हैं।

और इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत उस दिन मुस्तहब है।

और हज़रत इमाम हसन अस्करी (अ.स.) से रिवायत है के मोमिन की पाँच अलामतें हैं:

दिन रात में ५१ रकत नमाज़े फ़रीज़ा व नाफ़ेला पढ़ना और चेहलुम की ज़ियारत पढ़ना, सीधे हाथ में अंगूठी पहेन्ना और ख़ाक़ पर सजदा करना और बुलंद आवाज़ से बिस्मिल्लाह कहना और शेख़ ने तहज़ीब व मिसबाह में इस दिन की मख़्सूस ज़ियारत भी इमामे सादिक़ (अ.स.) से नक़्ल की है।

जिसे हम इन्शाअल्लाह ज़ियारत के वर्ग में नक़्ल करेंगे।

अठ्ठाईसवां दिन

सन ११ हिजरी रोज़े वफ़ाते ख़ातेमुल अंबिया (स.अ.व.व.)।

आपकी वफ़ात का दिन सोमवार का दिन था और वफ़ात के समय आपकी उम्रे शरीफ़ ६३ साल थी।

आपकी उम्रे मुबारक के चालीस साल गुज़र चुके थे तब आप पर नुज़ूले वही का सिलसिला शुरू हुआ।

उसके बाद तेरह साल मक्के में लोगों को वहदानियत और ख़ुदा परस्ती की

दावत देते रहे। और ५३ साल की उम्र में मदीने की तरफ़ हिजरत की और ग्यारह हिजरी में वहाँ वफ़ात हुई। अमारूल मोमिनीन (अ.स.) ने गुस्लो हुनूत किया और गुस्ल के बाद नमाज़ पढ़ी। फिर गरोह दर दरोह असहाब आए और बग़ैर इमाम के नमाज़ पढ़ी।

और अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) ने आं जनाब को पाकीज़ा हुजरे में जहाँ दुनिया से रेहलत की थी दफ़्न कर दिया। और अनस बिन मालिक की रिवायत है के जब हम पैगंबर के दफ़्न से फ़ारिग़ हो चुके तो फ़ातेमा मेरे पास आईं और फ़रमाया ए अनस तुम्हारे दिल ने किस प्रकार गवारा किया के तुमने पैग़ंबरे इस्लाम (स.अ.व.व.) पर मिट्टी डाली और उसके बाद यह कह कर रोने लगी:

يَا اَبَتَاهُ اَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ يَا اَبَتَاهُ مِنْ رَبِّهٖ مَا اَدْنَاهُ

अय पदरे बुज़ुर्गवार आप ने परवरदिगार की रहमत पर लब्बैक कही अब आप ख़ुदा के कितने नज़दिक हैं।

और कितना अच्छा कहा है शायर ने:

आप जहाँ ख़ाक नशीं हो गए - दोनों जहाँ ज़ेरे ज़मी हो गए।

और दूसरी मोतबर रिवायत में है के जनाबे फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.व.व.) ने क़ब्रे मुतहहर से एक मुठ्ठी ख़ाक लेकर अपनी आँखों से लगाया और फ़रमाया:

مَاذَا عَلٰى الْمُشْتَمِّ تُرْبَةَ أَحْمَدٍ

जो सूंघ ले तरी ख़ाके लहद को शाहे अनाम

اَنْ لَا يَشَمَّ مَدَى الزَّمَانِ غَوَالِيَا

कर न ताबा अबद ख़ुशबूओं का इस्तेशमाम

صُبَّتْ عَلَيَّ مَصَائِبٌ لَوْ اَنَّهَا

अगर ज़माने पे ये हादसात हो जाते

صُبَّتْ عَلَى الْاَيَّامِ صِرْنَ لَيَالِيَا

तो दिन भी फ़रते मसाएब से रात हो जाते

قُلْ لِلْمُغَيَّبِ تَحْتَ أَثْوَابِ الثَّرٰى

कोई ये साहेबे तुरबत से काश कह दे पयाम

اِنْ كُنْتَ تَسْمَعُ صَرْخَتِيْ وَنِدَائِيَا

सितम रसीदा फ़रयाद सुन ले शाहे अनाम

صُبَّتْ عَلَيَّ مَصَائِبٌ لَوْ اَنَّهَا

अगर ज़माने पे ये हादसात हो जाते

صُبَّتْ عَلَى الْاَيَّامِ صِرْنَ لَيَالِيَا

तो दिन भी फ़रते मसाएब से रात हो जाते

قَدْ كُنْتُ ذَاتَ حِمًى بِظِلِّ مُحَمَّدٍ

बेज़ल्ले सायाए रहमत जो ज़िन्दगी गुज़री

لَا أَخْشَ مِنْ ضَيْمٍ وَكَانَ حِمًى لِيَا

हर एक रंज व बला से बची हुई गुज़री

فَالْيَوْمَ اَخْضَعُ لِلذَّلِيلِ وَاَتَّقِي ضَيْمِي وَاَدْفَعُ ظَالِمِي بِرِدَائِيَا
मगर सितम पे तुला आज हर सितमगर है बचाने वाली मेरी आज सिर्फ़ चादर है

فَاِذَا بَكَتْ قُمْرِيَّةٌ فِي لَيْلِهَا شَجَنًا عَلَىٰ غُصْنٍ بَكَيْتُ صَبَاحِيَا
अगर है रात मे क़मरी फ़िज़ा मे नाला कुनाँ तो दिन मे आप के लख़्ते जिगर हैं नौहा ख़ाँ

فَلَاجْعَلَنَّ الْحُزْنَ بَعْدَكَ مُؤْنِسِي وَلَاجْعَلَنَّ الدَّمْعَ فِيكَ وِشَاحِيَا
जहाँ मे आज फ़क़त ग़म ही मेरा हमदम है सुकूने दिल का सहारा ये अशक़े मातम है।

ख़ाक लेकर अपनी आँखों से लगाया और फ़रमाया:

सफ़र का आख़री दिन

सन २०३ हिजरी बक़ौल शेख़े तबरसी व इब्ने असीर ज़हर आलूद अंगूर के ज़रिए इमाम रज़ा (अ.स.) की शहादत वाक़े हुई है जिस समय आप की आयु ५५ बरस की थी और आपकी क़ब्रे शरीफ़ हमीद बिन कहतबा के घर में क़रिया सनाबाद में सर ज़मीने तूस पर वाक़े है और उसी में क़ब्रे रशीद भी है।

वर्ग-९

रबीउल अव्वल

पहली रात - सन तेरह बेसत रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने मक्के मोअज़्ज़मा से मदीने मुनव्वरा की जानिब हिजरत की और उस रात ग़ारे सौर में पोशीदा रहे। और हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) ने अपनी जान आं हज़रत की जान पर क़ुर्बान की। और उनके बिस्तर पर सोए और मुश्रेकीन के क़बीलों की तलवारों की परवाह न की और अपनी फ़ज़ीलत और अपने भाई रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) अपनी बिरादरी और मवासात को तमाम लोगों पर ज़ाहिर कर दिया तो आयते करीमा: व मिनन नासे मंय यशरी नफ़्सहुब तेगाअ मरज़ातिल्लाह। आपकी शान में नाज़ल हुई।

दूसरा दिन

ओलमा ने कहा है के मुस्तहब है के बराए शुक्राना सलामती रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) और अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) रोज़ा रखें और उन दोनों बुज़ुर्गवार की ज़ियारत पढ़ें और सय्यद ने इक़बाल में इस दिन की भी दुआ नक़्ल की है। और इसी रोज़ बक़ौले शेख़ व कफ़मी इमामे हसन अस्करी (अ.स.) ने वफ़ात पाई है। लेकिन मशहूर है के यह वफ़ात आठ रबीउल अव्वल को हुई है। शायद यह इमाम के मर्ज़ का पहला दिन रहा हो।

आठवां दिन

२६० हिजरी में इमाम हसन अस्करी (अ.स.) की शहादत हुई और हज़रत साहेबुल अम्र (अ.स.) मनसबे इमामत पर जलवा अफ़रोज़ हुए। मुनासिब है के उन दोनों बुज़ुर्गवारों की ज़ियारत पढ़ें।

नवां दिन

बड़ी ईद का दिन है जिसकी शरह अपने मक़ाम पर ज़िक्र हो चुकी है।
और एक रिवायत यह भी है के जो व्यक्ति इस दिन कुछ दान देगा उसके गुनाह बख़्शे जाएंगे और ओलमा केराम का इरशाद है के मुस्तहब है इस रोज़

बिरादराने मोमिन को खाना खिलाना, उनको ख़ुश करना, नफ़क़े में वुसअत देना और नए कपड़े पहन्ना और परवरदिगार का शुक्र अदा करना और उसकी इबादत करना दर हक़ीक़त यह ग़मों के बर तरफ़ होने का दिन है। और बहुत बड़े शरफ़ का दिन है। और क्योंकि आठ रबीउल अव्वल को इमाम हसन अस्करी (अ.स.) की वफ़ात हुई लेहाज़ा यह इमाम साहेबुज़्ज़मान (अ.त.फ.श.) की इमामत का पहला दिन है और यह उसके मज़ीद शरफ़ का सबब है।

बारहवां दिन

ब रिवायत जनाबे कुलैनी व मसऊदी और मुताबिक़े मशहूर आम्मा यही है के विलादते बा सआदते हज़रते रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) इसी रोज़ हुई है। और मुस्तहब है के इन्सान दो रकत नमाज़ पढ़े। पहली रकत में हम्द और तीन बार कुल या अय्योहल काफ़ेरून पढ़े और दूसरी रकत में सूरह हम्द और तीन बार सूरह तौहीद पढ़े। इसके अलावा उसी दिन आं हज़रत मदीने में वारिद हुए थे। और शेख़ ने फ़रमाया है के इसी दिन सन बत्तीस हिजरी बनी मरवान की हुकूमत ख़त्म हुई।

चौदहवां दिन

सन चौसठ हिजरी में यज़ीद बिन माविया वासिले जहन्नम हुआ है। और अखबारूद दौल में है के यज़ीद मर्ज़े ज़ातुल जुनूब में मकामे हौरान में मरा है। और उसका ज़नाज़ा दमिश्क लाकर बाबे सग़ीर में दफ़्न किया गया है और उसकी क़ब्र धूरे पर है। और उसकी उम्र ३७ साल की थी। और उसकी हुकूमत तीन साल और नौ महीने रही है।

सत्तरहवीं रात

शबे विलादते पैगंबरे इस्लाम (स.अ.व.व.) है और बहुत बरकत वाली रात है। और सय्यद ने फ़रमाया है के इस रात में हिजरत से एक साल पहले हज़रत की मेराज हुई थी।

सत्तरहवां दिन

ओलमा इमामिया के दरमियान मशहूर है के यह पैगंबरे इस्लाम (स.अ.व.व.)

की विलादत का दिन है। आपकी विलादत मक्के मोज़्ज़मा में अपने घर में हुई है। जुमे के दिन तुलूए फ़ज्र के समय सन एक आम्मुल फ़ील में नौशेरवाने आदिल की हुकूमत के ज़माने में।
नेज़ इसी दिन सन ८३ हिजरी में इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की विलादते बा सआदत हुई है। जिसकी वजेह से इस दिन का फ़ज़्ल और शरफ़ और भी बढ़ गया है और यह दिन इन्तेहाई शरफ़ वाला है। इस दिन में चंद आमाल हैं:
(१) ग़ुस्ल
(२) रोज़ा: जिसकी फ़ज़ीलत बहुत है और रिवायत में है के जो व्यक्ति इस दिन रोज़ा रखे ख़ुदा उसको एक साल के रोज़े का सवाब अता करेगा और यह दिन उन चार दिनों में से है जो सारे साल में रोज़े की फ़ज़ीलत के एतेबार से मुम्ताज़ हैं।
(३) ज़ियारत हज़रत रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) नज़दीक से या दूर से पढ़ें।
(४) ज़ियारते इमाम अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) वह ज़ियारत जो इमामे सादिक (अ.स.) ने मोहम्मद बिन मुस्लिम को तालीम दी थी। और ज़ियारत के बाब में इन्शाअल्लाह ज़िक्र होगी।
(५) जब दिन बुलंद हो जाए तो दो रकत नमाज़ पढ़ें और हर रकत में हम्द के बाद दस बार इन्ना अनज़ल्ना पढ़ें और दस बार सूरह तौहीद और सलाम के बाद मुसल्ले पर बैठे बैठे यह दुआ पढ़ें: اَللّٰهُمَّ اَنْتَ حَيٌّ لَا تَمُوتُ
यह दुआ बहुत लंबी है और इसकी सनद भी किसी मासूम तक नहीं पहुँची है। इस लिए इख़्तेसार की बिना पर इसे तर्क किया है। जो पढ़ना चाहे वह ज़ादुल माद की तरफ़ रूजू कर सकता है।
(६) मुसलमान इस दिन की ताज़ीम करे, सदका और ख़ैरात दे और मोमिनों को मसरूर करे और मशाहिदे मुशर्रफ़ा की ज़ियारत को जाए। सय्यद ने इक़्बाल में इस दिन के ताज़्ज़ुम की शरह बयान की है। मैनें नसारा के गरोह और कुछ मुसलमानों को देखा है के वह ईसा (अ.स.) की विलादत के दिन की ताज़ीम करते हैं तो मुझे तअज्जुब हुआ के किस तरह मुसलमान मुत्मईन होगा के अपने पैग़ंबर की विलादते बा सआदत के दिन की ताज़ीम जनाबे इसा (अ.स.) की विलादत के दिन से कम करें।

वर्ग-१०

रबीउस सानी - जमादीउल अव्वल -जमादीउस सानी

सय्यद इन्बे ताऊस ने इन तीनों महीनों के हर दिन के लिए दुआ नक़्ल की है और शेख़ मुफ़ीद ने फ़रमाया है के दस रबीउस सानी २३२ हिजरी में इमामे हसन अस्करी (अ.स.) की विलादत हुई है। और बेहद बरकत का दिन है और मुस्तहब है के इंसान इस नेमते अज़ीम के शुक्राने के लिए रोज़ा रखे। और १३, १४, १५ जमादीउल अव्वल को ज़ियारते हज़रते फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.व.व.) पढ़े। उन मज़लूमा का मातम करे के रिवायते सहीहा की बिना पर वह रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) की वफ़ात के बाद ७५ दिन ज़िंदा रही हैं और बिनाबर मशहूर वफ़ाते रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) २८ सफ़र की है। लेहाज़ा जनाबे फ़ातेमा (स.अ.व.व.) की वफ़ात इन तीनों दिनों में से किसी एक रोज़ है।
१५ जमादीउल अव्वल, ३६ हिजरी में अमीरूल मोअमेनीन (अ.स.) के हाथों बसरा फ़तेह हुआ और विलादते इमामे ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) हुई है। इस रोज़ दोनो इमामों की ज़ियारत मुनासिब है।

जमादीउस सानी के आमाल

सय्यद इब्ने ताऊस ने नक़्ल किया है के इस महीने में जिस वक़्त चाहे चार रकत नमाज़ पढ़े दो सलाम के साथ। पहली रकत में सूरह हम्द और एक बार आयतल कुर्सा और पच्चीस बार इन्ना अनज़लना और दूसरी रकत में सूरह हम्द और एक बार सूरह तकासुर और पच्चीस बार सूरह तौहीद। तिसरी रकत में सूरह हम्द और एक बार सूरह काफ़ेरून और पच्चीस बार सूरह फ़लक़ और चौथी रकत में हम्द और एक बार सूरह नस्र और पच्चीस बार सूरह नास पढ़े। और चौथे सलाम के बाद सत्तर बार पढ़े:

फिर सत्तर बार: سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

पाक है ख़ुदा हमद ख़ुदा के लिए है व अल्लह के सिवा कोई ख़ुदा नही और अल्लाह बड़ा है।

फिर तीन बार: اللهم صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

फिर सजदे में सर रख कर तीन बार कहे: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

ख़ुदाया बख़्श दे मोमिनीन और मोमिनात को

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا اَرْحَمَ

ऐ ज़िन्दा पाईन्दा ऐ जलालत व करमवाले ऐ रहमान ऐ महेरबान ऐ सब से बड़े रहम करने

الرَّاحِمِيْنَ

वाले।

फिर जो हाजत रखता हो ख़ुदा से तलब करे के जो ऐसा करेगा ख़ुदा उसको उसके माल को और उसके अहल-ओ-अयाल को और दीन-ओ-दुनिया को दूसरे साल तक महफ़ूज़ रखेगा। अगर उस साल मर जाएगा तो शहदत पर मरेगा याने शहीदों का सवाब हासिल करेगा।

तीसरा दिन

११ हिजरी वफ़ाते हज़रते फ़ातेमा (अ.स.) है लेहाज़ा शिओं को चाहिए के इस रोज़ मरासिमें ताज़यत क़ाएम करें और मज़लूमा की ज़ियारत पढ़ें और उनके ज़ालेमीन और ग़ासेबीने हुक़ूक़ पर लानत करें और सय्यद इब्ने ताऊस ने इक़्बाल में इस ज़ियारत को आं हज़रत के लिए वफ़ात के दिन ज़िक्र किया है। फिर कहें:

السَّلَامُ عَلَيْكِ يَا سَيِّدَةَ نِسَاءِ الْعَالَمِيْنَ السَّلَامُ عَلَيْكِ يَا وَالِدَةَ

सलाम हो तुम पर ऐ आलमीन की औरतों की सरदार, सलाम हो तुम पर ऐ तमाम लोगों पर

الْحُجَجِ عَلَى النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ السَّلَامُ عَلَيْكِ اَيَّتُهَا الْمَظْلُومَةُ

हुज्जत अफ़राद की वालदा, सलाम हो तुम पर ऐ मज़लूमा जिस को हक से महरूम रखा गया

الْمَمْنُوعَةُ حَقَّهَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اَمَتِكَ وَابْنَةِ نَبِيِّكَ وَزَوجَةِ

है। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा अपनी कनीज़ पर और अपने नबी की दुख़तर पर और अपने

وَصِيِّ نَبِيِّكَ صَلَاةً تُزْلِفُهَا فَوْقَ زُلْفٰى عِبَادِكَ الْمُكَرَّمِيْنَ مِنْ

नबी के वसी की ज़ौजा पर ऐसा दुरूद जो तेरे मुकर्रम बन्दों की नज़दीकी बालातर बना दे

اَهْلِ السَّمَاوَاتِ وَاَهْلِ الْاَرَضِيْنَ

आसमानों और ज़मीन मे।

रिवायत है के जो व्यक्ति यह ज़ियारत जनाबे मासूमा के लिए पढ़ेगा और ख़ुदा से तलबे मग़फिरत करेगा उसके गुनाह बख़्श दिए जाएँगे और ख़ुदा उसको जन्नत में दाख़िल कर देगा।

लेखक: सय्यद इब्ने ताऊस के फ़रज़ंद ने भी इस ज़ियारत को ज़वाएदुल फ़वाएद में नक़्ल किया है। और कहा है के यह ज़ियारत मासूमा की वफ़ात के दिन से मख़सूस है। यानी ३ जमादीउल आिख़र और ज़ियारत की कैफ़ियत इस तरह बयान की है: के पहले नमाज़े ज़ियारत या नमाज़े फ़ातेमा ज़हरा को पढ़े जो दो रकत है। हर रकत में सूरह हम्द के बाद साठ बार सूरह तौहीद पढ़े। और अगर मुम्किन न हो तो पहली रकत में हम्द और सूरह तौहीद और दूसरी रकत में सूरह हम्द और सूरह काफ़ेरून पढ़े और जब सलाम पढ़ ले तो

ज़ियारत: अस्सलामो अलैके से आाख़िर तर पढ़े।

बीसवां दिन

सन ५ या २ बेसत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.व.व.) की विलादते बा सआदत है और इसमें चंद अमाल मुनासिब हैं:

(१) रोज़ा

(२) मोमिनीन को सदक़ा देना और ख़ैरात करना।

(३) इन मोअज़्ज़मा की ज़ियारत पढ़ना जो ज़ियारत के बाब में आ रही है।

वर्ग-११

अव्वले माह, ईदे नौरोज़ और रूमी महीनों के आमाल

हर महीने की पहली तारीख़ के आमाल यह हैं:

(१) नया चाँद देखते समय दुआ पढ़ना जिसमें बेहतरनी दुआ सहीफ़ा कामेला की ३३वीं दुआ है। जो अव्वल माहे रमज़ान में ज़िक्र हुई है।

(२) दर्दे चश्म के दूर करने के लिए सात बार सूरह हम्द का पढ़ना।

(३) थोडा सा पनीर खाना। रिवायत में है के जो व्यक्ति हर माह के शुरू में अपने को पनीर खाने का पाबंद बना ले उसकी हाजत उस माह में उम्मीद है के रद न होगी।

(४) शबे अव्वल में दो रकत नमाज़ पढ़े। हर रकत में हम्द के बाद सूरह अनआम पढ़े। और ख़ुदा से सवाल करे के वह उसे हर ख़ौफ और डर से महफ़ूज़ रखे और इस माह में कोई ना पसंदीदा अम्र न होने दे।

(५) पहेल दिन दो रकत नमाज़ पढ़े। पहली रकत में सूरह हम्द और तीस बार सूरह तौहीद पढ़े और दूसरी रकत में सूरह हम्द के बाद तीस बार सूरह क़द्र पढ़े और नमाज़ के बाद सदक़ा दे। ऐसा करेगा तो उस माह में अपनी सलामती को ख़ुदा से ख़रीद लेगा और बाज़ रिवायत में है के नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े:

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيمِ وَمَا مِنۡ دَابَّةٍ فِي الۡاَرۡضِ اِلَّا عَلَى

बख़्शने वाले महेरबान ख़ुदा के नाम से कोई ज़मीन मे चलने वाला नही है मगर ये के अल्लाह पर

اللّٰهِ رِزۡقُهَا وَيَعۡلَمُ مُسۡتَقَرَّهَا وَمُسۡتَوۡدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ

उस का रिज़्क वाजिब है ख़ुदा उस की जगह और वदियत के मक़ाम को जानता है सब कुछ किताबे

مُبِينٍ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيمِ وَاِنۡ يَمۡسَسۡكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ

मुबीन मे ह। बख़्शने वाले महेरबान ख़ुदा के नाम से अगर ख़ुदा तुम को कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे

فَلَا كَاشِفَ لَهُ اِلَّا هُوَ وَاِنۡ يُرِدۡكَ بِخَيۡرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضۡلِهِ

तो उस के अलावा कोई उसे दूर करने वाला न होगा और अगर वो तूम्हारे लिए नेकी चाहेगा तो उस

يُصِيبُ بِهِ مَنۡ يَشَاءُ مِنۡ عِبَادِهِ وَهُوَ الۡغَفُورُ الرَّحِيمُ بِسۡمِ

के फ़ज़्ल को कोई पलटाने वाला नही है अपने बन्दों मे से जिस के लिए चाहता है पहुँचा देता है और

اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيمِ سَيَجۡعَلُ اللّٰهُ بَعۡدَ عُسۡرٍ يُسۡرًا مَا شَاءَ

वो ग़फ़ूर रहीम है। ख़ुदाए महेरबान व रहीम के नाम से अनकरीब ख़ुदा तंनगदस्ती के बाद आसानी

اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ حَسۡبُنَا اللّٰهُ وَنِعۡمَ الۡوَكِيلُ وَاُفَوِّضُ

करेगा। ख़ुदा जो चाहता है करता है कोई क़ुवत नही सिवाए ख़ुदा के अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और

اَمۡرِي اِلَى اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيرٌ بِالۡعِبَادِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنۡتَ سُبۡحَانَكَ

बेहतरीन वकील है और मे अपने अम्र को ख़ुदा के हवाले करता हूँ बेशक ख़ुदा बदों का देखने वाला

اِنِّی کُنۡتُ مِنَ الظَّالِمِیۡنَ رَبِّ اِنِّی لِمَا اَنۡزَلۡتَ اِلَیَّ مِنۡ خَیۡرٍ

है सिवाए तेरे कोई माबूद नहा तू पाक है मै ज़ालिमो मे से हूँ परवर-दिगार मै उस नेकी का फ़क़ीर हूँ जो

فَقِیۡرٌ رَبِّ لَا تَذَرۡنِی فَرۡدًا وَاَنۡتَ خَیۡرُ الۡوَارِثِیۡنَ

तूने मेरी तरफ़ नाज़ल की है। परवरदिगार तू मुझको अकेला न छोड़ देना के तू बहतरीन वारिस है।

आमाले ईदे नौरोज़

इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से मोअल्ला बिन ख़ुनैस ने रिवायत की है के जब नौरोज़ का दिन आए तो ग़ुस्ल करो और अपना सबसे पाक साफ़ लिबास पहनो। और बेहतरनी ख़ुशबू लगाओ और रोज़ा रखो और जब नमाज़े ज़ोहर-ओ-अस्र और उसके नाफ़ेला से फ़ारिग़ हो जाओ तो चार रकत नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़ो। पहली रकत मे सूरह हम्द और दस बार सूरह क़द्र पढ़ो और दूसरी रकत में सूरह हम्द के बाद सूरह काफ़ेरून। और तीसरी रकत में सूरह हम्द के बाद दस बार सूरह तौहीद पढ़े और चौथी रकत में सूरह हम्द के बाद दस बार सूरह फ़लक़ और सूरह नास पढ़ो और नमाज़ के बाद सजदा शुक्र बजा लाओ और फिर यह दुआ पढ़ो:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ الاَوۡصِیَاءِ الۡمَرۡضِیِّیۡنَ وَعَلٰی

ख़ुदाया दुरूद भेज मोहम्मद व आले मोहम्मद पर जो तेरे पसंदिदा वसी हैं और अपने तमाम

جَمِیۡعِ اَنۡبِیَائِكَ وَرُسُلِكَ بِاَفۡضَلِ صَلَوَاتِكَ وَبَارِكۡ عَلَیۡهِمۡ بِاَفۡضَلِ

नबीयों और रसूलों पर अपना दुरूद और उन पर बरकत नाज़ल कर अपनी बेहतरीन बरकत

بَرَكَاتِكَ وَصَلِّ عَلٰی اَرۡوَاحِهِمۡ وَاَجۡسَادِهِمۡ اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ عَلٰی

और दुरूद नाज़ल कर उन की रूहों और जिसमों पर। ख़ुदाया बरकत नाज़ल फ़रमा मोहम्मद व

مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ لَنَا فِي يَوْمِنَا هٰذَا الَّذِي فَضَّلْتَهُ وَ كَرَّمْتَهُ

आले मोहम्मद पर और हम को बरकत दे इस राज़ जिसको तु ने फ़ज़ीलत दी है मुकर्रम किया

وَشَرَّفْتَهُ وَعَظَّمْتَ خَطَرَهُ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِي فِي مَا اَنْعَمْتَ بِهِ عَلَيَّ حَتّٰى

है शर्फ़ अता किया है और बुज़ुर्गा अता की है। ख़ुदाया मुझको बरकत दे उसमें जो तूने मुझ पर

لَا اَشْكُرَ اَحَدًا غَيْرَكَ وَوَسِّعْ عَلَيَّ فِي رِزْقِي يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

नेमत नाज़ल की है ताके मै तेरे अलावा किसी और का शुक्र न अदा करूँ और मेरे रिज़्क मे

اَللّٰهُمَّ مَا غَابَ عَنِّي فَلَا يَغِيبَنَّ عَنِّي عَوْنُكَ وَحِفْظُكَ وَمَا فَقَدْتُ

वुस्अत दे और न तेरी हिफ़ाज़त और जो कुछ मै गुम कर दूँ तो तू अपनी मदद को गुम न कर

مِنْ شَيْءٍ فَلَا تُفْقِدْنِي عَوْنَكَ عَلَيْهِ حَتّٰى لَا اَتَكَلَّفَ مَا لَا اَحْتَاجُ

ताके मै रंज व तकलीफ़ मे न पड़ूँ इस के लिए जिसका मै मोहताज नही हूँ, ऐ जलालत व बुज़ुर्गा

اِلَيْهِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

वाले।

जब यह अमल कर लेगा तो पचास साल के गुनाह बख़्श दिए जाएंगे और ज़्यादा से ज़्यादा या ज़लाले वल इकराम कहता रहे। يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

रूमी महीनों के आमाल

हम यहाँ पर इसी पर इक्तेफ़ा करते हैं जो ज़ादुल माद में है। सय्यद अली बिन ताऊस ने रिवायत की है के एक रोज़ कुछ अस्हाब बैठे हुए थे के अचानक रसूले अकरम (स.अ.व.व.) दाख़िल हुए। सबने उनको सलाम किया उन्होंने

जवाबे सलाम दिया। आपने फ़रमाया: क्या तुम चाहते हो मैं तुम्हें वह दुआ बता दूँ जो जिब्रईल ने मुझे तालीम की है? जिसके बाद मैं तबीबों की दवा का मोहताज नहीं हुआ? अमीरूल मोमिनीन (अ.स.), सलमान और दूसरे असहाब ने सवाल किया के वह दुआ क्या है? फ़रमाया के रूमी नैसान के महीने में बारिश का पानी जमा कर लो और उस पर सूरह फ़ातेहा, आयतल कुर्सा, सूरह तौहीद, सूरह फ़लक़, सूरह नास व सूरह काफ़ेरून को सत्तर बार पढ़ो और दूसरी रिवायत के अनुसार सूरह क़द्र को भी सत्तर बार पढ़ो और सत्तर बार अल्लाहो अकबर, सत्तर बार ला इलाह इल्लल्लाह कहो और सत्तर बार सलवात पढ़ो और सात रोज़ सुबह और सेपहर इसे पीते रहो। तो क़सम है उस ख़ुदा की जिसने मुझे मबऊस किया जिब्रईल ने बताया के ख़ुदावंदे आलम इस पानी पीने वाले व्यक्ति के बदन से तमाम दर्द उठा लेता है और उसे आफियत देता है। उसकी ह॰ी और बदन से दर्द निकाल देता है। अगर लौह में कुछ मुकद्दर हो चुका हो तो उसे मिटा देता है। और परवरदिगार की कसम जिसने मुझे हक़ के साथ भेजा है अगर औलाद न रखता हो और औलाद चाहता हो तो आबे नैसाँ को उसी निय्यत से पिए उसे औलाद भी मिलेगी और अगर औरत बांज हो और औलाद न पैदा होती हो और उस पानी को निय्यते औलाद के साथ पिए तो औलाद पैदा होगी। और अगर औरत या मर्द लड़का या लड़की चाहते हों और उसको पियें तो उनका मक़सूद हासिल होगा जैसा के ख़ुदा फ़रमाता है:

يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ

जिसे चाहता है केवल बेटियाँ देता है व जिसे चाहता है सिर्फ़ बेटे देता है या उनको बेटे बेटियाँ दोनो

ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ

देता है। जिसको चाहे बांझ बना देता है बेशक वो बड़ा वाक़फ़दार क़ादिर है।

इसके बाद आं हज़रत (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया के जो व्यक्ति दर्दे सर में मुब्तेला हो और इस पानी को पिए उसका दर्द ख़त्म हो जाता है और अगर आँख के दर्द में मुब्तेला हो और अपनी आँख में इसका एक क़तरा टपकाए और पिए और आँख को उसी पानी से धोए तो ख़ुदा के हुक्म से शिफ़ा पाएगा। इस पानी का पीना दाँत की जड़ों को मज़बूत करता है, मुँह को खुशबूदार बनाता है, दाँत की जड़ के लोआब को कम करता है। बलग़म को कम करता है और खाना खाने और पानी पीने से तुख़मां वगैरा नहीं होता है। बादे क़ौलंज वगैरह से तकलीफ़ नहीं होती है। दर्दे पुश्त और दर्दे कमर नहीं होता है। ज़ुकाम से तकलीफ़ नहीं होती है। दाँत का दर्द नहीं होता है। मेदे का दर्द और कीड़ों को दूर करता है। हजामत का मोहताज नहीं होता, बवासीर के मर्ज़ व बदन की ख़ारिश आबला दीवांनगी मर्ज़े नकसीर, क़ै से नजात मिल जाती है। अंधा गूँगा बहरा, ज़मीनगीर नहीं होता है। उसकी आँख में सियाह पानी नहीं आता है। एसा दर्द जो रोज़ा व नमाज़ को कम कर नहीं होता है। शैतान और जिनों के वसवसे की अज़ीयत नहीं होती है।

फ़िर रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया के जिब्रईल ने कहा के जो व्यक्ति इस पानी को पिए और किसी भी दर्द में मुब्तेला हो उससे शिफ़ा हो जाएगी। फिर जिब्रईल ने फ़रमाया के उस ख़ुदा की क़सम जिसने तुम्हें हक के साथ मबउस किया जो व्यक्ति इन आयतों को इस पानी पर पढ़ कर पिएगा, ख़ुदा उसके दिल को रौशनी, नूर और इलहाम से भर देगा व हिकमत उसकी ज़बान पर जारी होगी व उसके दिल को समझ व अक़लमंदी से भर देगा व उसको वो करामत अता करेगा जो आलम के लोगों में किसी को न दी होगी। हज़ार मग़फ़ेरत ओ रहमत उसके लिए होगीं। मिलावट, ख़यानत, ग़ीबत, हसद, बग़ावत, तकब्बुर, बुख़्ल, लालच, ग़ुस्सा उसके दिल से उठा लेगा। लोगों की दुश्मनी व बदगोई से नजात पाएगा। उसकी तमाम बीमारीयों से शिफ़ा हासिल होगी।

लेखक: यह मश्हूर रिवायत अब्दुल्लाह इब्ने उमर तक पहोंचती है। इस वजेह से इसकी सनद ज़इफ़ है और हकार ने शहीद की तहरीर में देखा है के इसे इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत किया गया है। उनही ख़ुसूसियात

और सूरों के साथ लेकिन आयात और ज़िक्र को इस प्रकार बयान किया है के आबे नैसाँ पर फ़ातेहतुल किताब, आयतल कुर्सा, सूरह काफ़ेरून, सूरह आला, सूरह फ़लक़, सूरह नास, सूरह तौहीद हर एक तो सत्तर बार पढ़ो और सत्तर बार ला ईलाह इल्लल्लाहो, सत्तार बार अल्लाहो अकबर, सत्तर बार अल्लाहुम्म सल्ले अला मोहम्मदिन व आले मोहम्मद। सत्तर बार सुब्हानल्लाहे वल हम्दो लिल्लाहे व ला इलाह इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर पढ़ो और उसकी ख़ुसूसियात में यह भी है के अगर क़ैद में हो और यह पानी पिए तो उससे नजात पाएगा। उसकी तबियत पर सर्दा ग़ालिब न होगी और ज़्यादा तर जो ख़ुसूसियात ज़िक्र हुए हैं वह इसमें मौजूद हैं और मुतलक़न बारिश का पानी मुतबर्रिक और फ़ायदेमंद हो चाहे नैसान में बरसे या किसी और महीने में। चुनांचे मोतबर हदीस में अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से मनक़ूल है के बारिश के पानी को पियो जो तुम्हारे बदन को पाक करनेवाला और दर्दों को दूर करने वाला है। ख़ुदावंदे आलम फ़रमाता है: ख़ुदा तुम्हारे आसमान से पानी नाज़ल करता है ताके तुम्हें पाक करे और तुमसे शैतान के वसवसे को ख़त्म करे और तुम्हारे दिलों को मुस्तहकम करे और उसके ज़रिए तुम्हारे कदम को साबित करे और अमल नैसान में बेहतर यह है के अगर कुछ लोग मिल कर पढ़ना चाहें तो उन सूरों और ज़िक्रों को मजमूअन सत्तर बार पढ़ें और जो लोग पढ़ेंगे उन्हें फ़ायदा और सवाब ज़्यादा होगा। आम तौर से नौरोज़ के बाद तक़रीबन तेईस दिन गुज़र जाएं तब माहे नैसां दाख़िल होता है।

जून

इमामे सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जून मे हजामत करो और अगर मुम्किन न हो तो चौदह को और हज़ीरन की इबतेदा नौरोज़ के ८४ दिन के बाद होती है। यह भी तीस दिन का है। और हज़ीरान नहेस महीना है। चुनांचे हदीसे मोतबर में है के इमामे सादिक़ (अ.स.) के पास हज़ीरन महीने का तज़केरा हुआ तो आपने फ़रमाया के यह वह महीना है जिसमें जनाबे मूसा (अ.स.) ने बनी इस्राईल के लिए बद दुआ की थी। और एक दिन रात में तीन लाख अफ़राद मर गए थे। आप ही से मोतबर सनद के साथ मनक़ूल है के ख़ुदावंदे आलम मौत को हज़ीरान महीने में नज़दीक कर देता है। वाज़ेह रहे

के माहे रूमी की बुनियाद आफ़ताब की हरकत पर है एक तरकीब के साथ: तस्रनुल अव्वल, तस्रनुल आिख़र, क़ानूने अव्वल, क़ानूने आिख़र, शबात, आर, नैसान, अचार, हज़ीरान, तमूज़ आबल, ऐलुल, चार महीने तीस दिन के होते हैं। तस्रने आखिरे, नैसान, हज़ीरान, ऐलुल और सात महीने शबात के अलावा ३१ दिन के होते हैं और शबात तीन साल मुसलसल, २८ दिन का होता है और चौथे साल कबीसा होता है। याने २९ दिन का होता है। उनका साल ३६५ और १/४ दिन का होता है। और तस्रने अव्वल, जो साल का पहला महीना है आज कल वह २९ दर्जे मीरान में होता है और इसकी तफ़सील बिहारूल अनवार में मज़कूर है। चूंके उन महीनों का तज़केरा हदीसों में है इस लिए मुजमिल तौर पर यहाँ ज़िक्र कर दिया गया है।